तकानि ।

	मू॰	डा.व्य.
३१. **विष्णुभक्तिकल्पलताकाव्यम्**—पुरुषोत्तमविरचितं, महीधरविरचितया टीकया सहितम्.	·॥=	८–॥
३२. **सुहृदयानन्दकाव्यम्—कृष्णानन्दविरचितम्,** पञ्चदशसर्गात्मकमिदं काव्यं गीर्वाणगहनप्रविविक्षूणां मार्गसौलभ्यकरं सहृदयानां मनोरञ्जकं च विद्यते. ...	·॥=	८–
३३. **श्रीनिवासविलासचम्पूः**—वेङ्कटेशकविप्रणीता, धरणीधरकृतटीकया सहिता.	·।॥=	८–॥
३४. **प्राचीनलेखमाला**—(प्रथमो भागः)	१॥	८=
३५. **अलंकारसर्वस्वम्—राजानकरुय्यककृतं, जयरथकृत**टीकासहितम् । अस्मिन् शब्दार्थोभयविधालंकाराणां मनोहरतया वर्णनं विद्यते, तत एवायं ग्रन्थः केवलं (रसादिज्ञानं विना) अलंकारजिज्ञासूनामतीवोपयुज्यते.	१।	८=
३६. **वृत्तिवार्तिकम्**—श्रीमदप्पयदीक्षितप्रणीतम्.	८≡	८॥
३७. **रससदनभाणम्**—युवराजकविविरचितम्.	·।≡	८–
३८. **चित्रमीमांसा**—श्रीमदप्पयदीक्षितप्रणीता, **चित्रमीमांसाखण्डनम्**—पण्डितराजजगन्नाथविरचितं. ...	·।॥≡	८–॥
३९. **विद्यापरिणयः**—आनन्दरायमखिविरचितः.	·॥–	८–
४०. **रुक्मिणीपरिणयं नाटकम्**—श्रीरामवर्मवञ्चियुवराजविरचितम्.	·।–	८–
४१. **प्राकृतपिङ्गलसूत्राणि—श्रीमद्वाग्भटविरचितानि, लक्ष्मीनाथभट्टकृत**टीकासहितानि, अस्य ग्रन्थस्य २ परिच्छेदौ वर्तेते संस्कृतनाटकादिग्रन्थेषु स्थलविशेषे प्राकृतैव भाषा दृश्यते. परंतु तद्भाषायां वृत्तादिज्ञानं बहुषु जनेषु नैवोपलभ्यते नाटकादिपरिशीलिनां च तस्यातीवावश्यकता वर्तते. तस्मात् एतादृशामितरेषां च जनानामतीवोपयुज्येत प्राकृतग्रन्थः.	१॥	८≡
४२. **नाट्यशास्त्रम्**—श्रीभरतमुनिप्रणीतम्.	३	·।·
४३. **काव्यानुशासनम्**—श्रीमद्वाग्भटविरचितं, स्वकृतटीकायुतं.	·।≡	८–
४४. **शृङ्गारतिलकभाणम्**—श्रीरामभद्रदीक्षितविरचितम्.	·।=	८–
४५. **बालभारतम्**—श्रीमदमरचन्द्रसूरिविरचितम्. ...	३।	८≡॥
४६. **वृषभानुजा नाटिका**—श्रीमथुरादासविरचिता. ...	·।=	८–
४७. **सेतुबन्धमहाकाव्यम्**—श्रीप्रवरसेनविरचितं, श्रीरामदासभूपतिप्रणीतया टीकया सहितम्	३।	८≡

॥ श्रीः ॥

मनुस्मृतिः ।

श्रीमत्कुल्लूकभट्टविरचितया मन्वर्थमुक्तावल्या

श्लोकानामकारादिकोशेन च समेता ।

पणशीकरोपाह्वेन लक्ष्मणतनुजनुषा वासुदेवशर्मणा

संशोधिता ।

इयं च

(चतुर्थावृत्तिः)

मुम्बय्याख्यराजधान्या

तुकाराम जावजी इत्येतेषां कृते तेषामेव निर्णयसागराख्य-

यन्त्रालये बालकृष्ण रामचंद्र घाणेकर इत्यनेन

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

शकाब्दाः १८३१, सनाब्दाः १९०९,

मूल्यं सार्धरूप्यकम् ।

प्राचीनजैनलेखसंग्रह ।

(प्रथम भाग)

मुनि जिनविजय

प्रवर्तककान्तिविजयजैनइतिहासमाला, चतुर्थ पुष्प ।

प्राचीनजैनलेखसंग्रह ।

प्रथम भाग ।

(प्राकृतलेखविभाग.)

संग्राहक अने सम्पादक–

मुनि जिनविजय ।

पाटणनिवासी शाह भीखाभाई वसताचंद

नी द्रव्य सहायथी प्रकट कर्ता–

श्रीजैन आत्मानन्द सभा

भावनगर ।

वीर संवत् २४४४

विक्रमाब्द १९७२.

मूल्य–

आठ आना.

प्रकाशक—

गांधी वल्लभदास त्रिभुवनदास,

सेक्रेटरी श्रीजैन आत्मानन्द सभा, भावनगर.

मुद्रक—

छोटालाल लालभाई पटेल,

मेनेजर लक्ष्मीविलास प्रेस, भाऊकाळेनी गली.

वडोदरा.

(तारीख ३०, ऑगष्ट, १९१७.)

अनुक्रमणिका.

उपोद्घात—

मूल निबन्ध—

प्राचीन जैन लेख संग्रह.

हाथीगुहा लेखनी प्रतिकृति.

उपोद्घात.

प्रारंभ.

जैनधर्म साथे संबंध धरावनारा जेटला प्राचीन शिलालेखो आज सुधीमां मळी आव्या छे तेमां आ पुस्तकमां आपेला " कटक नजीक आवेली उदयगिरिनी टेकरी उपरना हाथीगुफा तथा बीजा त्रण लेखो " सर्वथी प्राचीन छे. हाथीगुफा वाळो महामेघवाहन राजा खारवेलनो लेख जैनधर्मनी पुरातन जाहोजलाली उपर अपूर्व अने अद्वितीय प्रकाश पाडनारो छे. श्रमणभगवान् श्रीमहावीरदेव प्रबोधित पन्थना अनुयायिओमांना कोइपण प्राचीनमां प्राचीन नृपतिनुं नाम जो शिलालेखमां मळी आव्युं होय तो ते फक्त एकला आ प्रतापी नृपति खारवेलनुं ज छे. जैनधर्मना इतिहासनी दृष्टिए तो आ हाथी गुफावाळो लेख अनुपम छे ज परंतु भारतवर्षना राजकीय इतिहासनी अपेक्षाए पण आनी उपयोगिता अनुत्तर ज जणाइ छे लगभग एक शताब्दी जेटला लांबा काळथी आ लेखनी चर्चा युरोपीय अने भारतीय पुरातत्त्वज्ञोमां चाल्यां करे छे. अनेक लेखो अने पुस्तको आ लेखना विषयमां लखायां—छपायां छे. सैंकडो विद्वानो आ लेखनी मुलाखात लइ फोटा विगेरे उतारी गया छे—अने हजु पण एम ज चालु छे. आवी रीते ऐतिहासिक विद्वानोमां आ लेख एक महत्त्वनो अने प्रिय थइ पड्यो छे. परंतु ए जाणीने म्हने साश्चर्य खेद थाय छे के जेमना धर्म साथे आ महत्त्वना स्थाननो सीधो संबंध छे, जेमनो एक प्रकारे आ कीर्त्तिस्तंभ छे अने

जेमनी प्राचीन प्रभुताना प्रकाशमय किरणो आमां अंकित थयेलां छे ते जैनोमांथी हजी सुधी कोईने एनुं नाम पण जणायुं-संभळायुं नथी !

श्रमणभगवान् श्रीमहावीरदेवना निर्वाण बाद उदायी, चंद्रगुप्त, संप्रति अने विक्रमादित्य आदि नृपतिओ जैनधर्म पाळनारा अने जैन-शासननी प्रभावना करनारा थइ गयाना उल्लेखो केटलाक जैनग्रंथोमां जोवामां आवे छे, परंतु ते कथननी सत्यता सिद्ध करनार एक पण ऐतिहासिक प्रमाण–के जेने निःशंक रीते सर्व कोई स्वीकारी शके–आज सुधीमां उपलब्ध थयुं नथी. जे ग्रंथोमां उपर्युक्त राजाओने जैनधर्मानुयायी जणाव्या छे ते ग्रंथो घणा पाछळना समये लखायला छे तेथी तेमना कथन उपर पुरातत्त्वज्ञो बहु विश्वास नथी राखता. कारण के आवा ग्रंथोक्तवर्णनोमांथी घणा खरा इतिहासनी दृष्टिए निर्मूल ठर्या छे अने ठरता जाय छे. दृष्टान्त तरीके जे विक्रमादित्य नामना राजाना विषयमां अनेक चरित्रो अने आख्यानो लखायां छे अने जेना नामथी आजे आखा भारतवर्षमां (लगभग १२००–१५०० वर्षथी) राष्ट्रीय संवत् प्रवर्ते छे तेना अस्तित्व अने समय सुधां माटे पण आजना अनेक ऐतिहासिको शंकाशील छे !.

महत्त्वनां ऐतिहासिक साधनो.

ऐतिहासिक साधनोमां शिलालेखो, ताम्रपत्रो अने शिक्काओ सौथी वधारे महत्त्वना अने निःशंसय रीते प्रामाणिक गणाय छे. कारण के तेमां जे हकीकत आलेखेली होय छे ते, ते वखते बनेली अगर विद्यमान होय छे. किंवदन्ती के अतिशयोक्तिने तेमा बहुज अल्पस्थान मळे छे. कृत्रिमतानो संभव तेमां कल्पी शकातो नथी. आथी करीने पुरातत्त्वज्ञो जेटलो विश्वास ए साधनो उपर राखे छे तेटलो ग्रंथो उपर राखता नथी ग्रंथकारो पोतानी हयातीमां बनेली अने पोते खास

अनुभवेली बाबतोमां पण घणीक अतिशयोक्ति अने अलंकार भरेली हकीकतो, पोताना धर्मानुराग के वर्णित–व्यक्तिगत पक्षपातने अधीन थइ उमेरी दे छे तो पछी सेंकडो हजारो वर्षो पहेलां थइ गयेला अने जनसमाजमां बहु ज पूज्य के माननीय रुपे गणाइ गयेला नरोना अनेक शताब्दीओ पछीथी लखायेलां जीवनवृत्तांतोना विषयमां तो पूछवुं ज शुं ? एज कारणना लीधे अशोक के कनिष्क जेवा राजाओ के जेमनुं नाम पण जनसमाजना वातावरणमां आस्तित्व धरावतुं न हतुं तेमना विषयमां, फक्त पत्थरनी शिलाओ उपर खोदेली ५–१० पंक्तिओ जेटली नजीवी हकीकत उपर आजे सेंकडो विद्वान् पोतानी प्रतिभाने सतत परिश्रम आपता नजरे पडे छे, त्यारे महापुराण के महाभारत जेवा हजारो अने लाखो श्लोकोमां लखायला महान् ग्रंथोमां वर्णवेली व्यक्तिओ के वर्णनो तरफ भाग्येज कोइ सत्यनी दृष्टिए जुए छे ! एज कारण छे के, चंद्रगुप्त अने संप्रति जेवा जैनसमाजप्रसिद्ध नृपतिओना विषयमां ज्यारे अनेकानेक जैनग्रंथोमां विस्तृत रुपे वर्णन करवामां आवेलुं होवा छतां अने निःशंसय रीते तेमने परमजैन तरीके जणावेला होवा छतां तेमनुं जैनत्व स्वीकारवा माटे–अने संप्रतिनुं तो असंदिग्ध रीते अस्तित्व पण मानवा माटे–हजु विद्वत्समाज आनाकानी करे छे; त्यारे खारवेल जेवा एक सर्वथा अपरिचित–अज्ञात राजा माटे के जेनुं नाम सुधां पण आखा जैनसाहित्यमां कोइ पण स्थाने मळतुं नथी, अने जेना बनावेला एवा महत्त्वना हाथीगुफा जेवा जैनीय धर्मस्थानना अस्तित्वनी कल्पना पण आज सुधी कोइ जैनना मनमां जागेली जणाती नथी, तेने एक परम जैन (श्रीयुत के. ह. ध्रुवना वचनमां कहुं तो " हडहडतो जैन ") नृपति के " जैनविजेता " तरीके सिद्ध करवा के कबूल करवामां आधुनिक इतिहासज्ञो मान के आनंद माने छे !

चारेक वर्ष पहेलां म्हारा विद्वान् मित्र श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमीना अवलोकनमां, बंगला भाषाना प्रतिष्ठित मासिक पत्र 'साहित्य' ना एक अंकमां खारवेल संबंधी कांइक हकीकत प्रकट थयेली ते आवी. तेमणे तुरत तेनो सार लइ पोताना "जैनहितैषी" नामना सुसंपादित मासिक पत्रमां "खण्डगिरि और कलिङ्गाधिपति खारवेल" ए नामे एक संक्षिप्त लेख प्रकट कर्यो. ए लेख वांची म्हने ते संबंधी विशेष जाणवानी जिज्ञासा थइ अने हाथीगुफावाळा ए मूळ लेखने मेळववा प्रयत्न कर्यो; परंतु संयोगाभावे ते वखते कांइ सफळता मळी नथी. गये वर्षे, वडोदरामां वासस्थान थता "प्राचीनजैनलेखसंग्रह" छपावी प्रकट करवानो विचार थयो अने तेनी सामग्री एकत्र करतां, आर्किओलॉजिकल सर्वे ऑफ इन्डीआना सने १९०२–३ ना वार्षिक रीपोर्ट (Archæological Survey of India, Annual Report I, 1902-03) मां खंडगिरि संबंधी थोडीक हकीकत जोवामां आवी तेमज फ्रेंच विद्वान् डॉ. ए. गेरीनोट (A. Guerinot) ना Repertoire D'epigraphie Jaina नामना पुस्तकमांथी ते पुस्तकनुं नाम पण मळी आव्युं के जेमां हाथीगुफानो आ मूळ लेख, पंडित भगवानलाल इंद्रजी द्वारा शुद्ध रीते संपूर्ण स्पष्टीकरण साथे प्रकट थयेलो छे. ए पुस्तक सन १८८३ मां फ्रांसमां छपायेलुं होवाथी वडोदराना जेवी सेंट्रल लायब्रेरीमां पण मळी शक्युं नथी. बीजी पण केटलीक जग्याए तपास करावी पण कांइ पत्तो लाग्यो नथी. अंते पूनावाळा श्रीमान् देवदत्त रामकृष्ण भांडारकर एम. ए. के जेओ आर्किऑलॉजीकल सर्वे ओफ वेस्टर्न इन्डीआना सुप्रिन्टेन्डेन्टना उच्च अने प्रतिष्ठित पद उपर प्रथम ज हिन्दी तरीके अधिकृत थयेला छे अने जेमनो जैन इतिहास अने साहित्य उपर खास प्रेम होइ म्हारी साथे मित्रता भर्यो संबंध छे, तेमणे म्हने ए उपर्युक्त पुस्तक मेळवी आप्युं. एज पुस्तकना मूळ आधारे आ प्रस्तुत पुस्तक जैनइतिहासरसिकोनी आगळ उपस्थित करवानो प्रसंग प्राप्त थयो छे.

स्थान परिचय.

जे स्थाने खारवेलनो आ लेख आवेलो छे ते स्थान जैनप्रजाना वासस्थानथी घणा दूर अंतरे आवेलुं छे तेथी तेनी कांईक ओळखाण आपवी आवश्यक छे.

हिन्दुओ-वैष्णवोनुं प्रसिद्ध तीर्थ जगन्नाथपुरी जे प्रदेशमां आवेलुं छे तेने हालमां ओरीस्सा अथवा ओढिया प्रांत कहेवामां आवे छे. ए प्रान्त हिन्दुस्थानना पूर्व भाग उपर बंगालना उपसागरने कांठे आवेलो छे. प्राचीनकालमां ए प्रान्त कलिंग देशना नामे प्रख्यात हतो. अंग, बंग अने कलिंग-एम ए त्रणे देशोनी एक त्रिपुटी गणाती. '**प्रज्ञापनासूत्र**' ना प्रथम पादमां जे २५॥ आर्यदेशो जणाव्या छे तेमां कलिंगनुं पण नाम आपेलुं छे अने तेनी मुख्य राजधानी तरीके कांचनपुरी जणावी छे+. ए प्राचीन कलिंग के आधुनिक ओरीस्सा प्रांतमां कटक शहेर नजीक भुवनेश्वर करीने एक प्रसिद्ध स्थान छे तेनी पासे आ लेखवाळी 'खंडगिरि अने उदयगिरिनी टेकरीओ जेने खंडगिरि ज कहे छे ते (२०°१६' उ. अक्षांश, अने ८५°४७' पू० रेखांश) भुवनेश्वरथी उत्तर-पश्चिममां ४-५ माइल दूर आवेली छे. आ बे टेकरीओनी वचमां भुवनेश्वरना मार्गने अनुसरनारी एक खीण छे. अटघरथी चीलका सरोवर तरफ जता एक रेताळ पत्थरो-

---

+ रायगिह मगह, चंपा अंगा, तह तामलित्ति वंगा य ।
कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसी चैव कासी य ॥

परंतु ब्राह्मणोना आदित्यपुराणमां तो आ देशोने अनार्य गणाव्या छे अने एमां जवाथी ब्राह्मणो पतित थाय छे-एम लख्युं छे.

यथा—'अंग-बंग-**कलिंगाश्च** लाट-मालविकास्तथा ।' इत्यादि,
तथा—गत्वैतान्कामतो देशान् **कलिंगांश्च पतेत् द्विजः** ॥

वाळा (Sandstone) पर्वतना एक भागमां ते आवे छे.+' मेजर कीट्टु (Kittoe) के जेणे ज सर्वथी प्रथम (इ. स. १८३९ नी लगभगमां) आ लेखनी संपूर्ण नकल करी हती, ते आ स्थाननो परिचय आपतां नीचे प्रमाणे जणावे छे.

" खंडगिरि अने उदयगिरिनी टेकरीओ पत्थरीआ पहाडनी लांबी हारना भागो छे. आ पहाड ओरीस्सानी पत्थरनी टेकरीओना तळीआ नजीक थईने ॲटघर डेक्कुनल (Autghar Dekkunol) थी जुदो थई दक्षिण दिशामां चीलका सरोवर तरफ आगळ वधे छे. भुवनेश्वरथी उत्तर–पश्चिममां चार माइल दूर खंडगिरि आवेलो छे; अने कटकथी दक्षिण–पश्चिममां १९ माइल दूर छे. आ बे टेकरीओनी वचमां लगभग १०० यार्ड पहोळी एक खीण छे.........खंडगिरिना शिखर उपर बहु ज थोडी गुफाओ छे........उदयगिरिना दक्षिण तरफना शिखर उपर न्हानी न्हानी अनेक गुफाओ आवेली छे. लोकोमां एवी दंतकथा प्रचलित छे के उदयगिरिमां प्रथम ७५२ गुफाओ हती. आमांनी घणीखरी गुफाओ टूटी फूटी गई छे, तोपण हजी घणीक तद्दन आखी छे. अमुक कदनी कोई पण गुफा नथी. घणी खरी ६'+४' लंबाई पहोळाईमां तथा ४ थी ५ फीट उंचाईमां होय छे. तेमनी आगळ एक एक ओटलो छे, तथा न्हाना न्हाना द्वार छे के जे पहाडमांथी कोतरी काढेला छे. केटलीक गुफाओ विचित्र आकारनी कोरी काढेली छे जेवी के ' सर्पगुफा ' ' व्याघ्रगुफा ' विगेरे.* "

+ बाबु मनोमोहन गंगुले रचित Orissa and her remains ancient and Medieval.

* जर्नल ऑफ धी बेंगाल एसीयाटीक सोसायटी पुस्तक ६, पृष्ठ १०७९

गुफाओ संबंधी हकीकत.

बाबु मनोमोहन गंगुले नामना एक बंगाली विद्वाने थोडा समय पहेलां ओरीस्साना प्राचीन अने मध्यकालीन ध्वंसावशेषोना विषयमां " Orissa and her remains ancient and medieval" ए नामनुं एक सुंदर पुस्तक लख्युं छे. एमां तेमणे घणीज शोधपूर्वक ओरीस्साना प्राचीन इतिहासनी साथे तेना ध्वंसावशेषो–खंडेरोनुं सविस्तर वर्णन आप्युं छे. खंडगिरिनी गुफाओना विषयमां पण ए पुस्तकमां केटलुंक सारुं लखवामां आव्युं छे जेमांथी प्रस्तुत उपयोगी कांइक भाग आपवो अत्रे उचित थइ पडशे.

बाबु मनोमोहन खंडगिरिना विषयमां लखे छे के—

" आ टेकरी उपर घणी गुहाओ आवेली छे. जेमां पहेलां बौद्ध अने जैन श्रमणो रहेता हता, अने जेमांनी केटलीक इ. स. पूर्वे त्रीजा सैकाना पहेलानी छे.

आ गुहाओमां शिल्पकळानी उत्तमताना जुदा जुदा नमुना छे. केटलीक अने ते खास करीने खंडगिरिनी गुहाओ पशुओनी गुहाओ जेवी न्हानी छे तथा बीजी केटलीक काइक म्होटी छे. सामान्य रीते तेमां एक ओरडो अने तेनी आगळ ओटलो होय छे, केटलीकमां परसाळमां बे के त्रण भोंयरा छे. म्होटी गुहाओमां बे माळ छे, अने केटलीकमां उपरनो माळ पाछळ पडतो छे. आ गुहाओ घणीज सादी छे. पाछळना ओरडामां पांच के छ भोंयरां करवामां आव्यां छे, अने आगळ एक लांबी ओटलानी हार छे जेने स्तंभोनो टेको आपेलो छे. घणी खरी गुहाओ एवी छे के जेमना आगळना ओटलानी त्रण बाजुए १' थी १'६' सुधी उंची पत्थरनी पाटली आवेली छे. ओटलानी बे भींतो टोंच उप-

र्थी एवी रीते कोतरी काढवामां आवी छे के जेथी ते कबाटनो देखाव प्रदर्शित करे छे. आमां बौद्ध अगर जैन साधुओनो थोडो सामान रहेतो. तेमनां द्वार घणा न्हाना छे, तेथी साधुओने पेटे चाली जवुं पडतुं. राणी गुफा जेवी अगत्यनी गुफामां पण द्वारनुं माप ३"-११'+२' छे. घणी खरी गुफाओमां बारसाखो अंदरथी ढाळ पडती होय छे. ए गुफाओ एवी नीची छे के कोई माणस तेमां सुखेथी रही शके नहि. पण ते साधुओने माटे हती तेथी तेमने तो ते योग्य ज हती. ओरडानां भोंयरां लगभग २" ना पातळा पत्थरना आंतराथी जुदां पाडेलां छे.

भोंयरानी भींतो उपर बौद्ध दंतकथानां तथा जैन तीर्थंकरोना चित्रो-आकारो उपसेलां काढ्यां छे. ओटलाना स्तंभो घणा ज सरळ छे अने ते उपरथी तथा नीचेथी चोरस अने वचेथी अष्टकोणाकृति छे घणा कोतरेला स्तंभोनुं वर्णन खंडगिरि टेकरीनी जैनगुफावाळा वृत्तान्तमां आपवामां आव्युं छे. स्तंभोनी कोरणी सीधी नथी पण कांइक वांकीचुंकी छे. आ स्तंभोमांथी ब्रेकेट्स आगळ पडता आवे छे अने तेमना उपर "म्होटा स्तनवाळी अने पाछळ पडता मुखवाळी" स्त्रीओनी आकृतिओ छे. ब्रेकेट्स कोतरी काढेला छे अने तेमनी वचमां बाकुं छे. घणुं खरुं, ओटलानुं छापरुं परसाळना छापराथी नीचुं छे.

उपर कहेवामां आव्युं छे के आ गुहाओ कारीगरीनी उत्तमतानी भिन्नता दर्शावे छे. केटलीक गुहाओमां तो रही शकाय तेवुं छे अने केटलीक तो 'कुतरानी बोड' करतां भाग्ये ज म्होटी छे. आ उपरथी केटलाक युरोपीय अने तेमनी साथे केटलाक हिंदी विद्वानो पण भूल करे छे के जे गुहाओ म्होटी छे ते हाल करेली छे. डॉक्टर हन्टर आ प्रमाणे कहे छेः—'आ न्हानी गुहाओ हजु सुधीमां हाथ

लागेलां हिंदुस्थानना लोकोनां पहेलानां घरो छे. " आ गुहाओना मूळ तथा उत्तरोत्तर वधारामां आ विद्वानो तेमनो विस्तार (Evolution) गणे छे. खेदनी वात छे के आ शब्द (Evolution) अयोग्य स्थळे वापरवामां आवे छे. प्रो. हक्षलीए ' सायन्स अने कल्चर ' नामना पुस्तकमां कह्युं छे के " केटलांक सत्यो दंभथी शरु थाय छे अने शंकामां विराम पामे छे. " आ शब्दो अभिव्यक्तिवाद (Theory of Evolution) ने माटे तद्दन खरा छे.

उदयगिरिनी गुहाओनी उत्तरोत्तर वृद्धि शोधवानो मुख्य हेतु (म्हारा धारवा प्रमाणे) ए छे के, जे गुहाओ घणा कोतरकामवाळी छे ते अर्वाचीन छे अने ते परदेशी असरथी थयेली छे. तथा पत्थरनुं शिल्पकाम ग्रीक लोकोए दाखल कर्युं छे, आ बाबत पूरवार करावनारी छे.

उदयगिरि अने खंडगिरिमां बौद्ध श्रमणो रहेता हता अने ते यात्रानां स्थळ हतां. कलिंगना राजाओए जुदे जुदे वखते आ श्रमणो माटे तथा अन्य धार्मिक हेतुओथी आ गुहाओ तैयार करावी हती. गरीब तथा तवंगर बधा, श्रमणो माटे, आवी गुहाओ खोदी तैयार करे ए घणी उंडी धार्मिक श्रद्धाने लीधे छे; अने खरेखर गरीब तथा तवंगरना गजा प्रमाणे आ गुहाओ ' कुतरानी बोड ' जेवी अगर विशाळ थती. जो कोई तवंगरना महेलनी साथे ज कोईक भिखारीनी झुंपडी आवी होय तो ते झुंपडी महेल करतां जुनी छे एम मानवुं शुं भूलभरेलुं नथी ?

हवे आपणे बीजी रीते जोईए. धार्मिकश्रद्धानो प्रथम आविर्भाव उदार कामोमां थाय छे अने वखत जतां ते रुढ (Conventional) थाय छे. तेथी प्ररुढ धार्मिकश्रद्धानो आविर्भाव कळानां

कामोमां थाय छे. तेथी करीने केटलीक गुहाओ मात्र 'कुतरानी बोड' करतां बहु म्होटी नथी."

जैन गुफाओ.

" केटलीक गुहाओमां अने खास करीने जैन गुफा, नवमुनि गुफा, विगेरेमां जैन असर स्पष्ट जणाय छे. भींतो उपर तीर्थंकरोनी आकृतिओ उपसेली काढवामां आवी छे. डॉक्टर राजेन्द्रलाल मीत्रे तेमने भूलथी बुद्धनी छे एम कह्युं छे. सर्व गुहाओमां मळीने जैनतीर्थंकरोनी नग्न मूर्तिओ बुद्धनी आकृतिओ करतां घणी वधारे छे. हाथीगुफा जेवी प्रख्यात गुफाना लेखमां पण जैन असर स्पष्ट जणाइ आवे छे. ए लेखमां जेने डॉक्टर राजेन्द्रलाल बौद्ध स्वस्तिक कहे छे ते खरी रीते जैन स्वस्तिक छे. वळी आरंभमा नमस्कार पण जैन रीति मुजब छे. आथी आपणे निर्णय उपर आवी शकीए के उदयगिरि अने खंडगिरिनी गुहाओमां जैन तथा बौद्ध बंने असर व्यक्त थाय छे. केटलीक वखत बौद्ध तथा जैननो भेळसेळ थयेलो होय छे. बनारसमां सारनाथ आगळ एक जैन देवालय छे. बुद्ध गयामां पण एक जैन देवालय आवेलुं छे.

खंडगिरिनी गुहाओमांनी शतघर अगर शतवक्र, नवमुनि अने अनन्त गुहाओ जरुरनी छे. आमांनी पहेली बेमां जैन असर व्यक्त छे अने बाकीनीमां बौद्धोनी असर छे. शतवक्र गुहाने एक ओटलो हतो, जेना उपर स्तंभो हता. तेनी अंदर सात न्हाना स्तंभो हता जे हाल जता रह्या छे. तेमां बे गुहाओ छे जेनी वचमां एक पातळी भींतनो आंतरो छे. तेमनां नाम, त्रिशूल अने बारभुजा गुहाओ छे. शतघर गुहामां दक्षिणना भागनी परसाळनी दिवालो उपर लांछनो साथे जैनतीर्थंकरोनी आकृतिओ कोतरेली छे. परसालना डाबा खुणाथी शरु करीने तीर्थंकरोनी आकृतिओनुं वर्णन नीचे आपुं छुं.

(१) आ एक ऋषभदेवनी उभी नग्न आकृति छे अने तेनी पासे एक पोठीओ छे अने बे बाजुए उंचे हाथमां गायननां साहित्यो लइने उभेला बे सेवको छे. वळी बे बाजुए बीजा बे सेवको छे. तेमांना जमणा हाथ तरफना सेवकना हाथमां चामर छे तथा डाबा हाथ भणीना सेवकना हाथमां पंचपात्र छे. तेओ एक उंचा भाग उपर उभा छे. तथा ध्यानग्रस्त स्थितिमां पलांठी वाळीने बेठेली उपसेली बे आकृतिओ छे. तेमांनी डाबी आकृतिना हाथ छाती आगळ जोडेला छे अने जमणी आकृतिनी डाबी हथेली जमणी हथेली उपर मूकेली छे. आ आकृतिओनी नीचे बे नागणीओनी आकृतिओ छे जे हाथ जोडीने प्रार्थना करे छे तथा जेमना उपर सर्पनी फणाओ आवेली छे. आनी नीचे वचमां एक बळदनी आकृति छे जेनी डाबी बाजुए नाळचावाळुं एक पाणीनुं वासण छे तथा जमणी बाजुए एक शंख तथा सिंह छे. बळद कुदरती रीते ज काढयो छे. तेना शरीरनी करचलीओ पण काढेली छे.

(२) आ अजीतनाथनी लांबी नग्न आकृति छे. उपरनी बाजुए चंद्र आप्यो छे. उपरनी जे बे आकृतिओ छे ते हाथमां प्याला लइने उभेली बे स्त्रीओ छे. वच्चे बे सेवकोनी आकृतिओ छे; तेमांनी डाबी आकृतिना हाथमां चामर छे, तथा जमणी आकृतिना हाथमां पंखो छे. निचेनी आकृतिओ (१) नी आकृतिओ जेवी छे. अहीं चिन्ह तरीके हाथी काढेलो छे. अने तेनी बे बाजुए सिंहो काढेला छे.

(३) आ संभवनाथनी मूर्ति छे ते ध्यानग्रस्त स्थितिमां छे. ते एक प्रफुल्ल कमळ उपर बेठेली छे अने तेनी डाबी हथेली उपर जमणी हथेली छे. वच्चेनी बीजी आकृतिओ (२) ना जेवी छे. अहीं घोडाने चिन्ह तरीके काढयो छे. डाबी बाजुए नाळचावाळुं पाणीनुं वासण छे तथा बन्ने बाजुए बे सिंह छे.

(४) आ अभिनन्दननाथनी ' ध्यानी ' आकृति छे ते (३) ना जेवी छे; उपरना बे सेवकोने बदले बे कमळो छे. चिन्ह तरीके मांकडुं चितरेलुं छे.

(५) आ (३) ना जेवी छे; डाबी बाजुना सेवकनो हाथ माथाना मुकुट उपर छे. चिन्ह तरीके हंस छे. आ सुमतिनाथनी आकृति छे.

(६) आ (३) ना जेवी छे; चिन्ह तरीके पद्म काढेलुं छे. आ कमळनी जमणी बाजुए (३) नी माफक पाणीनुं वासण छे अने डाबी बाजुए कुंभ छे. आ पद्मप्रभुनी आकृति छे.

(७) आ सुपार्श्वनाथनी ध्यानी आकृति छे. उपरनी आकृतिओने बदले अहीं आछुं शोभावाळुं काम करवामां आव्युं छे. अहीं चिन्हमां स्वस्तिक छे जेनी शाखाओ घडीआळना क्रमथी उलटी दिशामां वाळेली छे.

(८) आ (७) ना जेवी छे. पण उपरनुं आछुं काम तेना करतां जरा जुदुं छे. चिन्ह तरीके अर्धचंद्र छे. आ चंद्रप्रभुनी आकृति छे.

(९) आ (८) ना जेवी छे; अहीं उपरनी आकृतिओमां कमळो छे. चिन्ह तरीके मोर छे. आ आकृति जेवी बीजी एके नथी. कारण के कोईपण तीर्थंकरने मोरनुं चिन्ह नथी.

(१०) आ (९) थी जुदी छे. तेमां तीर्थंकरनी उभेली नग्न आकृति छे. चिन्ह जतुं रह्युं छे. बे पोपटनी आकृतिओ छे. आ आकृति जेवी बीजी नथी.

(११) आ (१०) ना जेवी छे. पण नग्न आकृति उपर सर्पनी छाया छे. उपरनी आकृतिओमां बे उडती परीओ छे. चिन्ह

तरीके एक अजाण्यो छोडवो छे. बन्ने बाजुए बे घडा तथा सिंहनी आकृतिओ छे. कदाच आ २१ मां तीर्थंकर नमिनाथ होइ शके.

(१२) आ (१०) जेवी छे. आनुं चिन्ह स्पष्ट जणातुं नथी. कारण के हालमां तेनी आगळ एक न्हानी प्रतिमा घालेली छे. आना जेवी बीजी आकृति नथी.

(१३) आ (१) ना जेवी छे. चिन्हनुं म्होंढुं भांगी गयुं छे.

(१४) आ (५) ना जेवी ध्यानी आकृति छे. अहीं चिन्ह तरीके एक मघर छे तेनी बे बाजुए बे सिंहाकृति छे. आ ९ मा तीर्थंकर सुविधिनाथनी आकृति छे.

(१५) आ (१४) ना जेवी छे. अहीं (१२) नी माफक चिन्ह उपर एक न्हानी प्रतिमा घालेली छे. आ आकृतिना जेवी बीजी जाणवामां नथी.

(१६) आ (१५) ना जेवी छे. सेवकोना हाथमां चामरो छे. चिन्ह भांगी गयुं छे, घणुं खरुं ते हरणनुं हशे. आ १६ मा तीर्थंकर शांतिनाथनी आकृति छे.

(१७) आ ध्यानी आकृति छे; उपरनी आकृतिओ शोभा माटे छे. चिन्ह भांगी गयुं छे अने ते घेटानुं होय तेम जणाय छे. १७ मा तीर्थंकर कुंथुनाथनी आकृति छे.

(१८) आ (१५) ना जेवी छे. मच्छनुं चिह्न छे. आना जेवी बीजी आकृति जाणवामां नथी अने कदाच ते कल्पित हशे. कारणके कोईपण तीर्थंकरने मच्छनुं चिह्न नथी.

(१९) आ ध्यानी आकृति छे. उपरना भागमां कमळो छे. तेमां पाणीना वासणनुं चिह्न छे तेथी ते १९ मां तीर्थंकर मल्लीनाथनी आकृति छे.

(२०) आ (१९) ना जेवी ध्यानी आकृति छे. एक कल्पित छोडनुं चिह्न छे तेथी २१ मा तीर्थंकर नमीनाथनी आकृति दर्शावे छे.

(२१) आ (१९) ना जेवी ध्यानी आकृति छे. काचबानुं चिह्न छे. तेथी ते २० मा तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथनी आकृति दर्शावे छे.

(२२) आ ध्यानी आकृति छे; उपरना भागमां देवांगनाओ काढेली छे. शंखनी निशानी छे अने तेनी बे बाजुए मोर छे अने तेथी ते २२ मा तीर्थंकर श्री नेमीनाथनी आकृति दर्शावे छे.

(२३) आ एक उभी नग्न आकृति छे. उपरना भागमां कमळो छे. तीर्थंकरना मस्तक उपर जळनी धारा करती होय तेम हाथमां कुंभ लइने बे देवांगनाओ काढेली छे. गेंडीनुं चिन्ह छे. आ आकृतिमां ११ मा तीर्थंकर श्रेयांसनाथ छे.

(२४) आ एक उभी नग्न आकृति छे. उपरनी बाजुए (१) नी माफक गायननां साहित्यो सह अप्सराओ उभेली छे. सिंहनुं चिन्ह छे. अने छेल्ला एटले २४ मा तीर्थंकर महावीरस्वामीनी आकृति छे.

* निम्नगत, जैन कोषकर्ता हेमचंद्रनी कडीओ उपरथी एम जणाशे के उपरोक्त आकृतिओ उपसेली काढवामां अमुक शैली अनुसरवामां आवी ज नथी. केटलीक आकृतिओ पुनः पुनः आवी छे तथा केटलाक तीर्थंकरोने काढी नांखवामां आव्या छे. ११ मी अने २० मी आकृतिओमां २१ मा तीर्थंकर नमीनाथ आपवामा आव्या छे. तीर्थंकरोने चिन्हो सह कालगणना प्रमाणे गोठववामां आव्या छे. केटलीक-

---

* वृषो गजोऽश्वः प्लवगः क्रौञ्चोऽब्जं स्वस्तिकः शशी ।
मकरः श्रीवत्सः खड्गी महिषः शूकरस्तथा ॥
श्येनो वज्रं मृगच्छागो नन्दावर्त्तो घटोऽपि च ।
कूर्म्मो नीलोत्पलं शंखः फणी सिंहोऽर्हतां ध्वजाः ॥ (श्री हेमचंद्रः)

वार आ क्रमनो भंग करवामां आव्यो छे, परंतु क्रमभंग सलाटोना अज्ञानने लीधे छे. ९ मी अने १८ मी आकृतिमां जणाव्या प्रमाणे जैन शास्त्रमां नहि कहेली एवी आकृतिओ काढवा परथी तेमनुं अज्ञान साबीत थाय छे.

त्रिशूळ गुहानी उत्तरमां बारभूजा छे अने तेनी साथे नवमुनि गुहा छे.

नवमुनि गुहा एक साधारण गुहा छे, तेमां बे ओरडा छे अने एक ओटलो छे. आ गुहानी जरुर एटली ज छे के तेमां जैनश्रमण शुभचन्द्र विषेनो एक लेख छे अने तेनी मिति ई. स. १० मी सदी छे. आर्कीओलॉजिकल सर्व्हे रिपोर्ट पु. १३ ना प्रकाशके आ कोतरेली आकृतिओ बुद्धनी छे एम गणवामां भूल करेली छे.

ई. स. १८ मी सदीना अंतमां खंडगिरिना शिखर उपर मराठाओए बंधावेला जैन देवालय विषे सहज सूचना करुं छुं. कीट्टो (Kittoe) धारे छे के हालनुं देवालय कोइक चैत्यनी जग्या उपर बांधेलुं छे, कारण के त्यां जुना मकानोनी सामग्री तेने जडी हती.* पण कीट्टोना कहेवा प्रमाणे त्यां कोई जुनुं देवालय पहेलां होय तेम म्हने लागतुं नथी.

आ जैन देवालयथी पश्चिमे अने लगभग सपाट जमीन उपर केटलाक उभा चोरस पथ्थरो छुटा छवाया पड्या छे अने कनींग्हामना कहेवा प्रमाणे ते चैत्यो दर्शावे छे.§ आ ' देव सभा ' छे. कदाच आ नाम ए जग्यानुं ज होय.

नाइट्रोग्लीसराइन, फोडवानो दारु, गनकॉटन, कीसलगढ अगर नोबल डायनेमिक विगेरे पदार्थोनी शोध थयां पहेलां आवा खडकने

---

* कीट्टोनुं जे. ए. एस. बी. पु. ६ पा. १०७९.

§ कनींग्हामनो आर्कीओलॉजिकल सर्व्हे ऑफ इंडिया, पु. १३, पा. ८०.

उडाववो ए केटलुं अघरुं काम हशे ते मात्र कल्पनामां ज आवी शके, पण अहिंआ पथ्थरो पोचा तथा काणांवाळा छे तेथी खोदाणकाम सहेलाइथी थइ शके तेम छे. सामान्य रीते मुख्य खडकथी दूर ढाळ पडती जमीनथी गुहाओ खोदवामां आवी छे, ज्यां बनी शके त्यां बहार जोवाने बाकां करेलां छे. म्हारे कहेवानी जरुर नथी के आ बाकां रेल्वेने माटे खडको कोरतां जोवामां आवे छे तेवा छे. त्यां पाणी जवानी रीत संतोषकारक रीते राखवामां आवी छे. आ उपरथी प्रीन्सेप उपर एवी सज्जड असर थइ के तेणे जर्नल ऑफ धी एशियाटिक सोसायटी, पु. १६ पा. १०७९ मा नीचे प्रमाणे लख्युं छे:

"..........ओरडामांथी पाणी जवाने माटे एक अद्भुत युक्ति वापरी छे, नहि तो पथ्थरना छिद्राळुपणाने लीधे चोमासामां पाणी टपकत. तेथी छतमां नानां छिद्रो कर्यां छे अने ते सर्व नीचेना खुणामां भेगां थाय छे. ज्यां आगळ बहार पाणी जवा माटे एक म्होटुं बारुं राख्युं छे."

ओरडानी छत घणीवार जराक वांकी देखाय छे. जैनगुफानी छतनो उठाव तथा पहोळाईनुं माप म्हें लीधुं छे अने तेथी मालुम पडयुं के तेना उठाव अने पहोळाईनुं जे प्रमाण छे ते हाल पण हरकोई इजनेर कबूल करे तेवुं छे."

प्रसिद्ध गुफाओ अने तेमनो इतिहास.

खंडगिरि उपर जे न्हानी म्होटी सेंकडो गुहाओ छे तेमां हाथीगुफा, अनन्तगुफा, राणीगुफा, वैकुंठगुफा, माणेकपुरगुफा, जयाविजयागुफा, गणेशगुफा, स्वर्गपुरीगुफा, शतवक्र अने नवमुनिगुफा आदि गुफाओ विशेष प्रसिद्ध छे, आमां केटलीक गुफाओ बौद्धधर्मनी

छे अने केटलीक जैनधर्मनी छे. परंतु परस्पर बंने धर्मनी सेळभेळ थइ जवाना लीधे तथा बंने धर्मोमां जे केटलीक समानता छे तेना लीधे, आ गुफा–समूहमांथी केटली अने कइ जैनोनी छे अने कइ बौद्धोनी छे ते बरोबर तारवी शकाय तेम नथी. आ बधी गुहाओ एकी वखते थइ नथी परंतु जुदा जुदा समये बनी छे. बाबू मनोमोहन जणावे छे के—

"आ गुहाओनो इतिहास अंधारामां रह्यो छे अने घणा विद्वानोए ते इतिहास जाणवाने निष्फळ प्रयत्नो कर्या छे. हिंदुस्थानना आ भागनी गुहाओनो पश्चिम विभागनी गुहाओ साथे घणो संबंध नथी. तेथी मिति शोधवामां तथा नक्की करवामां शोधक आडे मार्ग चढी जाय तेम छे. हाथीगुफाना [आ] लेखथी ओरीस्साना आ अंधारामां रहेला इतिहास उपर अजवाळुं पडे छे. पंडित भगवानलाल इन्द्रजीना वांचवा प्रमाणे ते गुहाओनी मिति घणामां घणी इ. स. नी बीजी सदी होइ शके. तेमना कहेवा प्रमाणे आ गुफा जैन राजा खारवेले खोदी काढी हती. लिपिना अक्षरो उपरथी एम कही शकाय के घणी खरी गुहाओ इ. स. पूर्वे बीजा अगर त्रीजा सैकामां खोदी काढेली छे; अने इ. स. पूर्वे चोथा अगर पांचमा सैकामां पण ते थयेली होय एम कहेवामां कांइ खोटुं नथी; एटले के हाथीगुफा लेखनी पहेलांना समयमां; कारण के जे स्थळे आ गुहाओ छे ते स्थळने धार्मिक लोको घणा समयथी पवित्र गणता होवा जोइए."

कालगणना.

"आ गुहाओनी चोकस रीते कालगणना करवी ए तद्दन अशक्य छे. अने जैन तथा बौद्ध गुहाओना सेळभेळना लीधे अशक्यता वधी छे. भिन्न भिन्न विद्वानोए तेमनी भिन्न भिन्न मितिओ नक्की करी छे ए ज

तेनी अशक्यता पूरवार करे छे. दाखला तरीके अनंतगुहा जेनी मिति जुदा जुदा लेखो प्रमाणे चार सैकामां आवे छे. 'केव टेम्पल्स ऑफ इन्डिआ' ना कर्ताओए तेनी मिति इ. स. पूर्वे २०० अने १५० नी वचमां मूकी छे. कनिंगहामे* ई. स. नी बीजी के त्रीजी सदीमां गणी छे. गुहानी भींतो उपरना लेखोथी आ बाबत नक्की थइ शके तेम नथी, कारण के ते लेखो चोकस नथी; तेमना अर्थ जुदा जुदा थइ शके छे अने एक ज अर्थ थाय तो पण कालगणना विषे भिन्न भिन्न निर्णयो कढाय छे. दाखला तरीके हाथीगुफा लेखनी मिति डॉक्टर मित्रे इ. स. पूर्वे ३१६ अने ४१६ नी मध्ये मूकी छे. अने प्रीन्सेपे अशोकना लेखो करतां अर्वाचीन राखी छे. 'कॉरपस इन्स्क्रीप्श्यॉनम् इन्डिकॅरम' नो कर्ता प्रीन्सेपना मतने मळे छे. अने ई. स. पूर्वे १७५ अने २०० नी वचमां मूके छे. वळी भगवानलाल इन्द्रजीए प्रीन्सेप, मित्र, विगेरेना मत खोटा गण्या छे अने पोतानी एक नवी मिति नक्की करी छे, जे ई. स. पूर्वे १९८ अने १५३ नी वच्चे छे. हालमां 'जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटीक सोसायटी' ना एक अंकमां डॉक्टर फ्लीटे आ मत विषे पुनः शंका करी छे. आ उपरथी एम जणाशे के जुदा जुदा विद्वानोना मत जुदा जुदा पडे छे. आ हरकत हमणा वधी छे; कारण के वखत जतां अक्षरो वधारे घसाइ गया छे. तेथी ज शिल्पकाम उपरथी तेनी मिति नक्की करवानो म्हें प्रयत्न कर्यो छे."

❀ ❀ ❀

"मुख्य मुख्य गुहाओना खोदाण कामनी शक्य मितिओ नीचेना कोठामां आपुं छुं.

---

* कनिंगहामनो 'आर्किऑलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डिआ, पु. १३ (१८७५-७६) पृष्ठ ८१.

नंबर.	गुफा.	मिति.
१	हाथीगुफा.	ई. स. पूर्वे ३००.
२	अनन्तगुफा.	,, २५० थी २००.
३	राणीगुफा.	,, २०० थी १००.
४	जया–विजया.	,, २०० थी १००.
५	गणेशगुफा.	,, १०० थी १.
६	स्वर्गपुरीगुफा.	,, १०० थी १.
७	शतवक्र, नवमुनि जेवी जैन गुफाओ.	,, ५० थी ई. स. १००.

खंडगिरिनी जैन गुफाओनो समय नक्की करवामां घणी हरकतो आवे छे. म्होटा स्तंभो अने जैनतीर्थंकरोनी म्होटी प्रतिमाओ उपरथी एम स्पष्ट थाय छे के ते बौद्ध गुहाओथी अर्वाचीन छे. संस्कृत कोषकार अमरसिंहना ई. स. ना छठ्ठा सैकामां बंधावेली होवी जोईए एम धारवामां आवे छे. परंतु गयाना जैन देवालय करतां आ जैन गुहाओ नक्की प्राचीन छे एम कही शकाय.

हाथीगुफाना लेखमां जेनी अर्वाचीनमां अर्वाचीन मिति ई. स. पूर्वे बीजी सदीनी मध्यमां छे, तेमां खारवेलना महान् जैनवंश विषे उल्लेख करेलो छे. आ विगत उपरथी आपणे एम अनुमान करी शकीए के हाथीगुहानी नजीकमां जैनश्रमणो माटे गुहाओ खोदवामां आवी हशे. वळी उदयगिरि उपर घणी बौद्ध गुहाओ छे अने तेथी बौद्धोथी जुदा रहेवा माटे जैन साधुओए खंडगिरि पसंद कर्यो होय अने ते ई. स. पूर्वे पहेला सैकाथी ई. स. ना पहेला सैकामां होई शके. "

" परंतु नवमुनिगुहामां एक लेख छे जेमां उद्योतकेशरी जे ई. स. ना १० मा सैकाना प्रथम २९ वर्षमां थयो एम म्हें आठमा प्रकरणमां पूरवार कर्युं छे, तेना विषे उल्लेख छे. आ गुहामां एक जैनश्रमण कुलचंद्रनो शिष्य रहेतो हतो एम धारवामां आवे छे. आ लेख उपरथी एम निर्णय थई शके के आ गुहा दशमा सैकामां खोदाई हशे; पण ज्यारे गणेशगुफा, जे ई. स. पूर्वे सातमा सैकानी बौद्धगुहा छे तेनी परसाळमां गणेशनी आकृति अगर खंडगिरिनी एक जैनगुहामां हिंदुदेवी दुर्गानी आकृति जोईए छीए त्यारे ए निर्णयमां शंका उत्पन्न थाय छे. जो एम कहीए के गणेशगुहा अगर जैनगुफा ब्राह्मणगुफाओ छे, कारण के त्यां हिंदु देवो जोवामां आवे छे, तो ते अयोग्य गणाय. खरी रीते आ आकृतिओ पाछळथी घुसाडवामां आवी छे. केटलांक कारणो उपरथी तथा उद्योतकेशरी एक जैनोनो म्होटो पोषक हतो ते उपरथी एम बनी शके के आ लेख खोटो छे अने ते गुहा थया पछीनो छे, तथा पोताना विचारोनी उदारताने माटे जे वखणायो हतो तेना मानमां मात्र आ लेख कोतरेलो होवो जोईए."

हाथीगुफा.

उपर वर्णवेला गुफा–समूहमां ज प्रस्तुत लेखवाळी हाथीगुफा पण आवेली छे. आ गुफा उदयगिरिना शिखर उपर छे. आना विषयमां बाबू मनोमोहन ए ज पुस्तकमां जणावे छे के–" हाथीगुफा एक नैसर्गिक गुफा छे. तेना उपर घणी ज थोडी कारीगरी करवामां आवी छे अने जो के शिल्पीनी नजरथी ते बहु उपयोगी नथी तो पण त्यांनी सर्व गुफाओ करतां ते घणीज महत्त्वनी छे. कारण के

तेमां एक म्होटो लेख छे, जेमां कलिंगना एक राजानुं स्ववृत्तांत लखेलुं छे. डाक्टर भगवानलालना वांच्या पहेलां आ लेख हिंदुस्तानमां जुनामां जुनो गणातो अने जो के हाल ते प्रमाणे मनातुं नथी तो पण आ गुहानी उपयोगिता जरापण ओछी थइ नथी.

एने प्रथम शोधी काढनार मी. ए. स्टर्लींग हता. अने कर्नेल मेकेन्झीनी मददथी १८२० मां तेनी नकल लीधी अने पोताना घणा उपयोगी लेख " एन एकाउन्ट, जोग्रोफीकल, स्टेटीस्टीकल, एन्ड हीस्टोरीकल ऑफ ओरिस्सा प्रोपर, ऑर कटक" (An Account Geogrophical, Statistical, and Historical of Orissa Proper or Cattack) साथे एशीयाटीक रीसर्चीस (Asiatic Researches) पु. १५ मां १८२४ मां भाषांतर विना प्रकाशित कर्यो. मी. स्टर्लींग आ लेख वांचवाने अशक्तिमान हतो अने तेथी ग्रीक अक्षरो साथे तेना अक्षरोनी सरखामणी, तथा हिंदुस्तानना जुदा जुदा भागोना लेखोमांना अक्षरो साथे मेळववा शिवाय ते कांइ करी शके तेम नहोतो.

१८३७ मां ' जर्नल ऑफ धी एशियाटीक सोसायटी ' पु. ६ मां लेफटेनन्ट कीटोनी नकल उपरथी जेम्स प्रीन्सेपे भाषांतर तथा नकल सहित आ लेख प्रकाशित कर्यो छे. तेमना करेला भाषांतर उपरथी अहींना विद्वानोनुं ध्यान ते तरफ खेंचायुं. डाक्टर राजेन्द्रलाले ते लेख पुनः तपासी जोयो अने १८८० मां केटलाक फेरफारोसह ' एन्टीक्वीटीझ ओफ ओरिस्सा ' पु. २ मां प्रकाशित कर्यो.

प्रीन्सेप तथा मित्रनो मत एवो छे के ए लेख कलिंगना राजा ऐरनो हतो, जे राजा मूळ राज्य पचावी पड्यो हतो अने जेणे घणुं

दान कर्युं, तळावो खोदाव्यां अने आवांज बीजां जनहितनां कामो करीने लोकोनो मानीतो थयो. प्रीन्सेपना मत प्रमाणे ए लेख ई. स. पूर्वे २०० वर्षथी जुनो नथी. 'कॉरपस इन्स्क्रीप्श्योनम् इंडीकेरम् (Corpus Inscriptionum Indicarum) ना कर्ता प्रीन्सेपना मतने मळे छे अने धारे छे के ए लेख अशोकना लेखोथी जुनो नहीं होई ई. स. पूर्वे बीजा सैकाना छेल्ला पचीस वर्षमां थएलो छे. 'कारण के कोईपण अक्षर उपर माथुं के मात्र दोरेला नथी.' परंतु डाक्टर मित्र ए लेखने ई. स. पूर्वे ४१६ ने ३१६ नी वच्चेनो गणे छे. तेमनो निर्णय ई. स. पूर्वे ४१६ थी ३१६ सुधी राज्य करनार नव नन्दोमांथी एक नंदराजा उपर आधार राखे छे. जे भागमां (लीटी ६) नंदो विषे कहेवामां आव्युं छे ते भागनुं भाषांतर हुं नीचे आपुं छुंः—

"रत्नो—बधी सामग्री—ते देवने आपे छे. त्यारबाद दान करवानी इच्छा थवाथी—नन्द राजाना नाश करेला सो महेलो, अने तेने पण काढी मूकेलो, अने विजयनादी जे काई हतुं ते सर्व लूंटने उपर कह्युं ते प्रमाणे दानमां वापरी दीधी. *

प्रीन्सेप अने मित्रना मतप्रमाणे आ गुहा बौद्धनी छे. कारण के एना लेखमां बौद्धनां चिन्हो नजरे पडे छे. परंतु डाक्टर भगवानलाल इंद्रजीए ते जैननी छे एम पूरवार कर्युं छे अने ते खारवेलनी बनावेली छे एम कह्युं छे. आ लेखनी छेल्ली अगर १७ मी लीटीमा खारवेलनुं नाम आवे छे. भगवानलालना मत प्रमाणे आ लेखनी मिति मौर्यसन १६५ अगर ई. स. पूर्वे १५७+ छे. मौर्यसन ई. स. पूर्वे

---

* जे. ए. एस. बी. पु. ६.

+ Actes du Sixieme Congres or, tome iii pp. 174-177.

३२१ थी शरु थाय छे, तेथी गुन्हानो वधारेमां वधारे जुनो वखत ई. स. पूर्वे बीजा सैकानो होइ शके. हालमां डाक्टर फ्लीटे 'जर्नल ऑफ धी एशीयाटीक सोसायटी ऑफ ग्रेटब्रीटन' ना एक अंकमां प्रकट कर्युं[1] त्यार पहेलां वीन्सेन्ट स्मीथ[1] विगेरे शोधकोनो पण तेवोज मत हतो. पंडित (भगवानलाल)नुं मत मने पसंद नथी, पण ई. स. पूर्वे त्रीजा सैकाना अंतमां होई शके एम हुं धारुं छुं. एटले के मगधनी गादी उपर अशोक आव्यो ते पहेलां. डाक्टर फरग्युशन अने बरगेसना मतप्रमाणे 'आ लेखनी मिति घणुं खरुं ई. स. पूर्वे २०० छे.' तेओ कहे छे के अशोकना राज्यथी, खडकोमांथी भोंयरां खोदी काढवानी रीति शरु थइ अने त्यारबाद उत्तरोत्तर प्रगतिथी आ काम १००० वर्ष सुधी चाल्युं.[2]

आ लेखनी १६ मी लीटीमां कहेवामां आव्युं छे के आ राजाए 'जमीननी तळे ओरडा; तथा देवालय अने स्तंभोवाळां भोयरां कराव्यां.' आ उपरथी आपणे एम कही शकीए के हाथी गुफानी पासे तेना जेटली जुनी बीजी गुहाओ छे. जो के ते आपणे निश्चयपूर्वक कही शकीए नहिं. वळी आपणे एम पण कही शकीए के चैत्य, देवालय तथा स्तंभोवाळी गुहाओ करतां बीजी जुनी गुहाओ हशे."

कलिंगनो संक्षिप्त इतिहास.

आ प्रमाणे खंडगिरि अने त्यांनी गुफाओनुं वर्णन छे. कालना महात्म्यनी गति अकल छे. जे जैन अने बौद्धधर्मना श्रमणो माटे

१ वी. स्मीथनी 'अर्ली हीस्टरी ऑफ इंडीआ' पा. ३५ (टीप).

२ फरग्युसन अने बरगेसनी 'केवटेम्पल्स ऑफ इंडीआ' पा. ६७.

आ बधां ' लयनो ' बनाववामां आव्यां छे तेमां आजे सेंकडो वर्षथी ए धर्मना कोईपण श्रमणे तो शुं परंतु गृहस्थे पण पग सुधां नहि मूक्युं होय जे प्रदेशमां पूर्वे जैनधर्म आटली बधी जाहोजलाली भोगवतो हतो त्यां आजे ' जैन ' ए शब्दथी पण लोको सर्वथा अज्ञात छे. कटकमां थोडाक जैन दुकानदारो छे अने तेमना तरफथी एक न्हानुं सरखुं (दिगंबर संप्रदायनुं) नवीन मंदिर पण खंडगिरि उपर बनाववामां आवेलुं छे, परंतु ते बधुं परदेशीय छे. ए दुकानदार जैनो दक्षिणमांथी व्यापारार्थे जइने त्यां वसेला छे. ओरीस्साना मूळ वतनीओमांथी कोई पण जैनधर्मने ओळखतो नथी. ओरीस्सानो इतिहास यथार्थ रीते हजी सुधी उपलब्ध थयो नथी तेथी ए जाणी शकातुं नथी के ए प्रदेशमां जैनधर्मे केटली प्रगति करी हती ? तोपण आ गुफाओ अने लेखो उपरथी विद्वानो अनुमानो करे छे के घणाक समय सुधी जैनधर्म ए प्रदेशमां राज्यधर्म तरीके पळातो रह्यो छे. जैन अने बौद्ध धर्म बंने साथे साथे ज आ प्रदेश उपर खील्या होय एम जणाय छे अने तेमनी असर ब्राह्मणधर्म उपर पण केटलीक रीते सज्जड थयेली मनाय छे. आ विषयमां बाबू मनोमोहन लखे छे के—

" इसवी सननी शरूआत पहेलां अहीं जैनधर्म तथा बौद्धधर्म प्रवर्ततो हतो अने तेमनी असर हिंदुधर्म अथवा खरी रीते कहीए तो ब्रह्मधर्म उपर थइ हती. ब्रह्मधर्मनो बौद्ध अगर जैन धर्मनी साथे मेळाप थतां कळा कौशल्यना दरेक विभागमां फेरफार थया; शिल्पकळा पण तेनी असरथी अळगी रहे तेम न्होतुं. बौद्धधर्मनी सर्वव्यापी असर हजु पुरीमां दृष्टिगोचर थइ शके छे. "

“ ओरीस्सा ई. स. पूर्वे ३ जी सदीथी ई. स. नी ८ अगर ९ मी सदी सुधी जैन अने बौद्धधर्मनुं मुख्य स्थळ हतुं, ए मानवाने आपणी पासे खास कारणो छे. ई. स. पूर्वे २६२ मा महान् मौर्य राजा अशोके कलिंग देश जीत्यो त्यारथी बौद्धधर्मनी असर थवा लागी; आ जीतमां घणां माणसोनो घाण निकळी गयो, ते वात तेना शिलालेख (Rock edict) नं. १३ मां मोजुद छे. सुधारानी असर थती गइ अने क्रमे क्रमे कलिंग देश आगळ पडतो थवा लाग्यो. जो के केटलाक अशोकना लेखो मैसुरना उत्तर भागमां मळी आवे छे तोपण डॉक्टर भांडारकरे[1], वीन्सेन्ट स्मीथे[2], विगेरे विद्वानो कलिंगने अशोकना राज्यनी दक्षिणसीमा गणे छे. बौद्धधर्मना प्रवर्तनना लीधे तेमज समुद्रना किनारा उपर आववाना लीधे कलिंगदेश अन्य देशोना संबंधमा आवतो गयो; तेनुं दरियाई बळ घणा वखत सुधी रह्युं हतुं, अने हवे तेमां नवो उत्साह उमेरावाने लीधे ते व्यापारनुं मुख्य मथक बन्युं. ई. स. पूर्वे ७५ मां कलिंगथी निकळेला एक लश्करे जावा सर कर्युं.[3] ज्यारे ई. स ६२९ अने ६४५ नी वचे हुएनत्सांग (Hiuen Tsang) उन्य अगर ओरीस्सा आव्यो त्यारे तेणे बौद्धधर्मनी असर दर्शावनारा घणा म्होटा ‘ संघारामो ’ ‘ स्तूपो ’ विगेरे जोयां. तेणे कोई पण हिंदु देवालय विषे उल्लेख करेलो नथी. चे–ली–त–लो–चींग अगर चरित्रपुर अथवा हालनुं पुरी, तेनी बहार तेणे “ टावर सहित उंचा शिखरोवाळा साथे साथे पांच स्तूपो ” जोयां.* आ स्तूपो घणा वखत

---

१ डॉक्टर फलीटनुं ‘ बॉम्बे गेझेटीअर ’ पु. १. तथा, डॉ. भांडारकरनो ‘ दक्षिणनो इतिहास ’ भा. १.

२ वी. स्मीथना ‘ अर्ली हीस्टरी ऑफ इन्डीआ ’ पृष्ठ १३१.

३ ‘ साइक्लोपीडीआ ऑफ इन्डिआ, पु. २. (१८८५).

* कनींगहामनी ‘ ॲनश्यन्ट जोग्रॉफी ऑफ इन्डीआ. ’

थयां जमीनदोस्त थई गयां छे, परंतु बौद्धनी असरनुं जे कांई गुफाओमां हाल बाकी रह्युं छे ते उपरथी बौद्धधर्मनी चढती विषे ख्याल आवी शके. हिंदुओने प्रिय एवा जगन्नाथ विषे बौद्धधर्मे घणी सचोट असर करी छे."

"हाथीगुफा लेखमां पंडित भगवानलाल इंद्रजीए वांच्यु ते प्रमाणे तेनी मिति ई. स. पूर्वे बीजा सैकानी वचमां छे अने तेनो कर्ता कलिंगनो राजा अने जैनधर्मनो उत्तेजक खारवेल छे. आपणे खारवेल तेमज तेना वंश विषे कांई पण जाणता नथी, मात्र उदयगिरिनी स्वर्गपुरी गुहाना एक लेखमां तेनी स्रीनुं नाम जोवामां आवे छे. आ छूटी छूटी हकीकत उपरथी एम साबीत थाय छे के कलिंग देश उपर जैन राजाओ एक वखते राज्य करता हता. खंडगिरि अने उदयगिरिनी गुहाओ उपरथी स्पष्ट रीते जैन अने बौद्धधर्मनी असर दृष्टिगोचर थाय छे."

"जैनधर्मे कलिंगदेशमां एवां सज्जड मूळ घाल्यां हतां के जेनी असर आपणे ई. स. ना १६ मा सैकामां पण जोई शकता हता. सूर्यवंशी राजा, ओरीस्साना अधिपति प्रतापरुद्रदेवने जैनधर्म विषे घणी ममता हती. धी रेवरन्ड लॉंगे तेने जैन ठराव्यो छे. + खंडगिरि उपरनी नवमुनि गुहामांना एक लेखमां जैन श्रमण शुभचंद्रनुं नाम जोवामां आवे छे."

"आवी छूटी छूटी विगत उपरथी आपणे निर्णय उपर आवी शकीए के अहींआ केटलोक वखत जैनधर्मनुं जोर हतुं अने ते राज्य-

---

+ 'जर्नल ऑफ एशीयाटीक सोसायटी ऑफ बेंगाल' पु. २८, नं. १-५ (१८५९).

धर्म हतो. ई. स. नी शरुआतमां कया कया वंशो कलिंग उपर राज्य करता हता तेना विषे चोक्कस रीते जाणी शकीए तेम नथी; पण एटलुं तो आपणे जाणीए छीए के हिंदुस्थानना जुदा जुदा देशोना राजाओए कलिंग देश जीत्यो हतो. तेनी समृद्धि विषेनी प्रख्याति घणे दूर सुधी पहोंची हती. अने तेथी पासेना राजाओने ते देश जीतवानो उत्साह थतो. कलिंग देश घणो समृद्धिवान् हतो, ए नीचेनी विगत उपरथी कही शकाय:–कलिंग देश ' नवखंड पृथ्वी ' ना नव खंडोमांथी एक खंड गणातो हतो; ए प्रमाणे तामील शब्दकोषोमां जणाव्युं छे. (जुओ सेन्डरसननो कानडी कोष.) "

" रामायण अने महाभारतनो वखत बाद करतां त्यार पछीना वखतमां जे जे राजाओए ते देश उपर हुमला कर्या ते राजाओ एटला बधा छे के तेमनुं वर्णन थई शके तेम नथी. ई. स. पूर्वेना ३ जा सैकामां अशोके ते देश जीत्यो ए विगत म्हें उपर आपी छे. घणे भागे अन्ध्रवंशना राजा शातकर्णीना हुमला विषे हाथीगुफाना लेखमां आपवामां आव्युं छे. तेणे " घणा घोडा तथा हाथीओ " मोकल्या पण ते बधा खारवेले हराव्यां. "

" ई. स. ना बीजा सैकामां कलिंगदेश अन्ध्र राजाओना हाथमां गयो, मंगलेश राजाना स्तंभलेख उपरथी आपणे जाणी शकीए छीए के बदामी (Badami) ना पश्चिमीय चालुक्योना राजा पहेला कीर्तिवर्मा जेणे ई. स. ५६७–६८ थी ५९७–९८ सुधी राज्य कर्युं, तेणे कलिंगना राजाने हराव्यो. तेज वंशना कीर्तिवर्माना पुत्र बीजा पुलकेशीए ई. स. सातमा सैकामां ते जीत्यो अने ते वखते कनोजमां हर्षवर्धन राज्य करतो हतो. "

१ वी. स्मीथनी ' अर्ली हिस्टरी ऑफ इन्डीआ ' पृ. १८५.

" ई. स. ८ मा सैकानी मध्यमां राष्ट्रकूटना राजा दन्तिदुर्गे कलिंगदेश जीत्यो, पुनः ई. स. ९ मा सैकामां जैनधर्मना पोषक अकालवर्षे ते जीत्यो. ज्यारे ज्यारे वखत मळतो त्यारे त्यारे पूर्वना चालुक्यो ते देश उपर हुमलो करता. ई. स. ना ११ मा सैकामां पूर्वीय चालुक्योना राजा राजराजदेवे तेना उपर स्वारी करी. "*

" महान संस्कृत कवि कालिदास ई. स. ना ७ मा सैकामां थयो, तेथी नैसर्गिक रीते तेणे रघुनी जीतनो देखाव कलिंगमां मूक्यो हशे.+ ई. स. ना १२ मा सैकामां लखायला राजतरंगिणिमां कल्हण पंडिते ललितादित्यनी कलिंगनी जीत विषे घणुं रसमय वर्णन आप्युं छे.§

कलिंगदेश जीतवो ए मात्र उपचार थइ पड्यो अने ' कलिंगाधिपति ' ए इल्काब घणो मानवंतो थयो; कारण के कोसल तथा चालुक्योना राजाओनी पाछळ ' त्रिकलिंगाधिपति 'नो इल्काब जोडेलो आपणे जोइए छीए. "

" ई. स. ९ मा सैकाना आरंभ सुधीनो ओरीस्सानो इतिहास अस्तव्यस्त स्थितिमां छे. त्यां एक जोरावर वंश राज्य करतो हतो, ए ना कही शकाय तेम नथी, परंतु एक पछी एक कया राजाओ

---

* डॉ. इ. हुल्टझना ' दक्षिणाना लेखो ' पृ. ६३.

\+ स तीर्त्वा कपिशां सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः ।
उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखं ययौ ॥
रघुवंशम् , ४-३८.

§ ' राजतरंगिणी ' इंग्रेजी भाषांतर, कर्ता डॉक्टर स्टेन.
पु. १, भा. ४, १४७ मो श्लोक, पृष्ठ १३४.

तेनी गादी उपर आव्या ए नक्की करवुं सरल नथी कारण के तेनी सत्तावार विगत मळती नथी. ”

कलिंगमांथी जैनधर्मनुं निर्वासन.

कलिंगना आ संक्षिप्त इतिहास उपरथी जणाशे के ते देशमां एक वखत जैनधर्मे घणी उंची सत्ता भोगवी हती. आवी उन्नतदशाए पहोंचेलो जैनधर्म ते देशमांथी पाछळथी एटले सुधी विलुप्त थइ गयो के तेनुं नाम के निशान पण आजे त्यां जणातुं नथी ए एक खरेखर आश्चर्यकारक बनाव कही शकाय. बौद्धधर्म लुप्त थाय तेना तो अनेक कारणो छे अने ते कारणोने लइने ते एकला कलिंगमांथी ज नहि परंतु आखा भारतवर्षमांथी पण विलुप्त थयो छे; परंतु जैनधर्मना इतिहासमां आवां कशा कारणो जणातां नथी, तेमज ते अद्यावधि आर्यावर्तना अनेक प्रदेशोमां पोताना अस्तित्वने उत्तम रीते टकावी पण रह्यो छे. कलिंगमांथी जैनधर्म आवी रीते क्यारे अने कयां कारणोने लइने लुप्त थयो ते अद्यापि अज्ञात छे. उपर आपेला इतिहासथी एम जणाय छे के ई. स. ना ११ मा सैका सुधी तो ते प्रदेशमां जैनधर्म प्रचलित हतो. कारण के प्रथम तो खंडगिरिनी नवमुनि नामनी गुहामां ज जे एक लेख ए शताब्दीनो छे तथा जेमां जैनश्रमण शुभचंद्र अने कुल-चंद्रनुं नाम आवे छे अने जे बाबत उपर लखाइ गइ छे, ते उपरथी सिद्ध थाय छे के ए समय सुधी तो त्यां जैनश्रमणो रहेता हता. बीजुं उपर जे कलिंगनो संक्षिप्त इतिहास आपेलो छे तेमां जे चालुक्यो अने राष्ट्रकूटवंशीय राजाओ समये समये ए देश उपर चढाइ लइ जइ एने पोताने तावे बनावता हता एवुं जणाव्युं छे, तेमांना केटलाए राजाओ तो जैनधर्मने माननारा के मान आपनारा हता तेथी तेमना

समयमां जैनधर्मनो लोप थवो असंभवित छे. म्हारा धारवा प्रमाणे ई. स. ना १२ मा सैका पछी त्यांथी जैनधर्म अदृष्ट थयो होवो जोइए. कारण के ए समय पछी वैष्णवोनो जोर वधवा मांड्यो हतो अने दक्षिण अने कर्णाटकना जे राजवंशो जैनधर्म प्रति सद्भाव धरावता हता ते पण (रामानुजाचार्यना संप्रदायना प्रादुर्भाव अने प्रभावना लीधे) आ समयमां जैनधर्मथी पराङ्मुख थवा लाग्या हता. आथी करीने घणी रीते संभवित छे के ए समय पछी कलिंगमांथी जैनधर्म अदृश्य थयो हशे. अने ते अदृश्य थवामा मुख्य कारण कोई प्रबल राजकीय उपद्रव ज होवा संभव छे. मी. वीन्सेन्ट स्मीथना कहेवा मुजब*, जेम दक्षिणना केटलाक शैव राजाओए ई. स. ना सातमा सैकामां जैनधर्म उपर अत्याचार गुजार्यो हतो अने अनेक जैनोनो सर्वनाश कर्यो हतो, तेम ए कलिंगमां पण कोई हिंदुराजाए आवी ज वर्तणुंक चलावी होय अने तेना लीधे जैनोने पोताना प्राचीन अने प्रिय एवा ए प्रदेशनो सर्वथा त्याग करवो पड्यो होय, ते घणी रीते बनवा जोग छे. जो के कलिंगना इतिहासमांथी ए विषे कशो विशेष उल्लेख मळतो नथी तो पण छूटी छवाइ एवी दंतकथाओ अवश्य संभळाय छे के जे आ वातने पुष्टि आपती होय. ' आर्किओलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डीआ ' ना सने १९०२-०३ ना एन्युअल रीपोर्टमां मी. T. H. Bloch आ बाबत उपर लखे छे के " खंडगिरिनी आ गुहाओनो जैनोए क्यारे त्याग कर्यो ए खरी रीते जाणवाने आपणी पासे साधन नथी. मात्र पुरीना देवालयना इतिहासमांनी एक अव्यक्त दंतकथा छे. जेमां कहेलुं छे के कोडगंगाना पौत्र मदन महादेवे भुवनेश्वरनी आजुबाजुनी टेकरीओमां रहेता जैन तथा बौद्ध

* जुओ, अर्ली हीस्टरी ऑफ इन्डीआ, पृ. ४५४-५.

साधुओ उपर जुलम गुजार्यो हतो. जो आ वात खरी होय तो ते ई. स. ना १२ मा सैकानी आखरमां बनी होवी जोईए‡ " आ उपरथी संभवित छे के कलिंगना कोई राजाए ज जैनोने ए देश सदाने माटे छोडी जवानी कठोर फरज पाडी होवी जोईए.

खारवेलनो लेख.

आ प्रमाणे खंडगिरि अने त्यांनी गुफाओनुं कांईक प्राचीन–अर्वाचीन वर्णन छे. आ वर्णन अने तेनी साथे आपेला कलिंगदेशना संक्षिप्त इतिहास उपरथी वाचकोने हाथीगुफावाळा ए खारवेलना लेखनी हकीकत अने महत्त्वा बरोबर समजी शकाशे. आ लेख, हिंदुस्थानना बीजा बधा लेखो करतां अपूर्व अने विलक्षण छे. मी. T. H. Bloch कहे छे के " आ लेख तद्दन ऐतिहासिक छे के जे हिंदमां प्रथम ज छे. आनी शैली राजा डेरीअस (Darius) ना बेहिस्तुन (Behistun) लेखना जेवी छे.[1] " आ लेख एक बरड शिला उपर कोतरेलो होवाथी कालना घसाराना लीधे एनो मध्यनो केटलोक भाग नष्ट थई गयो छे के जे आगळ लेखमां स्पष्ट जणाय छे. ए नष्टभाग ऐतिहासिक दृष्टिए घणो ज महत्त्वनो हतो. आ लेखना स्पष्टीकरण माटे जेम उपर जणाववामां आव्युं छे तेम, अनेक विद्वानोए बहु परिश्रम उठाव्यो छे परंतु तेमां पूरेपूरी सफळता तो गुजरातना गौरवभूत पुरातत्त्वज्ञ पंडित भगवानलालने ज मळी छे. तेमणे ज ए लेखना कर्तानुं वास्तविक नाम अने संबद्ध वर्णन खोळी काढयुं हतुं. एमनी पहेलाना शोधको तो लेखकर्तानुं नाम पण 'ऐर' बतावता हता अने पाठो पण आडा

---

‡ बाबु मनमोहन चक्रवर्ती एम. ए ना " नोट्स ऑन धी रीमेन्स इन धौली एन्ड इन धी केस ऑफ उदयगिरि " पृष्ठ ९.

१ आर्कीओलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डीआ, एन्युअल रीपोर्ट, १९०२–०३.

अवळा लगाडता—बेसाडता हता. गुजरातना ए गौरवमां ओर उमेरो करनार गुर्जर साक्षररत्न श्रीयुत केशवलाल हर्षदराय ध्रुव छे के जेमणे पोताना एक देशबंधुए करेला ए 'सुवाच्य' लेखने स्वकीय प्रतिभाना प्रकाशथी अधिक ओप आपी सर्वेना माटे 'सुग्राह्य' बनाव्यो छे. श्री भगवानलालना निबंधमां जे अपूर्णता हती अने जेना लीधे आखो लेख अस्पष्ट जेवो जणातो हतो तेनी पूर्ति श्रीयुत केशवलाले करी छे अने लेखमांनी दरेक हकीकतने सुसंगत अने स्पष्ट बनावी छे.

मगधना जे राजा उपर खारवेले चढाइ लइ जइ विजय मेळव्यानो आ लेखमां उल्लेख करेलो छे परंतु त्रुटित पाठना लीधे जेनुं नाम समजी सकातुं नथी, ते श्री केशवलालना विचार प्रमाणे बीजो कोई नहि पण पाटलीपुत्रनो प्रख्यात पुष्यमित्र ज छे के जे छेल्ला मौर्यराजा बृहद्रथनो सेनानी हतो अने जेणे राज्यलोभ वश थई पोताना राजानुं व्यायामभूमिमां कपटथी खून करी, तेना सिंहासननो स्वामी बन्यो हतो. पाछळथी ए ज पुष्यमित्र अश्वमेध यज्ञ करी चक्रवर्ती बन्यो हतो. भाष्यकार पतंजलि अने स्वप्नवासवदत्तादि नाटककार महाकवि भास ए ज पुष्यमित्रना आश्रित हता. आवी रीते खारवेलने पुष्यमित्रनो विजेता बनावी तेना लेखना बधा अव्यवस्थित अंकोडाओने यथास्थाने गोठवी ई. स. पूर्वेना बीजा सैकानी खंडित ऐतिहासिक शृंखलाने अखंड बनावी छे. जाते 'महामेघवाहन' होवा छतां पण क्रूर कालना कठोर पंजामां सपडाई जई बे हजार वर्ष सुधी ऐतिहासिक अंधकारवाळी उंडी गुफामां पडी रहेला ए खारवेलना जीर्ण—शीर्ण नामने पोतानी प्रतिभाना किरण वडे आकर्षी वीसमी सदीना वैद्युतिक आलोकवाळा विज्ञ जगतना विचारोद्यानमां लावी मूकवावाळुं पतितोद्धारक 'केशव' कृत्य सुजनो द्वारा अवश्य स्तुत्य ज छे.

खारवेलना समय विषे जो के हजु सुधी विद्वानोमां केटलोक मतभेद दृष्टिगोचर थाय छे तो पण अधिकांश विचारो पंडित भगवान-लालना मतने ज मळता थता जाय छे अने तेमां श्रीकेशवलालना निर्णये सबळ पुष्टि आपी छे तेथी हवे घणा भागे ए ज समय निश्चित रुप लेशे.

आ लेखथी जैनधर्म उपर पडतो प्रकाश.

खारवेलना आ लेखे जैनधर्म अने तेना इतिहास उपर केटलोक अपूर्व प्रकाश पाड्यो छे. अनेक नवी बाबतो आ लेख उपरथी जाण-वामां आवी छे, तथा विचारवा जेवी जणाइ छे. तेमांनी मुख्य मुख्य आ छेः—

१. जे केटलाक आधुनिक पाश्चात्य विद्वानो, अने तेमना संसर्गथी केटलाक भारतीय पंडितो पण, प्रथम एम धारता हता के जैनधर्म कोइ पण वखते राज्यधर्म तरीके स्वीकारायो नहोतो अथवा तो अशोक अने कनिष्क विगेरे राजाओए जेम बौद्धधर्मनी उन्नति माटे प्रयत्नो कर्या तेम जैनधर्म माटे कोइए कांइ कर्युं नथी; ते बधाने आ लेखे खोटा पाड्या छे, अने जैनधर्मना प्राचीन गौरवने तेमना हृदयमां यथोचित स्थान आप्युं छे. तेमने एम कबूल करता बनाव्या छे के जैनधर्म पण पूर्वे अनेक देशोमां अने अनेक राजवंशोमां राज्यधर्म तरीके पळायो छे. तेनी असर प्रजाना पण म्होटा भाग उपर थइ हती अने ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य विगेरे दरेक वर्णोमां ते प्रचलित थयो हतो. जैनग्रंथोमां जे अनेक ठेकाणे राजाओनां जैनत्वमाटे वर्णनो आवे छे ते केवळ धर्मना महात्म्यने वधारवा माटे कल्पितरुपे बनावी लीधां छे एम ज नथी परंतु तेमां ऐतिहासिक सत्य पण होई शके छे एम आ लेख उपरथी मानी शकाय छे.

२. जैनसाहित्यमां जे बे चार ऐतिहासिक राजाओना जैन होवा बाबतना जेवा तेवा उल्लेखो मळी आवे छे तेमना शिवाय बीजा पण अनेक आवा प्रतापी राजाओ थइ गया छे के जेमणे जैनधर्मनी उन्नति अने प्रगति करवा माटे विशेष विशेष प्रयत्नो कर्या छे, परंतु तेमनां नामो आपणा स्मरणपट उपरथी क्यारनाए भुंसाइ गया छे. ए एक खरेखर आश्चर्यकारक वात लागे छे के संप्रति जेवा राजाने माटे तो, के जेनी विश्वसनीय कृति क्यांये पण आजसुधी उपलब्ध थइ नथी, केटलाए ग्रंथोमां बहु बहु वखाण करेलां छे, त्यारे तेना ज समयनी आसपास थइ गयेला तथा साहसिक अने वीर एवा प्रख्यात पुष्यमित्र सरखा वैदिक नृपति उपर आदर्शरूप विजय मेळवनार खारवेल जेवा परम जैन राजानुं नाम सुधां पण कोइए स्मरी राख्युं नथी !

३. जेम बौद्ध श्रमणोनी समये समये अमुक स्थानमां एकत्र परिषद् मळती हती तेम जैनश्रमणोनी पण परिषद् मळती होवी जोइए एम आ लेखनी वळण उपरथी जणाय छे. अशोक अने कनिष्के जेवी रीते बौद्ध श्रमणोनी पाटलीपुत्र अने मथुरामां परिषदो मेळवी हती तेवी रीते खारवेले पण सर्व दिशामांथी ज्ञानवृद्ध अने तपोवृद्ध निर्ग्रंथ श्रमणोने आह्वान करी कुमारी पर्वत* उपर एक साधु परिषद् भरी हती.

---

* कुमारी पर्वत ते कयो अने क्यां आगळ आवेलो छे ए बाबत प्रथम केटलीक तपास करेली परंतु कांई खुलासो मळी शक्यो नहि. ज्यारे आ लखाण छेल्ली वारनुं संशोधित थइ प्रेसमां जाय छे ते वखते वडोदरेथी श्रीयुत चिमनलाल डाह्याभाई दलाल एम. ए. नुं पत्र मळ्युं तेमां तेओ आ बाबत लखे छे के—" कुमारगिरि (एटले कुमारी) पर्वत विषे आज Epigraphia Indica, October. 1915. P. 166. मां वांचवामां आव्युं के उदयगिरिनुं मल नाम कुमार पर्वत हतुं अने खण्डगिरिनुं नाम कुमारी पर्वत हतुं. १० मा ११ मा सैका सुधी आ बन्ने पर्वतो कुमार–कुमारी पर्वत तरीके जाणीता हता." आ उपरथी जणाय छे के कुमारी पर्वत ते खण्डगिरि ज छे अने एना उपर ज खारवेले निर्ग्रंथ श्रमणोनी परिषद् भरी हती.

४. जेवी रीते बौद्ध श्रमणोना रहेवा माटे जुदा जुदा प्रदेशोना अनेक राजाओए रमणीय पर्वतो उपर गुफा–मंदिरो कराव्यां हतां तेम जैनश्रमणोना निवास माटे जैन राजाओए पण अमुक अमुक स्थळे गुफा–मंदिरो बनाव्यां छे. आ गुफा–मंदिरोना संबंधमां एक ए वात विचारवा जेवी छे के अत्यार सुधीमां जेटलां जैन–गुफा मंदिरो जणायां छे ते बधां दिगंबर जैनोना वस्तिवाळा प्रदेशमां ज वधारे छे, श्वेतांबरोना वासप्रदेशमां नथी. खंडगिरि उपर पण दिगंबर जैन मुनिओनो ज निवास रहेतो हतो. जो के खारवेलना समयमां दिगंबर श्वेतांबर भेदो व्यक्तरुपे नहि होय–ते वखते तो घणा भागे जैनधर्म अविभक्तरुपे ज हतो–तोपण पाछळथी तो ए प्रदेश उपर दिगंबर संप्रदायनुं ज स्वामित्व हतुं. खंडगिरिनी जैनगुफाओमां जे जैनमूर्तिओ विगेरे कोतरेली छे अने जेमनुं वर्णन उपर आपवामां आव्युं छे ते बधी दिगंबरी ज छे. एरुला, अणकीटणकी विगेरे बीजा स्थाने पण जे जैनगुफाओ छे तेमां दिगंबर संप्रदायना ज चिह्नो नजरे पडे छे.* आनुं

---

* ब्राह्मणो अने बौद्धोना गुहामंदिरोनी अपेक्षा जैनगुहामंदिरो प्रमाणमां घणां ज थोडां जणायां छे. जैनगुहामंदिरोनो म्होटो भाग दक्षिण हिन्दुस्थानमां–मुंबई इलाखामां ज आवेलो छे ' केव टेम्पलस् ऑफ इन्डीआ ' नामना उपयोगी पुस्तकमां हिन्दुस्थानना बधां गुहामंदिरोनुं सविस्तर वर्णन आपवामां आव्युं छे. आना छेवटनां प्रकरणोमां जैनगुहामंदिरो बाबत पण स्वतन्त्र विवेचन करवामां आव्युं छे. तेमां जणाव्या प्रमाणे मुख्य मुख्य जैनगुहामंदिरो आटली जग्याए आवेलां छे:—दक्षिणमां बदामी पासे; करुसा पासे; अंबा अगर मोमीनाबाद पासे; सोलापुरनी उत्तर बाजुए आवेला धारसिण्वा पासे; नासीकथी थोडाक माइल दूर आवेला चामरलेना पासे; चांदोरनी पासे भामेरगुहा; पीटलखोरा पासे; खानदेशमां अणकी पासे. आ शिवाय एरुला अने गवालीअर पासे पण जैनगुहामंदिरो के कोरेला खडको आवेला छे. आ बधां गुहामंदिरो डॉ. फर्ग्युसन अने बर्जेसना मत प्रमाणे दिगंबर जैनसंप्रदायनां छे. जैनगुहामंदिरो, ब्राह्मणो अने बौद्धोना गुहामंदिरो करता उतरता प्रकारना अने

कारण ए ज होई शके के श्वेतांबर साधुओ वस्त्रधारी होवाथी तेओ घणा भागे जनसमाजना सहवासवाळा वास स्थानमां ज विशेष रहेता हता अने दिगंबर मुनिओ नग्नदशामां रहेता होवाथी तेमने निर्जन प्रदेशमां ज रहेवानी विशेष फरज पडती हती, तेथी तेमना रहेवा माटे तेवा प्रदेशोमां आवां लयनो–गुफामंदिरो बनाववानी आवश्यकता पडी होवी जोईए.

आ विषयमां एक वात अवश्य विचारवा जेवी छे अने ते ए छे के:— जैनशास्त्रोमां जे निर्ग्रंथोना आचारो बांधवामां आव्या छे तेमां एक एवो पण नियम छे के साधुना माटे–खास साधुने उद्देशीने–बनावेला कोइ पण स्थानमां साधुए निवास न करवो जोइए अने जो साधु तेमां जाणतो छतो निवास करे तो तेने वसतिकर्मनो दोष लागे. आ नियम

तेमनो म्होटो भाग सातमा सैकानी लगभगमा थयेलो छे. जैनगुहामंदिरोमांथी ध्यान खेंचे तेवां अने कारीगरीनी दृष्टिए उत्तम जणायेलां एवा फक्त बे ज छे जे एरुलाना आश्चर्यकारक अने प्रसिद्ध गुहामंदिरोना महान् समूहमा रहेलां छे अने इन्द्रसभा अने जगन्नाथसभाना नामे ओळखाय छे. ' केव टेम्पल्स् ऑफ इन्डीआ ' ना कर्ताओनुं कथन छे के, ज्यारे बौद्धधर्मनी उतरती कळा थवा लागी त्यारे जैनधर्म प्रकाशमां आववा लाग्यो अने बौद्धोनी देखादेखी जैनो पण पाछळथी पोताना तेवा गुहामंदिरो बनाववा लाग्या.. विगेरे. तेमनुं आ कथन भूल भरेलुं छे. कारण के आ हाथीगुफावाळा लेख अने तेना वर्णनथी स्पष्ट जणाय छे के जैनो पण शुरुआतथी ज आवां गुहामंदिरो बनावता आव्या छे. उदयगिरिनी आ गुहाओने उक्त ग्रंथकर्ताओए बौद्धधर्मनी गणी छे परंतु आ लेखना स्पष्टीकरणथी ते जैनधर्मनी छे एम उपर निश्चितरुपे कहेवाइ गयुं छे. जैन अने बौद्धधर्मनी केटलीक समानताना लिधे आवी जातनी भ्रान्तिमां घणो वधारो थयो छे. संभव छे के उपर जणाव्या शिवाय बीजां पण जैनगुहामंदिरो हशे परंतु तेमनामां कोइ विशेष चिह्न नहि जणावाथी ते बौद्धधर्मना ज मानी लेवामां आव्या होय. वीन्सेन्ट ए. स्मीथना कथन मुजब जेम जनरल कनिंगहामे स्तूपमात्रने बौद्धधर्मना मानी मथुरा विगेरेना जैनस्तूपोने पण बौद्धस्तूप लख्या छे, तेम आ गुहामंदिरोनी बाबत पण केम नहि बन्युं होय.

दिगंबर अने श्वेतांबर बंने शास्त्रोमां आवेलो छे अने ते प्रमाणे केट-लीक रीते ते पळातो पण आव्यो छे. त्यारे हवे आ लेखो तरफ जोइए छीए तो नं. २ जानो जे लेख छे तेमां तो खास स्पष्ट लखवामां आव्युं छे के खारवेलनी पटराणीए कलिंगना निर्ग्रंथ श्रमणोना निवास माटे आ लयन कराव्युं छे. ऐतिहासिक दृष्टिए आ वात अवश्य विचारवा जेवी छे. दिगंबर अने श्वेतांबर बंने संप्रदायना जैनग्रंथो जोतां जणाय छे के प्राचीनकालमां जैनमुनिओ घणा भागे निर्जन स्थानोमां ज वास करता हता. शीतकाळ अने उष्णकाळना समयमां तो तेओ वृक्षोना आश्रय नीचे रहीने पण पोताना संयमनो निर्वाह करी शकता होय पण वर्षा-काळमां तो तेम निर्वाह थइ शके नहि अने तेटला माटे तेमने आवा पार्वतीय स्थानोना आश्रयनी अपेक्षा अवश्य रहेती ज होवी जोइए. हवे आवा पार्वतीय स्थानो तो दरेक ठेकाणे कांइ नैसर्गिक रीते ज बनेला –हाथीगुफा जेवा–नहि होइ शके, ते तो कोइना ने कोइना बनावेलां ज म्होटे भागे होइ शके छे. अने आवां स्थानो केवळ श्रमणो–साधुओ शिवाय बीजा कोइने माटे बनाबवानी आवश्यकता होय नहि तेथी आवा स्थानोमां ज जो पूर्वे साधुओ वसता होय तो तो ते तेमना निमित्ते ज बनेलां होवां जोइए, अने तेमां ज साधुओ पोतानो संयम–निर्वाह करता होवा जोइए. तो पछी आवी स्थितिमां शास्त्रोक्त वसतिदोषनो परिहार शी रीते थइ शके छे ? विज्ञजनोए आ वात खास विचारवा जेवी छे.

९. आ लेख उपरथी छेल्ली जे विचारवा जेवी बाबत छे, ते मूर्ति-पूजा विषयक छे. जैन श्वेतांबर संप्रदायनी एक शाखा के जे ‘ स्थान-कवासी ’ के ‘ ढुंढिआ ’ ना नामथी ओळखाय छे, ते शाखावाळा मूर्तिपूजानो स्वीकार नथी करता. तेमनुं कथन छे के जैनधर्ममां जे मूर्ति-

पूजा छे ते पाछळथी दाखल थइ छे. महावीर देवना निर्वाण बाद ८ मा के ९ मा सैकामां तेनी शरुआत थई छे. तेनी पहेलां जैनोमां तीर्थंकरोनी मूर्तिओ मानवानो के बनाववानो प्रचार न हतो. ए विषयमां बंने संप्रदायोमां परस्पर अनेकवार क्लेशजनक चर्चाओ थई छे. खारवेलना आ लेख उपरथी ए विवादग्रस्त चर्चानो एकदम निकाल अने निर्णय थई शके छे. लेखमां आवेली हकीकत उपरथी स्पष्ट अने सत्य रीते जणाय छे के, ते वखते अने तेना पहेलां पण जैनोमां मूर्तिपूजा प्रचलित हती. आ लेखनी १२ मी पंक्तिना पाछला भाग उपरथी जणाय छे के "आदि तीर्थंकर ऋषभदेवनी मूर्ति नंदराजा उपाडी गयो हतो, ते.... पाटलिपुत्रथी राजगृह पाछी आणी जैन विजेताए नवा भव्य प्रासादमां भारे उत्सव समारंभथी तेनी स्थापना करी." (जुओ, पृष्ठ ९८–९९, श्रीयुत के. ह. ध्रुवनुं विवेचन.) आ कथनथी असंदिग्धतापूर्वक सिद्ध थाय छे के ई. स. पूर्वेना ३ जा सैकामां तेमज तेनी पण पहेलां जैनमूर्तिपूजा यथार्थ रीते प्रचलित हती. श्रीमान् ध्रुव महाशय ता. ८–२–१९१७ ना म्हारी उपरना एक खानगी पत्रमां आ बाबत खास विचारपूर्वक लखे छे के—

"खारवेलना लेखना **एक महत्व धरावता भाग** उपर आपनुं लक्ष न गयूं होय, तो हुं ते तरफ दोरवा रजा लेउं छुं. एमां एक ठेकाणे राजगृहमांथी **ऋषभदेव भगवाननी मूर्ति** नंदराजा उपाडी गयानुं लख्यूं छे. आथी ईसवी सन पूर्वे चोथा सैकामां मूर्तिपूजा जैनोमां प्रचलित हती एम सिद्ध थाय छे. आ बाबतने पुष्यमित्रना इतिहास साथे प्रत्यक्ष संबंध न होवाथी में ते लक्ष खेंचाय तेवी रीते नोंधी नथी."

हुं धारुं छुं के आ विषयमां आना करतां वधारे सबल प्रमाण

कोई होइ शके नहि अने ते मांगवानी कोइ धृष्टता पण करे नहिं. मूर्तिपूजा मानवी के न मानवी ए एक जुदी बाबत छे अने तेनो संबंध तत्त्वज्ञाननी साथे विशेष छे, परंतु अमुक समय पहेलां जैनोमां मूर्तिपूजा हती के न हती, ए ऐतिहासिक प्रश्ननुं तो निराकरण आ लेखथी एकदम थइ जाय छे अने श्रमण-भगवान् श्रीमहावीरदेवना निर्वाबाद बीजा ज सैका जेवा पुराण काळमां पण मूर्तिपूजा प्रचलित होवानुं सर्वमान्य प्रमाण आ लेखमां स्पष्ट जोवामां आवे छे.

उपसंहार.

उपोद्घातनो उपसंहार करतां जणाववुं जोइए के १७ पंक्ति जेवा आ न्हानकडा लेखनुं आटलुं लांबु पूंछडुं जोइ केटलाक वाचकोने तो आश्चर्य थशे अने केटलाकने कदाच कंटाळो पण आवे, परंतु जो तेओ ध्यानपूर्वक आ समग्र निबंधनुं अवलोकन करशे तो आशा छे के तेमने केटलीक अपूर्व वातो आमां जणाइ आवशे अने जैनधर्मना प्राचीन गौरवना संबंधमां तेमना ज्ञानमां कांइक वधारो ज थशे. जैनसमाजनो विशिष्ट भाग व्यापारी होवाथी स्वाभाविक रीते ज तेमां केळवणीनी म्होटी न्यूनता छे अने तेमां वळी आवा इतिहास जेवा उंडा अने अरसिक विषयमां तो तेनो प्रवेश ज क्यांथी होइ शके, आवुं विचारीने, लेखोक्त हकीकत बरोबर अने सविस्तर समजाय तेटला माटे आटलुं लंबाण करवानी जरुरत पडी छे.

ज्यारे आ लेखसंग्रहने छपाववानी शुरुवात करी हती त्यारे प्रथम बीजा जे आधुनिक संस्कृत लेखो छे तेमनो एक संग्रह करी प्रथम भाग तरीके बहार पाडवो अने पछी आ खंडगिरिना लेखो तथा मथुराना लेखोनो एकत्र संग्रह करी 'प्राकृतलेखविभाग' ना नामे बीजा

भाग तरीके प्रसिद्ध करवानो विचार राख्यो हतो. परंतु पाछळथी केट-लाक जनोना विचारथी तेम ज जैनलेखोमां आ लेखोनुं स्थान सौथी प्रथम होवाथी प्रथम भाग तरीके प्रथम एमने ज एकला प्रकट करवामा आव्या छे. बीजा भागमां मथुराना बधा लेखो आवशे अने त्रीजामां बाकीना बधा संस्कृत लेखोनो संग्रह थशे.

अंतमां, आ लघु प्रयत्नमां म्हने श्रीमान् दे. रा. भांडारकर एम. ए. तथा श्रीयुत् के. ह. ध्रुव बी. ए. महाशयो तरफथी जे प्रत्यक्ष के परोक्ष रीते सहायता मळी छे तेना माटे हुं तेमनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानी विरमुं छुं.

श्रावणी पूर्णिमा.
वालुकेश्वर,
मुंबई.

मुनि जिनविजय.

परिशिष्ट.

आ उपोद्घातमां अनेक ठेकाणे खंडगिरिनी नवमुनि नामनी गुहामां आवेला उद्योतकेशरिना समयना तथा शुभचंद्र अने कुलचंद्र नामना जैनश्रमणोना उलेखवाळा लेखोनुं सूचन करवामां आव्युं छे. हालमां 'एपीग्राफीआ इन्डीका' ना सन १९२९ ना अक्टोबर मासना अंकमां मी आर. डी. बेनरजी एम. ए. नो लखेलो 'उदयगिरि अने खंडगिरिनी गुहामांना शिलालेखो' ए शीर्षक एक लेख प्रकट थयो छे. ए लेखमां, हाथीगुहा लेख सिवाय, उक्त स्थळे आवेला बीजा बधा न्हाना न्हाना लेखो केटलीक नोटो साथे प्रकट करवामां आव्या छे.× ए लेखोमां उद्योतकेशरि संबंधी लेखोनो पण समावेश करवामां आव्यो छे. आ निबंध साथे ए लेखोनो खास संबंध होवाथी, मी. बेनरजीना वक्तव्य साथे आ परिशिष्टरुपे अत्र आपवामां आवे छे.

नवमुनि गुहामां उद्योतकेशरीनो शिलालेख.

ईस्वीसनना दशमा सैकानी लगभगमां एकज तारीखना लखायला नवमुनि गुहामां बे शिलालेखो छे. पहेलो लेख उद्योतकेशरिदेवना राज्यना अढारमा वर्षमां कोरेलो छे, अने ते कमानना अंदरना

× प्रस्तुत पुस्तकमां जे नं. २, ३ अने ४ ना लेखो छे ते पण मी. बेनरजीए किंचित् संशोधन साथे पुनः प्रकाशित कर्या छे. बेनरजीना संशोधनमां कांइ विशेषता न होवाथी अत्र तेमनो उल्लेख करवो उचित धार्यो नथी.

भागमां नजरे पडे छे. ए लेख सौथी पहेलां मर्हुम मी. जे. डी. एम. बेगलरनी दृष्टिए पड्यो हतो अने तेणे कनिंगहामना भाषांतर साथे प्रकट कर्यो हतो (Arch. Surv. Rep., Vol. XIII, P 85 Note) उद्योतकेशरिनो हजु सुधी जाणवामां आवेलो बीजो एक लांबो शिलालेख प्रिन्सेपे प्रकट कीधो छे (Journ. Beng. As Soc Vol VII, pp. 558 ff.) पण ते अत्यारे उपलब्ध थतो नथी. मी. मनमोहन चक्रवर्तीए पण ए नवमुनिगुहाना लेखने वांचवानो प्रयत्न कर्यो हतो. ए त्रण पंक्तिनो छे अने स्पष्ट रीते कोरेलो छे.

मूल-लेख.

1 ओं श्रीमद् उद्योतकेशरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत १८

2 श्रीआर्यसंघप्रतिबद्धग्रहकुलविनिर्गत देशीगण आचार्य-श्रीकुलचन्द्र-

3 भट्टारकस्य शिष्य सुभचन्द्रस्य ।

भाषांतरः—श्रीमद् उद्योतकेशरिदेवना वृद्धि पामता विजय राज्यना संवत् १८ मां श्रीआर्यसंघना ग्रहकुलमांथी निकळेला देशीगणना आचार्य कुलचन्द्र भट्टारकना शिष्य सुभचंद्रनी (कृति ?).

नवमुनि गुहामां बीजो लेख.

आ लेख बे भागमां व्हेंचायलो छे, अने गुहानी अंदरनी बे ओरडीओ वच्चेनी भींत उपर कोरेलो छे. एनी लीपी उपरना लेख जेवी ज छे. एना बे भाग छे—पहेलो भाग अपूर्ण छे, कारण के एमां लखेलुं वाक्य अधुरुं छे.

' श्रीधर छात्र ' एटले शिष्य श्रीधर.

बीजो भाग त्रण लींटीनो छे अने ते आ प्रमाणे छेः—

1 ओं श्रीआचार्य कुलचन्द्रस्य तस्य

2 शिष्य खल्ल सुभचन्द्रस्य

3 छात्र विजो

भाषान्तरः—श्रीआचार्य कुलचन्द्रना शिष्य खल्ल (?) सुभचंद्रना शिष्य विजो (विद्या अथवा विद्यनी कृति.)

ललितेन्दु गुहामां उद्योतकेशरिनो बीजो लेख.

आ ललितेन्दु अथवा तो सिंहद्वारना नामथी ओळखाती गुहामां आवेलो शिलालेख ई. स. १२१२ ना ऑक्टोबर महिनामां ' आर्किऑलॉजीकल सर्वे'ना फोटोग्राफर मी. एस. गंगुलीए प्रथम शोधी काढ्यो हतो. आ लेख गुहानी पाछळनी भींत उपर कोरेलो छे, अने गुहाना भोंयतळीयाथी लगभग त्रीश चाळीश फीट उंचे, दिगंबर जैनमूर्तिओना समूह उपर आवेलो छे. एनी बहु सारी संभाळ लेवायली लागती नथी. लेख पांच पंक्तिमां कोतरेलो छे अने लीपी उपरना बे लेखो जेवी ज छे. लेखनी भाषा अशुद्ध संस्कृत छे.

मूल लेख.

1 ओं श्रीउद्योतकेशरिविजयराज्य संवत् ५.

2 श्रीकुमारपर्व्वत (1) स्थाने जीर्णवापि (2) जीर्ण इशाण (3)

3 उद्योतित (4) तस्मिन् स्थाने चतुर्विंशति तीर्थ [ङ्]कर

4 स्थापित प्रतिष्ठा[का]ले इ[रि] ओप (5) जसनन्दिक

5 क्ता (?) दा (?) ति(?)द्रथा(?)श्रीपार्श्वनाथस्य कर्मखयः

टिप्पण.

(1) बीजी लाइन उपरथी जणाय छे के खंडगिरिनुं प्राचीन नाम ' कुमार पर्वत ' छे. खारवेलनो हाथीगुहालेख उदयगिरिनुं

प्राचीन नाम ' कुमारी पर्वत ' सूचवे छे. ते बंने टेकरीओ ई. स. ना दशमा अगियारमा सैका सुधी ' कुमार-कुमारी पर्वत ' तरीके जाणीतां होय एम लागे छे.

(2) ' वापि ' शब्द टेकरी उपरना खडकोमां कोरी काढेलां न्हानां न्हानां संख्याबंध कुंडोने सूचवे छे.

(3) बीजी पंक्तिनो छेल्लो शब्द 'इसण' अथवा तो ' ईशान ' लागे छे. आ शब्द विक्रम संवत् १०८३ मां थयेल महीपालना सारनाथना शिलालेखमां जोवामां आवे छे. आ शिवना अनेक नामोमानुं एक नाम छे, एम डॉ. वॉगेल कहे छे; (Arch. surv. of India, Annual Report, 1905-6, P 98, Note I.) पण उपरोक्त शिलालेखमां तेनो संबंध-अर्थ तथा उपयोग विचारतां ते शब्दनो अर्थ मंदिर थतो होय तेम लागे छे.

(4) ' उद्योतित ' शब्दनो साधारण अर्थ प्रकाशित थाय छे. पण अहिं तीर्थंकरनां मंदिरो अने कुवाओ सुधारवामां-समरावबामां आव्या हता एवुं सूचन आ शब्दथी थाय छे.

(5) चोथी पंक्तिनो छेल्लो भाग अने पांचमी पंक्तिना प्रारंभना शब्दो बील्कुल समजाता नथी.

भाषान्तर.

श्रीमद् उद्योतकेशरिना विजयि राज्यना पांचमा वर्षमां श्रीकुमारपर्वत उपर आवेलां जीर्ण मंदिरो तथा जीर्ण वापिओ प्रकाशित करवामां आवी हती, अने ते जग्याए चोवीस तीर्थंकरनी मूर्तिओ बेसाडवामां आवी हती. प्रतिष्ठाना समये.........................
श्रीपार्श्वनाथनी जग्यामां (मंदिरमां ?)..........................
जसनंदी.

प्राकृतलेखविभाग।
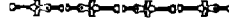
*कटक नजीक आवेली उदयगिरिनी टेकरी उपरना हाथीगुफा तथा बीजा त्रण लेखो।
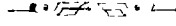
अशोकना वखत पछी पूर्व हिंदुस्ताननो इतिहास तथा तेनी भाषा विषे माहिति मेळववामां हाथीगुम्फा लेख घणोज उपयोगी छे. प्रथम तेने इ. स. १८३० मां मी. स्टर्लींगे (Stirling) कर्नल मेकेन्झी (Mackenzie) नी बनावेली अपूर्ण नकल उपरथी प्रकाशित कर्यो.+ मेजर कीट्टु (Kittoe) ए इ. स. १८३७ मा नजरे जोइने तेनी नकल करी, अने आ नकल उपरथी प्रीन्सेपे (Prinsep) भाषांतर सह

---

* Actes Du Sixieme Congres International Des Orientalistes, tenu en 1885 a Leide. नामना पुस्तकना ३ भागमां (पृष्ट १३३ थी १७९ सुधीमां) प्रख्यात विद्वान् पंडित भगवानलाल इंद्रजीना THI HATHIGUMPHA AND THREE INSCRIPTONS, IN THE UDAYAGIRI CAVES NEAR CUTTACK नामना इंग्रेजी निबंधनो आ संपूर्ण गुजराती अनुवाद छे—**संग्राहक.**

+ एशियाटीक रीसर्चीस, पु. १५. (Asiatic Reserches, XV.)

प्रसिद्ध कर्यो. ते वखते आ विषयनो प्रारंभज हतो तेथी प्रथमना भाषांतरमां केटलीक चूको थइ होय तो तेमां कांइ आश्चर्य पामवा जेवुं नथी. पण जाणवा जेवुं मात्र ए छे के जे राजाना वखतमां आ लेख थएलो छे ते राजानुं नाम प्रीन्सेप वांची शक्या नहि अने हजु पण आ भूल कोइए सुधारी नथी.

इ. स. १८७७ मां जनरल कनींगहामे (General Cunningham) कॉरपस इंडीस्क्रीप्श्यॉनम इंडीकॅरम (Corpus Inscriptionum Indicarum) ना पु. १ मां आ लेखनी नकल आपी छे, पण मेजर कीट्टनी नकल करतां आ नकलथी कांइ वधारे फायदो थाय तेम नथी. त्यारबाद डॉक्टर राजेंद्रलाल मीत्रे पोताना 'ॲन्टीक्वीटीझ ऑफ ओरिस्सा ' नामक पुस्तकमां तेनुं भाषांतर बहार पाड्युं. आ भाषांतर विषे घणी आशाओ राखवामां आवी हती; पण कांइ अजवाळु पाडवाने बदले ते भाषांतरथी गुंचवाडो वध्यो. आ पुस्तक साथे जे नकल आपवामां आवी छे ते इ. स. १८६६ मां डॉक्टर भाउ दाजीने माटे में जाते प्रत्यक्ष जोइने तैयार करेली नकल उपरथी तथा कलकत्ता स्कुल ऑफ आर्ट्सना मी. लॉके (Locke) जे प्लास्टर फोटोग्राफ लीधेलो अने जे जनरल कनींगहामे मारा तरफ मोकली आप्यो ते उपरथी तैयार करेली छे.

आ लेखनुं नाम, जे गुहा उपर ते कोतरेलो छे ते गुहाना नाम उपरथी पडेलुं छे. त्यांनी जमीन उपर पडेला केटलाक भांगेला कटका उपरथी एम जणाय छे के आ गुहा कोइ वखते भांगेली हशे अने त्यारबाद तेनो पुनरुद्धार करी फरी बंधाववामां आवी हशे. हाथीगुम्फा ए नाम शा कारणथी पड्युं हशे ते जाणवुं अशक्य छे. कदाच एम

होइ शके के आ गुहानी आगळ जे खडक आवेलो छे तेना उपर हाथीनी आकृति कोतरेली होय.§

आ लेख शिला उपर कोतरेलो छे. आ शिला सपाट नहीं होतां अंदर खाडापडती छे. लेख १७ लीटीमां होई ८४ चोरसफुटमां छे. आ शिला उपर लेख कोतरवा माटे सपाटी साफ करेली होय तेम लागतुं नथी पण अक्षरो मोटा अने उंडा कोतरेला छे. समयनी असर आना उपर पण थएली छे. प्रथमनी छ लीटीओ सारी स्थितिमां छे. अने छेल्ली चार पंक्तिओ मध्यम अवस्थामां छे. आ बेनी वच्चेनी जमीन घणीज खराब थइ गइ छे. केटलोक भाग तद्दन घसाइ गयो छे अने केटलेक ठेकाणे छूटा अक्षरो के अक्षरसमूहो नजरे पडे छे. खास करीने आ लेखनो डाबो भाग बहुज जीर्ण थइ गयो छे अने ते तरफना छेल्ला अक्षरो बिलकुल जता रह्या छे.

आ लेखनी बन्ने बाजुए बब्बे चिह्नो आपेलां छे. (जुओ प्लेट १†). एक चिह्न लेखनी पहेली बे लीटीओनी डाबी बाजुए छे; अने बीजुं चिह्न एज बाजुए पांचमी अने छट्ठी लीटीनी शरुआतमां छे. त्रीजुं चिह्न लेखनी जमणी बाजुए पहेली अने बीजी लीटीना छेडे छे, अने चोथुं चिह्न सत्तरमी लीटीना अंतमां छे अने अहीं लेखनी समाप्ति थाय छे. प्रथमनां त्रण चिह्नो पश्चिम हिंदना गुहालेखो उपर जोवामां आवे छे. दाखला तरीके पहेलुं चिह्न जुन्नर (Junnar) ना बीजा लेखमां, कार्ले (Karle) ना पहेला तथा भाजा (Bhaja) ना

---

§ मुंबइनी सामे आवेला हाथीबेटनुं नाम पथ्थरमां कोतरेली एक मोटी आकृति उपरथी पडेलुं छे. आना कटका विक्टोरिआ म्युझिअममां छे. P. P.

† आ प्लेटो मूल पुस्तकमां आपेली छे । अत्र आपी शकाणी नथी—**संग्राहक.**

त्रीजा लेखमां वपरायलुं छे.[१] केटलीक उदयगिरिनी गुफाओना द्वारनी कमानो उपरनां कोतरकामो उपर पण ते काढेलुं छे.

जुनागढनी एक गुहाना द्वार उपर शुभ शकुनवाळी घणी चीजो काढेली छे. स्वस्तिक, दर्पण, कलश, घडीआळनी शीशी जेवी नेतरनी खुरशी, भद्रासन, बे नानां मत्स्यो, फुलनी एक माळा, अने आंकडो–आ बधामां आ चिह्न जोवामां आवे छे सांचीना तोरण उपरनी त्रीजी आकृति उपर पण ए आवेलुं छे. तेमज गळानां घरेणांमां पण ते घणीवार जोवामां आवे छे.

आ चिह्ननो अर्थ शो छे ते जणातुं नथी. पण जाणवुं जोइए के पहेलांना बौद्धो आ चिह्नने सारुं गणता हता. त्यार पछीना बौद्धो तेम गणता होय एम लागतुं नथी. कारणके इलुरा, अजन्टा, नाशिक अने कान्हेरिमांनां बौद्ध कामो उपर ते जोवामां आवतुं नथी.

बीजुं चिह्न ' स्वस्तिक ' छे जेने विजयदर्शक गणवामा आवे छे अने जेनो अर्थ संस्कृत लेखोमां प्रथम वपराता ' स्वस्ति ' शब्दना जेवोज छे. आ चिह्न दुनियाना घणा भाग उपर वपराय छे अने एना अर्थ विषे विद्वानोना घणा जुदा जुदा मतो छे.[२] तेनो गमे ते अर्थ थतो होय पण एटलुं तो नक्की के जुदा जुदा धर्मना लोकोए ते वापरेलुं छे तेथी एम धारी शकाय के ए लोको पोतपोतानां कारणोने लीधे तेने शुभ गणे छे.

---

१ आर्कीऑलॉजीकल सर्व्हे ऑफ वेस्टर्न इंडिआ, सॅपरेट पेम्फलेट १०, पृ. २३, २८, ४२.

२ नुमीस्मेटीक क्रॉनीकल, न्यु सीरीझ पु. २०, पृ. १८–४८; इंडीअन ॲन्टी क्वेरी, पु. ९; पृ. ६५, ६७, १३५; इंडीअन ॲन्टी क्वेरी, पु. १०, पृ. १९९; कनींगहामनी भील्सा टोपूस, ३५६ नोट.

सौथी पहेलां आवां चिह्नो अशोकना जौगड (Jaugada) लेख उपर जोवामां आवे छे ज्यां त्रीजुं चिन्ह पण जोडेलुं छे. त्यारबाद केटलीक पश्चिम हिंदुस्ताननी गुहाना लेखोमां ए दृष्टिगोचर थाय छे. केटलीक वखते ते आरंभमां के, अंतमां अगर बन्ने ठेकाणे पण जोवामां आवे छे.[1] आ चिह्न हजु पण हिंदु तेमज जैनोमां शुभ गणाय छे अने लग्न प्रसंगे अगर एवा बीजा कोई शुभ प्रसंगे कपडां, वासण तथा फळो उपर काढवामा आवे छे. नाना बाळकोने प्रथम मुंडन कराव्या पछी माथा उपर आ चिन्ह कुंकुमथी काढवामां आवे छे. लग्न थया पछी पहेला शुभ दीवसे गुजरात तथा कच्छना लोको जमीन उपर रातुं वर्तुल दोरे छे अने तेमा स्वस्तिक चिन्ह काढे छे तेने "घौंरी स्वस्तिक" कहे छे.[2] गायना छाणथी लीपेली जमीन उपर कुलदेव बेसाडीने तेमनी आगळ आ चिन्ह काढे छे जेने "साथीओ" कहे छे. आ शब्द संस्कृत 'स्वस्तिक' ना प्राकृत 'सत्थिओ' उपरथी थयो छे. हालना जैनो पण एने 'साथीओ' कहे छे. तेओनो मत एवो छे के सातमा तीर्थंकर सुपार्श्वनाथनुं ए लांछन छे, तेमज जैनोना आठ शुभ लाछनोमांनो प्रथम ए छे. खरतरगच्छना एक विद्वान यति प्रेमचंद्रना कहेवा प्रमाणे जैनो तेने सिद्धनी आकृति तरीके गणे छे. जैनो धारे छे के दरेक प्राणी एक जन्ममां करेलां पोतानां मानसकर्मो प्रमाणे बीजा जन्ममां चारमांथी एक स्थितिने पामे छे. ते देव थाय छे, अगर नर्के जाय छे; अगर क्षुद्र प्राणीओमां या मनुष्य जातिमां जन्म ले छे. पण सिद्धने आमानुं कांइ पण थतुं नथी, कारण

---

१ जुन्नर लेखोमा शरुआतमा ५, ६, २०, ३२, ३४; कार्ले लेखोमा ३, अने जुन्नर लेखोमा २२, २९ अने ३१, ३३; आरंभ अने अंत–कार्ले लेख २ अने जुन्नर लेखो १८ ने ३०.

२ आ शब्द 'गोमयलिप्तस्वस्तिक संस्कृत शब्द उपरथी थएलो छे तेनो अर्थ 'जमीन उपर लींपेलो स्वस्तिक' थाय छे.

के आ चार अवस्थानुं मुख्य कारण जे कर्म छे ते तेमने लागता नथी अने तेथी ते मुक्तात्मा कहेवाय छे. स्वस्तिकमां आ प्रमाणे सिद्धनी आकृति समाएली छे. जे मध्यबिंदुमांथी चार रस्ता नीकळे छे ते जीव छे अने जे चार रस्ता छे ते जींदगीनी चार अवस्था छे. पण सिद्ध आ चार अवस्थाथी मुक्त होवाथी चारे रस्ताओने पछीथी जे वाळेला छे ते एम जणावे छे के आ चार अवस्था तेमने माटे नथी. हुं एम नथी कहेतो के आ ए स्वस्तिकनुं मूळ छे. बौद्धो के जेमनां धर्मतत्त्वो जैनोनां जेवांज छे ते पण स्वस्तिकनो आवो अर्थ करता होय ए शक्य छे. जो एम होय तो बौद्ध लेखोना आरंभमां **सिद्धम्** शब्द वपराय छे तेने बदले आ स्वस्तिक पण वपराय छे. दाखला तरीके, उषवदातना नाशिकना नं. १० ना लेखमा आ स्वस्तिक **सिद्धम्** शब्दनी पछी तरतज मूकेलो छे, आवी रीते वपरायाथी जैनोना आवा अर्थने पुष्टि मळे छे.

त्रीजुं चिह्न अशोकना जौगड लेखमांना ( )[†] चिह्नना जेवुंज छे. ए तारस (Taurus) ना ग्रीक चिह्नना जेवुं छे. पहेला बे चिह्नोनी माफक आ चिह्न लेखोना आरंभमां तथा अंतमां तथा कोइक वखत शोभाने माटे जुदाज आकारमां जोवामां आवे छे. बौद्ध लेखो उपरथी एम जणाय छे के पहेला बे चिह्नो करतां आ चिह्न विषे तेमनी मान्यता ओछी होय तेम जणातुं नथी. सांची लेखोमां बोधीवृक्षनी नीचे वेदि उपर ते मुकेलुं छे. जो ते पूजनीय न होय तो ते आवी जग्याए होइ शके नहि. वळी आ चिह्न घरेणांमां तथा जुना बौद्ध सिक्काओमां पण जोवामां आवे छे. कान्हेरी नजीक पदण टेकरी उपर बीजां चिह्नोमां आ

---

† मूल पुस्तकमां आ तथा हवे पछी आवनारी दरेक आकृतिओ आपेली छे परंतु अत्रे जे आपी शकाणी नथी तेना ठेकाणे ( ) आवा कौंसमां जग्या खाली राखेली छे.—**संग्राहक** ।

चिह्न पण ' नन्दिपदम् ' एवा नाम साथे जोवामां आवे छे;[1] जे उपरथी जणाय छे के बौद्धो तेने ' वृषभ-लांछन ' कहे छे. वैदिक धर्ममां वृषभने पवित्र गणेलो छे; अने जो आवोज मत बौद्धोमां प्रचलित होय तो तेमणे पण तेने पवित्र गणेलो होवो जोइए.

चोथुं चिह्न वेदि अगर बेटक उपर मोनोग्राम (Monogram) जेवुं लागे छे (y + t + e ?). उदयगिरिनी व्याघ्र गुहामांना एक लेखना आरंभमां आवुं चिह्न छे. फेर मात्र एटलोज छे के ज्यारे आमां कापा डाबी बाजुए छे त्यारे व्याघ्रगुहाना चिह्नमां जमणी बाजुए छे. उदयगिरिनी वैकुंठ गुहामां एक चिह्न छे जेमां अने आमां फेर एटलो छे के एमां नीचे वेदि नथी तथा डाबी बाजुए बे कापाने बदले बन्ने बाजुए एक एक छे. एक बौद्ध सिक्कामां पण आ चिह्नना जेवुं एक चिह्न छे.[2]

जे लिपिमां आ लेख लखेलो छे ते लिपि अशोकथी अर्वाचीन छे अने पश्चिम हिंदना नानाघाट लेखनी लिपिने मळती छे. अशोकना वखतनी लिपि अने आ लिपिमां मुख्य फेर ए छे के ज्यारे अशोकना वखतना **क** ने आडी तथा उभी लींटीओ सरखी छे (+) त्यारे अहींआ आडी करता उभी लींटी लांबी छे (†); ते वखतनो **ग** खुणा पडतो (∧) हतो त्यारे हालनो कमान जेवो (∩); ते वखतनां **घ** (⊔), **प** (⊔), **ल** (-J) अने **ह** (⊔)ना नीचेना भागो गोळाकार हता अने हालमां सपाट छे (⊔, ⊔, -⅃, ⊔), **म** (४) अने **व** (⍝) नी नीचेना आकारो बराबर गोळ हता त्यारे हाल त्रिकोणाकारे छे (ᛁ);

---

१ जर्नल बॉम्बे ब्रॅन्च रॉयल एशियाटीक सोसाइटी, पु. १५, पृ. ३२०.

२ वीलसन्स ॲरीआना ॲन्टीका, प्लेट १५, आकृति ३२.

त नां नीचेनां बे पांखडां खुणावाळां हतां (⅄) अने हाल ते गोळाकार छे ( ). ते वखते इकारना पांखडां खुणाकारे हतां ( ), हाल ते प्रमाणे नहि होतां ते उंचां जाय छे ( ). आ प्रमाणे कारणो छे ते उपरथी आ लिपि अशोकथी अर्वाचीन छे एम प्रतिपादन थाय छे.

आ आखो लेख गद्यमां छे. तेनी भाषा प्राकृत छे अने अशोकनां लाट लेखोथी भिन्न छे पण पश्चिम हिंदना गुहा लेखोनी जुनी महाराष्ट्री प्राकृतना जेवी छे.

आरंभमां अर्हतो अने सिद्धोने नमस्कार कर्यो छे. अने आ उपरथी लेख बनावनारनी उंडी धार्मिक श्रद्धा आपणने जणाइ आवे छे. जैनोना मुख्य सूत्रनो ए भाग होय तेम जणाय छे जेने 'नमोक्कार' अगर 'नोकार' कहेवामां आवे छे अने जेनो वारंवार तेओ जप करे छे तथा जे तेमनां सूत्रोनां आरंभमां घणीवार जोवामां आवे छे.[1] ते सूत्र अने आ नमस्कारमां फेर ए छे के आमां फकत अर्हत 'अने' सिद्धनाज-बेनांज नाम आवे छे, त्यारे सूत्रमां 'आचार्य', 'उपाध्याय', अने 'साधु' ए त्रण नामो वधारे छे. लेखमां आ नामो मूकी दीधां छे तेनुं कारण ए छे के पहेला बेनी पेठे आ त्रण बहु जरुरनां नथी. आ लेखना नमस्कारनी समजुती विषेनी पुष्टिमां जाणवुं जोइए के उदयगिरिनी माणेकपुर गुहाना ३ जा लेखमां एम कहेलुं छे के ए गुहा " कलिंगना श्रमणो अर्हन्त प्रसादानम् " ने माटे बनाववामा आवी छे. अर्हन्तो उपर आ प्रमाणे धार्मिक श्रद्धा राखवी ए जैनोनी खासीयत छे. आ गुहाओमां कोई पण ठेकाणे शाक्य-भिक्षु अगर एवो बौद्ध शब्द खास करीने वापरेलो नथी.

---

१ सूत्र आवो छेः—**नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहुणं ।** तेनो अर्थः—अर्हन्तोने नमस्कार, सिद्धोने, आचार्योने, उपाध्यायोने, अने विश्वना साधुओने नमस्कार.

उदयगिरिनी गुहाओनां कोतरकामोमां एवुं कांइ खास नथी के जेथी आपणे नक्की करी शकीए के ए जैन अगर बौद्ध गुहाओ छे. गुहाओमां एके जुनी प्रतिमा नथी. कोतरकामोनी पूजनीय वस्तुओमां मात्र वृक्षो छे तथा माणेकपुर गुहामाना नीचेना भागमां जे भांगेला 'स्तूप' जेवुं लागे छे तेनी आगळ नमस्कार करती माणसोनी आकृतिओ छे. वळी आ गुहाओनी टेकरीनी टोचे एक जुना 'स्तूप' नो पायो छे अने आ स्तूपनी आजुबाजुना कठेराना सळीआनां छिद्रो हजु पण जोवामां आवे छे. परंतु आ उपरथीज मात्र आपणा प्रश्नो जवाब नीकळी शके नहि; कारण के शरुआतनो जैनधर्म बौद्धधर्म जेवोज हतो जेथी वृक्ष तथा स्तूपोनी पूजा तेमनामां भिन्न नथी; ज्यां ज्यां महावीर गया ते ते गामना पादरना झाड तळे बेठेला महावीरनां वर्णनो केटलांक सूत्रोमां छे. बौद्धोनी पेठे जैनतीर्थंकरोने पोतपोतानुं बोधिवृक्ष छे. महावीरनुं बोधिवृक्ष वड छे अने उदयगिरिनी जयविजय गुहामां कोतरेलुं बोधिवृक्ष पण वड छे.[1] हाल पण जैनो शत्रुंजय टेकरी उपर रायण वृक्षनी पूजा करे छे, (मिमुसोप्स कौकी (Mimusops kauki;) संस्कृत-**राजातन** अगर **राजादन,** पाली-**राजायतन**) जे ऋषभदेवनुं बोधिद्रुम छे अने गिरनार उपर बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथनुं बोधिद्रुम आंबो छे के जेनी पण तेओ पूजा करे छे.

स्तूप-पूजा पहेलांना जैनोमां पण प्रचलित हती. मथुरामांथी मने मळेला एक लेखवाळा कोतरकामनी वच्चे एक स्तूप छे. तेनी आजुबाजुए कठेरो छे. तेने एक द्वार छे अने स्तूप उपरज कोतरेली बे कठेरानी हारो छे; एक मध्यमां गोळ तथा बीजी जरा उंचे छे. स्तूपनी बंन्ने

---

१ ॲन्टीक्वीटीझ ऑफ ओरीस्सा पु. २, प्लेट १९, आकृति १. लेखक, डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र.

बाजुए एक नाचती स्त्री छे अने आ स्त्रीनी पेलीपार एक स्तंभ छे. जमणी बाजुना स्तंभने सिंह छे अने डाबी बाजुना स्तंभ उपर ' धर्मचक्र ' काढेलुं छे. उंचे साधुओ तथा स्तूप तरफ दोडता आवता होय तेवा किन्नरो छे. किन्नरोने रुवांटावाळुं शरीर तथा मनुष्यना जेवुं मुख छे तथा दिगम्बर जैनोनी माफक आ साधुओ नग्न छे.

आ स्तूप आकारमां तथा देखावमां हजु सुधी मळेलां बौद्ध स्तूपोने एटलुं बधुं मळतुं आवे छे के जो आ लेख न होत तो तेने बौद्ध स्तूप तरीकेज गणवामां आवत. बे कठेरानी हारोनी वच्चेनो छ लीटीओ वाळो लेख जैनोनो छे एम स्पष्टज छे. लेखना अक्षरो इ. स. पूर्वे ५० ना होय तेम लागे छे; भाषा प्राकृत छे, सरल नथी.

लेखनी नकल.

(१) नमो अरहतो वधमानस दंदाये गणिका
(२) ये लेणशोभिकाये धितु शमणस निकाये
(३) नादाये गणिकाये वासये आरहतादेवकुले
(४) आयगसभाप्रपाशिलापटा प्रतिस्ठापितं निगमा
(५) ना अरहतायतने सह मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण
(६) सविन च परिजनेन अरहतपुजाये

(आ लेखनुं संस्कृत भाषांतर.)

(१) नमोऽर्हते वर्धमानाय दण्डाया गणिका
(२) या लयनशोभयित्र्या दुहितुः श्रमणस्य निकाये
(३) नादाया गणिकाया वासाय अर्हतो देवकुले
(४) आर्यकसभा प्रपा शिलापट्टः प्रतिष्ठापितः नैगमा
(५) नां अर्हतायतने सह मात्रा भगिन्या दुहित्रा पुत्रेण
(६) सर्वेण च परिजनेन अर्हतपूजायै

गुजराती भाषांतर.

अर्हन्त वर्द्धमानने नमस्कार. गणिका दंडानी पुत्री गणिका नन्दाए वेपारीओना आर्हतदेवालयमां[1] श्रमणसमूहने[2] रहेवा माटे तथा अर्हन्तनी पूजा माटे एक नानुं आर्हत–देवालय, आचार्यो माटे बेठको, एक होज (पाणीनो) अने एक शिलापट्ट, (देवालयनुं पुण्य) मा, ब्हेन, पुत्री, पुत्र, अने सगांओ साथे (भोगववाने) कराव्यां.

वर्द्धमान अर्हन्त २४ मा तीर्थंकर महावीर छे. बौद्धोनी पेठे जैनो पण तीर्थंकरोना हाडकां विगेरेने पूजता हता. तेमना ग्रंथोमां केटलेक ठेकाणे कहेलुं छे के मृत्युवश थया पछी तीर्थंकरोना शरीरने अग्निसंस्कार देवो आपे छे तथा तेमना हाडकां विगेरेने तेओ पूजामाटे स्वर्गमां लइ जाय छे. हालनां जैनदेवालयोमां स्तूप अगर तीर्थंकरोनां हाडकांनी पूजा जोवामां आवती नथी; पण बेशक एटलुं तो नक्की के आ प्रमाणे एक वखत हतुं अने ते एटले सुधी के तेरमा सैकामां मथुरामां जैनो एक स्तूपने तीर्थंकर सुपार्श्वनुं स्तूप छे एम गणीने पूजता हता[3]. हालमां खरतरगच्छना जैन साधुओ ' थापना ' नामनो पांच दांतवाळो एक चंदननो प्यालो पूजा माटे वापरे छे अने आ तीर्थंकरोनां जडबांनी नकल छे. तेज प्रमाणे साध्वीओ जे शंखने थापना तरीके पूजामां वापरे छे तेने तेओ महावीर स्वामीना घुंटणनुं हाडकुं गणे छे.*

---

१ मूळमां ' आयतन ' शब्द छे जेनो अर्थ मोटुं देवालय थाय छे. गणिकानुं देवालय मोटा देवालयनी पासे बाध्युं हशे अने ते नानुं हशे.

२ मूळमां ' निकाये ' छे. पण जो ' निकायस ' न वांचवामां आवे तो लेखनो सारो अर्थ नीकळी शकतो नथी.

३ जूओ—जिनप्रभसूरीनुं (विविध) ' तीर्थकल्प '.

* हालमां, तपागच्छमा जे स्थापनाचार्य रखाय छे तेने उद्देशीने आ उल्लेख छे,

आ उपरथी प्रतिपादन थाय छे के स्तूपनी तथा वृक्षनी पूजा पहेलां जैनोमां प्रचलित हती. उदयगिरिनी गुहाओमां बौद्धोनी एके प्रतिमा नथी तेमज अर्वाचीन बौद्धोए पश्चिम हिंदनी बौद्ध गुहाओमां बेसाडेली प्रतिमाओमांनी पण एके नथी. उलटुं, केटलीक अर्वाचीन गुहाओमां तीर्थंकरोनी जैनप्रतिमा तथा यक्ष अने देवोनी प्रतिमाओ कोतरेली छे अने उदयगिरिनो बीजो भाग जेने खंडगिरि कहे छे तेना उपर हजु पण दिगम्बर जैनोनां देवालयो छे. आ सर्व उपरथी एम जणाय छे के तेनो बौद्धधर्म करतां जैनधर्म साथे वधारे संबंध छे[२]

अर्हन्तो तथा सिद्धोने नमस्कार कर्या बाद लेखमां खारवेल राजानो जन्मथी मांडीने ३८ वर्ष सुधीनो वृत्तांत आपेलो छे. तेने चेत अगर चैत्रराजवंशनो विस्तार करनार कहेवामां आव्यो छे; अने आ विशे-षण ते आ वंशनो छे एटलुं जणाववा माटे ज मात्र वापरवामां आव्युं छे. तेथी एम स्पष्ट रीते अनुमान थइ शके के खारवेल राजा चैत्रवंशनो हतो. आ राजाना बीजां विशेषणो 'वेर' 'महाराज' अने 'महा-मेघवाहन' तथा 'कलिंगाधिपति' छे. 'वेर' नो शो अर्थ छे ए संतोषकारक रीते समजावी शकाय तेम नथी; पण हुं धारुं छे के तेने बदले 'वीर' जोईए. महाराज शब्द मात्र तेनी मोटाइ दर्शाववानेज वाप-रवामां आव्यो छे 'महामेघवाहन' नो अर्थ 'जेनुं वाहन मोटो मेघ छे, एवो छे. जे उपरथी एम जणाय छे के एना राज्यना जे हाथीओ उपर आ राजा बेसतो तेमनुं नाम 'महामेघ' हशे. 'कलिंगाधिपति' उप-

---

परंतु आना विषयमां पंडितजीनी जे कल्पना छे ते वास्तविक छे के केम ते खास विचारवा जेवी छे. कल्पना रमणीय छे.—**संग्राहक.**

२ सरखावो—जनरल कनींगहामनुं, आर्कीओ० सर्व्हे० पु १३, पृ. ८४ तथा कॉरपस इंस्क्रीप्श्यॉनम इंडीकॅरम, पृ. २७.

रथी एम सूचित थाय छे के ते कलिंगनो राजा हतो. राज्यगादी उपर बेठा पहेलानां तेनां चोवीस वर्षनो हेवाल आ प्रमाणे छे. प्रथमनां पंदर वर्षो रमत गमतमां गयां; बाकीनां नव वर्षमां ते लखवानुं, चित्रकाम, हिसाब अने कायदाकानुनो शीख्यो तथा युवराजपद भोगवतो हतो. आ उपरथी एम जणाय छे के युवराजनी स्थितिमांज तेणे आ अभ्यास कर्यो. ज्यारे ते चोवीस वर्षनो थयो त्यारे ते तख्तनशीन थयो त्यारबाद बीजां १३ वर्षमां तेणे करेलां उपयोगी कामो विषे लेखमां वर्णन आवे छेः-

प्रथम वर्षमां तेणे दरवाजा, किल्लो तथा महेलो जे जीर्ण थयां हतां ते तथा कलिंग शहेर तेमज तेने फरतो कोट समराव्यो. तेणे पाणीना होज तथा कुवा बंधाव्या, बधी जातनां वाहनो राख्यां अने तेना नगरमां ३५०,००० माणसो हतां.[१]

बीजा वर्षमां (राजा) सातकनी (सं. शातकर्णी)[२] ए तेना (खारवेलना हुमला) थी पश्चिम भागने बचाववा माटे (खंडणी तरीके) घोडा, हाथीओ, माणसो, रथ तथा पुष्कळ धन मोकल्युं. तेज वर्षमां तेणे मसीक (?) शहेर कुसुम्ब (?) क्षत्रीओनी मददथी लीधुं.

त्रीजा वर्षमां ते गीत विद्या शिख्यो अने नाच, गायन, अने वाजींत्रो तथा आनंदोत्सवोथी लोकोने तेणे आनंद पमाड्यो.

---

१ आ घणी मोटी संख्या छे. आ मात्र अनुमान हशे, कारणके ते वखतमां सेन्सस नहोती. मात्र तेनो अर्थ एमज छे के शहेर घणुं भव्य हतुं.

२ आ लेखना अक्षरो नानाघाट लेखना अक्षरो जेवा छे तेथी हुं धारुं छुं के आ सातकनी ते कदाच नानाघाट बावलामांना चोथा बावलानो श्री सातकनी होय. सरखावो—बॉम्बे गेझेटीअर, पु. १६, नाशीक गुहा उपरनी टीका.

चोथा वर्षनो हेवाल तुटी गयो छे अने संबंध पण बेसतो नथी. एटलुं तो जाणी शकाय छे के धर्मकूट टेकरी उपरनुं एक जुनुं चैत्य तेणे समराव्युं अने तेमां छत्र तथा कलशो आणी आप्या अने तेनी पूजा करी.[१] ते कहे छे के राष्ट्रीक अने भोजक, तेना खंडीआ राजा-ओमांना त्रिरत्नमां श्रद्धा उत्पन्न करवा माटे तेणे आ प्रमाणे कर्युं हतुं.

पांचमुं वर्ष दाननुं छे. आ वर्षमां तेणे नन्दराजनो त्रिवार्षिक सत्र पुनः शरु कर्यो अने पाणीनी सवड कर्यानुं देखाय छे. (Water Works Scheme.) पण आ भाग भांगी गयो छे तेथी अर्थ शंकायुक्त छे.

छट्ठा वर्षनो अहेवाल घणो खरो जतो रह्यो छे पण आ वर्षमां तेणे लोकोपयोगी लाखो कामो कर्यानुं जणाय छे.

सातमा वर्षनो हेवाल बधो जतो रह्यो छे.

जे आठमा वर्षनो हेवाल छे ते ऐतिहासिक दृष्टीथी घणो उप-योगी छे. परंतु तेनो एक भाग जतो रह्यो छे ए शोकनी वात छे. आ वर्षमां एक राजा जेणे बीजा राजाने मारी नांख्यो हतो अने जे राजगृहन राजाने दुःख आपतो हतो, ते खारवेलना पाछळ पडवाथी तथा खारवेलना लष्करना मोटा अवाजथी मथुरामां नासी गयानुं कहेवामां आव्युं छे. आ राजाओ कोण हता ते भांगेला भागमां जतुं रह्युं छे.

---

१ आ लेखमां आथी कांइ वधारे होय तेम लागे छे. (जोके स्पष्ट नथी का-रणके ए भाग केटलीक जग्याए खंडित थएलो छे.) ते ए छे के कलिंगना पहेलांना राजाओने आ चैत्य साथे कोई जातनो संबंध हतो.

नवमा वर्षमां तेणे करेलां केटलांक कामो विषे उल्लेख छे. घणो भाग भांगी गयो छे पण जे भाग रह्यो छे ते उपरथी एम जणाय छे के तेणे ते वर्षमां एक कल्पवृक्षनी[1] बक्षीस करी अने तेनी साथे घोडा, हाथीओ, रथो, घरो तथा अन्य उत्तम वस्तुओ ब्राह्मणोने दान करी. वळी तेणे ' महाव्यय* ' नामनो एक प्रासाद बंधाव्यो जेनुं खर्च ३८०००० थयुं.

दसमा वर्षनी हकीकतमांथी घणो भाग जतो रह्यो छे; तथा अगीआरमा वर्षनी तद्दन जती रही छे. दसमा अने बारमा वर्ष वच्चेनो हेवाल तुटक तुटक छे अने जोके तेनो संबंध संतोषकारक रीते जाणी शकाय तेम नथी तोपण नीचे प्रमाणे अनुमानो घडी शकाय, के दसमा वर्षमां तेणे हिंदुस्थाननी यात्रा करी अने ज्यारे तेने खबर पडी के केटलाक राजाओ तेना उपर चढाई करवाना छे त्यारे तेणे पगलां लेवा मांड्यां. त्यार बाद घणा भागे अगीयारमा वर्षनी हकीकत आवे छे. ए वर्षमां तेणे गर्दभनगरमांथी पहेलांना राजाओए नांखेलो एक कर कमी कर्यो. त्यारबाद जे आवे छे ते असंबद्ध छे तथा तेनो केटलोक भाग नाश पाम्यो छे. पण कांइक १३०० वर्ष पछी पुनः शरु कर्यानुं कहेलुं छे.

---

* लेखमां ' महाविजय ' शब्द छे अने तेना संस्कृत तथा इंग्रेजी बन्ने अनुवादोमा पण ' महाविजय (Mahāvijaya) ' शब्द ज वापरवामां आव्युं छे छतां आ ठेकाणे पंडितजी तेनुं नाम ' महाव्यय (Mahāvyaya) ' आपे छे तेनुं कारण समजातुं नथी. कदाच भूलथी ' महाविजय ' ना ठेकाणे ' महाव्यय ' लखाई गयुं होय.—**संग्राहक.**

१ कल्पवृक्षनुं दान आठ महादानमांनुं एक छे ते चारथी आठहजार रुपीआभारनुं एक सोनानुं झाड. घोडा, हाथी तथा घराणां सहित ब्राह्मणोने आपवामां आवतुं. सरखावो—हेमाद्रिनो ' चतुर्वर्गचिन्तामणि ' धानखंड, प्रकरण ५.

बारमा वर्षमां उत्तरापथ (उत्तर) ना जुलमी राजाओ विषे कांइक कहेलुं छे. त्यारबाद जे आवे छे ते जतुं रह्युं छे तेथी तेनो संबंध कळी शकाय तेम नथी. पण घणुंखरुं खारवेले तेमना उपर चढाइ करी हशे. त्यारबाद खारवेले मगधना राजाने बीक बतावी अने तेना हाथीओने गंगामां स्नान कराव्युं एटले के गंगा सुधी जइ पहोंच्यो; तेणे मगध-राजाने शिक्षा करी अने पोताना पग तरफ नमाव्यो. त्यारबाद कोइक नंदराज जेणे जैनोना अग्रजिन आदीश्वर (नी मूर्ति) अगर अग्रजिननुं कांइक लइ लीधुं हतुं ते राजा विषे छे अने आ मूर्ति अगर वस्तु खार-वेल पाछी लाव्यो छे. त्यारबाद मगधमां वसेला एक शहेरनुं वर्णन छे, पण तेना पछीनो भाग जतो रह्यो छे. त्यारबाद खारवेले कांइक बंधाव्यानुं वर्णन छे के जेमना शिखर उपर बेसीने विद्याधरो आकाशमां जइ शके. तेनो अर्थ एवो होवो जोइए के आ मकानो घणांज उंचां हतां. त्यारबाद खारवेले एक हाथीनुं दान कर्युं जे दान तेणे पहेलां अगर पछीनां सात वर्षमां कर्युं नहोतुं. त्यारबाद जे आवे छे ते तुटी गयुं छे. पण तेमां तेणे जीतेला कोई देशनुं वर्णन आवे छे.

तेरमा वर्षमां कुमारी टेकरी उपर आर्हत-देवालयनी नजीक, बहारनी बेठकनी पासे, कांइ काम कर्यानुं कहेलुं छे, पण शुं कर्युं छे ते जतुं रह्युं छे. कारण के आ भाग तुटी गयो छे. त्यारबाद विद्वानो तथा विश्ववंद्य यतिओनी एक सभा बोलाव्यानुं कहेलुं छे. अने कांइक, कदाच एक गुहा, आर्हत बेठकनी नजीक खडकमां, उदयगिरिउपर हुंशियार कारीगरोना हाथे कराव्यानुं कहेलुं छे तथा वैडूर्यगर्भ, पटालक अने चेतक[१]मां स्तंभो कराव्या विषे छे. आ काम मौर्य संवत् १६४ पछी १६५ मा वर्षमां कराववामां आव्युं हतुं.

---

१ पटालक अने चेतक कदाच गुहाओनां नाम छे अने वैदूर्यगर्भ तेमनो एक भाग छे.

त्यारबाद खारवेलनी वंशावळी आपी छे.

खेमराज (तेनो पुत्र).
वृद्धराज (तेनो पुत्र).
भिक्षुराज.

आ लेखमां बताव्या प्रमाणे भिक्षुराज खारवेलनुं बीजुं नाम होय तेम लागे छे. भिक्षुराज, राज्यनुं पालन करनार, सुख भोगवनार, अनेक सद्गुणसंपन्न, सर्वधर्मपर आस्थावाळो,........संस्कार पाडनार, राज्य, वाहनो अने एक अजित लश्करवाळो, राज्यनी लगाम हाथ करनारो, देशने पाळनार, महाराजाओना वंशमां उत्पन्न थएलो, आ महान् खारवेल राजा छे.

अहिंआं कहेली सदी मौर्य सदी छे. हजु सुधी मौर्य राजकाल कोई ठेकाणे जोवामा आव्यो नथी अने तेथी नक्की करवुं जोइए के आ सदी क्यांथी शरु करवानी छे. प्रश्न ए छे के आ सदी प्रथम मौर्यराजा चंद्रगुप्तथी अगर ए वंशना कोइ बीजा राजाथी शरु करवानी छे ? हुं धारुं छुं के ते अशोकना आठमा वर्षथी शरु थाय छे तेनां बे कारणो छे:—(१) आ लेख कलिंग राजानो छे (२) अने अशोकना तेरमा लेखमां ते कहे छे, के मारा आठमा वर्षमां में कलिंग जीत्युं ते वखते घणा माणसोनो घाण नीकळी गयो; पण तेने माटे ते नाखुश छे परंतु ते आथी संतोष माने छे के सलाह स्थपाइ हती तथा धर्म आगळ वध्यो हतो. आवी मोटी जीतथी कलिंगना लोको नवी सदी शरु करे अने आ वर्षने आ सदीनुं प्रथम वर्ष मानिए तथा अशोकनी राज्यगादी बेठानी मिति के जे हवे नक्की थई गई छे तो आ लेखनी मिति हंमेशने माटे नक्की करी शकाय.

जो के अशोकना तख्तनशीन थयानी मिति विषे भिन्न भिन्न मतो छे पण ते थोडाक वर्षना अरसामां नक्की थाय तेम छे. जनरल कनींगहामनी गणतरी प्रमाणे (अने जे मारा मत प्रमाणे खरी छे) अशोकनी तख्तनशीन थयानी मिति ई. स. पूर्वे २६३ छे. ए प्रमाणे तेना कलिंग जीत्या पछीनुं आठमुं वर्ष (अने कदाच ते वखते आ सदी शरु थई हशे) ई. स. पूर्वे २५५ छे. खारवेले केटलांक कामो उदयगिरि टेकरी उपर कराव्यां तेनी मिति १६५ मौर्य संवत् अगर (ई. स. पूर्वे (२५५–१६५) ई. स. पूर्वे ९०. ते खारवेलना तख्तनशीन थयानुं तेरमुं वर्ष छे जे तेनी मिति ई. स पूर्वे १०३ आवे छे अने ते ९ वर्ष पहेलां युवराज थयो तेथी ई. स. पूर्वे ११२ मां यौवराज्य शरुं थयुं. अने पहेलां पंदर वर्ष रमतमां गयां तेथी खारवेलनी जन्मतिथि ई. स. पूर्वे १२७ छे. तेना बाप तथा पितामहने माटे वीस वीस वर्ष गणतां नीचे प्रमाणे यादी थाय छेः

खेमराज (सं. क्षेमराज) (ई. स. पूर्वे १६७)

वुधराज (सं. वृद्धराज) (,, १४७)

भिखुराज (सं. भिक्षुराज)

अगर

खारवेल

जन्म ई. स. पूर्वे १२७.

युवराज थयो–ई. स. पूर्वे ११२.

राज्य उपर बेठो ई. स. पूर्वे १०३.

उदयगिरि उपर कामो ,, ९०.

❁ ❁ ❁ ❁

बीजो लेख खारवेलनी स्त्रीनो छे. जे पोताने लालकना पौत्र हाथी-साह (हाथीसिंह) नी पुत्री तरीके ओळखावे छे. त्रीजा लेखमां एम कहेलुं छे के जे गुहामां ए कोतरेलो छे ते गुहा वक्रदेव राजानी बक्षीस छे. आ लेखमां वक्रदेवनां जे विशेषणो छे ते खारवेलनां जेवांज छे:— वेर, कलिंगाधिपति, अने महामेघवाहन. आ उपरथी स्पष्ट जणाय छे के बन्ने एकज वंशना छे. आ लेखना अक्षरो खारवेलना लेखना अक्षरोना जेवा, कदाच अर्वाचीन छे; पण प्राचीनतो नहिज; अने खारवेलना पहेलांना बे राजाओने आपणे जाणीए छीए तेथी नक्की वक्रदेव तेना पहेलां होय नहि. कदाच ते तेनो पुत्र अने वारस होय. जे गुहामां त्रीजो लेख छे ते गुहामां चोथो लेख छे जेमां ' वदुख राजानुं लयन ' लखेलुं छे अने अक्षरो सरखा छे तेथी वदुख ते वक्रदेवनो पुत्र होय तेम लागे छे. आ उपरथी नीचे प्रमाणे यादीनो कोठो घडी शकाय.

खेमराज (सं. क्षेमराज) — लालक.
| (ई स. पूर्वे १९७) — | (ई. स. पूर्वे १८०)
वुधराज (सं. वृद्धराज) — (नाम नथी)
| (ई. स. पूर्वे १४७) — | (ई. स. पूर्वे १६०)
| — हस्तीसाह.
| — अगर (ई. स. पूर्वे १४०)
| — हस्तीसिंह.
भिखुराज (सं. भिक्षुराज) — |
अगर खारवेल, राज्य शरु कर्युं–परण्यो–कन्या.
(ई. स. पूर्वे १०३) |
वक्रदेव
| (ई. स. पूर्वे ९९)
वदुख
(ई. स. पूर्वे ७९).

लेख १

(हाथीगुम्फा लेख.)

---*०*---

नीचे आपेली नकल मारा लेखनी साथे तैयार करेली मारी नकल उपरथी छे. में जनरल कनींगहाम अने मेजर कीट्टुनी नकलो जोइ छे अने वापरी छे तथा पाठोमां जे फेरफार छे ते टीपमां आप्या छे. जे भागनी नीचे लीटीओ दोरी छे ते शंकाग्रस्त छे अने मूळ लेख साथे तेने काळजीपूर्वक मेळववो जोइए.

नकल.

(१) नमो अरहंतानं नमो[1] सवसिधानं वेरेनं[2] महाराजेन महामेघवाहनेन चेतराज[3]वसवधनेनं पसथसुभल-

---

१. कीट्टुनी नकलमां **मो** खोटो छे. जनरल कनिंगहाम ते खरुं आपे छे. फोटोग्राफमां पण ते जुदुं छे.

२. हजु सुधी बधा विद्वानो **वे** ने बदले **ऐ** वांचे छे, जे शब्द **ऐरेन** एम कहे छे पण **ऐ** अक्षर हजु सुधी प्राकृतमां जोवामां आव्यो नथी, त्यारे **वेरस** एज वंशना बीजा राजानुं विशेषण छे एम लेख नं. २ उपरथी जणाय छे. (प्रीन्सेपनां लेखोमां नं. ६). **वे** नो **व**, मेघवाहनना **वा** ना **व** जेवो छे. फेर एटलो छे के तेनुं गळुं सांकडुं कर्युं छे जेथी ते **ऐ** जेवो लागे छे.

३. *K अने C बंन्नेमा **चेतराजना रा** ने बदले **का** छे. पण ए

---

* K (के) थी मेजर कीट्टु (Kittoe) नी नकल समजवी. अने C (सी) थी जनरल कनींगहाम (General Cunningham.) नी कॉपी समजवी.—**संग्राहक.**

खने[न] चतुरंतलठानगुनोपगतेनं कलिंगाधिपतिना सिरिखारवेलेनं.

(२) पंदरसवसानि सिरिकुमारसरीरवता कीडितां कुमार-

पथ्थरमां फाट छे जेथी ते **क** जेवो देखाय छे. ते जग्या उपर जइने में जोयुं छे के ए सीधी लीटी नथी.

४. **वधनेन** ने बदले K तथा C बंन्नेमां **छधनेन** छे. पण मूळ लेखमां **व** चोखो छे.

५. **सुभ** ना **भ** ने बदले K तथा C **मां के** छे. मूळ लेखमां अक्षर अस्पष्ट छे. तेथीज आ भूल थई छे. **भ** अक्षर विषे मने खात्री छे.

६. C मां **चतुरंकल** छे. पण K मां **त** छे अने मूळ लेखमां **त** स्पष्ट छे.

७. K नी नकलमां **गुनोपगतेन** खोटुं छे. C मां छेला **प** अने **ग** अक्षरो जे स्पष्ट छे ते सिवाय ते खरुं छे.

८. **कलिंगाधिपति** ना मूळ लेखमां **लिं** उपरनुं अनुस्वार जो के जरुरनुं छे तोपण नथी C पोतानी नकलमां अनुमान तरीके अनुस्वार आपे छे. हुं धारुं छुं के K नी नकलमां लि नो इकार आवेलो नथी. छेल्लो अक्षर K नी नकलमां **रा** जेवो देखाय छे. C नी नकलमां **चा** छे जे खोटुं छे.

९. K मां **सिरिखेरवेलोनं** तथा C मां **सिकावारवेलेन** छे. पण मूळमां **सिरि** स्पष्ट छे. **खारवेलेन** मां छेल्ला चार अक्षरो स्पष्ट छे. पेहेलो अक्षर शंकास्पद छे. ते **खा** अगर **खि** होई शके पण घणे भागे ते **खा** छे. कारण के आ लेखनी छेल्ली लीटीमां **खारवेल** ए नाम स्पष्ट आपेलुं छे.

कीडको[2] ततो लेखरूपगणनाववहार[3]विधिविसारदेन सवविजा[4]वदातेन नववसानि[5] योवराजं[6] पसासितं[7] संपुणचतुविसतिवसो[8] चं[9] दानवधमेन सेसयोवनाभिविजयवतिये[10]

---

१. C मां कीडिता नी की ने बदले री छे. पण मूळ लेखमां, K मां तथा फोटोग्राफमां की स्पष्ट छे.

२. C मां मूळथी कीडका नो ड नथी. K मां छे.

३. ववहार ने बदले K मां ववपार तथा C मां ववेपार छे. पा अने हा अक्षरो लगभग सरखा छे. फेर मात्र हा मां बाजुना कापामां छे, जे पथ्थरमां फाटने लीधे बन्नेना ध्यानमां ते आव्यो नथी. C नुं वे खोटुं छे.

४. विजा ने बदले C मां तिजा छे. पण मूळमां तथा K मां वि स्पष्ट छे. विजावदातेन पछी तथा नव° नी पहेलां C ए इ अक्षर घुसाड्यो छे जे मूळमां नथी, K मां नथी तेमज अर्थनी पूरवणीमां जरुरनो पण नथी.

५. °वसानि ने बदले K मां °वसाना छे अने C मां °वसानि छे. जो के मूळमां नीचेनो भाग भांगी गयो छे तो पण ते नि जेवो देखाय छे अने खरी रीते तेज छे.

६. C मां योवराज ने बदले योवरज तथा K मां होवरज छे. पण मूळमां योवराज स्पष्ट छे. हुं धारुं छुं के ज उपर अनुस्वार जोइए; जो के मूळमां होय तेम लागतुं नथी.

७. C मां पसासिवं अने K मां पसासिव छे. जो के K मां छेल्लो अक्षर शंकास्पद छे. मूळ लेखमां आ अक्षरनी नीचे एक छिद्र छे तेथी आ भूल थइ छे.

(३) कलिंगराजवंसपुरिसयुगे महाराजाभिसेचनं पापुनाति"
अभिसितमतो च[1] पधमवसे[2] वातविहतगोपुरपाकार-
निवेसनं पटिसंखारयति कलिंगनगरिं खिबीर च[3] सि-
तलतडागपाडियो[4] च बधापयति[5] सवुयानपतिसंठा-
पनं च[6]

---

८. संपुणचतुविसतिवसो ने बदले K मां संपुणचवविसत° छे C मां खरुं छे.

९. C मां च ने बदले स छे अने K मां कांइज नथी.

१०. K मां विजपाततिये छे अने C मां विजपोततिये छे. य भांगी गयो छे पण व स्पष्ट छे तेथी संस्कृत विजयवृत्त्यै ने बदले विजयवतिये हुं पसंद करुं छुं. य, पो होइ शके पण अहींयां पो नी पहेलां य ना लोप विषे आपणे कारण आपी शकीए. तेथी सं. विजयप्रवृत्त्यै ने बदले विज[य] पोवतिये पण थाय.

११. पापुनाति ने बदले C मां पापेनाति छे. पण मूळमां तथा K मां पु स्पष्ट छे.

१. C नी नकलमां °मतो नो म, अ जेवो देखाय छे. पण मूळ लेखमां तेमज K मां म स्पष्ट छे.

२. से ने बदले C मां स छे. मूळ लेखमां तेमज K मां से स्पष्ट छे.

३. खिबीरं च वांचो. च झांखो छे.

४. C मां सिताळतडिग छे. K मां खरुं छे.

५. K मां आ शब्द बधपयाति जेवो देखाय छे तथा C मां चपंयति जेवो छे.

(४) कारयति ।

पनतीसाहि[१] सतसहसेहि[२] पकातिये[३] रजयति[४] दि-
तिये[५] च वसे अभितयिता[६] सातकणि[७] पछिमदिसं[८]

---

६. K मां सवुयानपतिसंठयपव अने C मां सवयानंपति-संठपनं च छे. C मां देखाडेलुं चोथा अक्षर उपरनुं अनुस्वार ते अनुस्वार नथी पण शिलामां छिद्र छे.

१. C मां पंनतासिजी अने K मां पंनतिसिसि छे.

२. C मां सअपहसेहि छे. पण सतसहसेहि मूळ लेखमां तेमज K मां स्पष्ट छे.

३. C मां पकातियेइ छे.

४. C मां जछतः छे. पण पहेलो अक्षर जे जरा झांखो छे ते सिवाय मूळ लेखमां रजयति स्पष्ट छे. तेथी K ए पहेलो अक्षर मूकी दीधो छे पण बाकीना त्रण अक्षर खरा आप्या छे.

५. K मां दताये अने C मां दतिये छे. पण पहेला अक्षरने इकार होय तेम मने लागे छे तेथी हुं दि वांचुं छुं. दु पण होइ शके. आ बन्ने सं. द्वितीये ने माटे वपराया छे.

६. C मां आचितयत तथा K मां अचितयित छे. बीजो अक्षर भांगी गयो छे तेथी ते चि जेवो देखाय छे. पण ते भि छे. तेथी सं. अभिप्राय ने माटे अभितयिता वांचवुं पसंद करुं छुं. C मां जे एकार छे ते भूल छे मूळ लेखमां इकार स्पष्ट छे.

७. K नी नकलमां सोतेकानिं तथा C मां सोतकानि छे. मूळ लेखमां सातकणि स्पष्ट छे. K नो सो ए भूल छे अने C मां

हयगजेनररधबहुंलं दंडं[11] पठापयति[12] कुसंबानं[13] खति-

पण ते प्रमाणे छे. तेनुं कारण एवुं होइ शके के कोईए प्लास्टरने शाही लगाडी हशे तेथी फोटोग्राफमां **सो** जेवुं देखाय छे.

८. K मां **पयिमादिसं** छे. कारण के **य** तथा **छ** लगभग एक सरखाज छे. **छ** ना उपरना गोळार्धने K ए खरी रीते, छे एम धार्युं हशे. कारणके त्यां जरा फाट छे अने तेथी ते **य** जणाय छे. C नी नकलमां **सछिमादिसं** छे. पण मूळ लेखमां बेशक पहेलो अक्षर **प** ज छे.

९. K मां **पयगज** छे कारण के **प** अने **ह** लगभग सरखा छे. मूळ लेखमां **ह** स्पष्ट छे अने C मां पण खरुं छे. C मां बीजो अक्षर **ये** छे पण मात्रा करवी नहि जोईए. वळी तेमा **गज** ने बदले **मज** छे ते पण भूल छे.

१०. K अने C बन्नेए **बहुलं** ना **ल** ना उपरनुं अनुस्वार काढी नांख्युं छे. पण मूळ लेखमां अनुस्वार स्पष्ट छे.

११. C मां **नंते** छे जे स्पष्ट रीते भूल छे. K मां **दंड** छे तथा **ड** नी उपर एक अनुस्वार जेवुं छे.

१२. K अने C बन्नेमां **पथापनति** छे. पण मैं चोथो अक्षर बराबर जोयो छे अने ते **य** छे; तेनी नीचेनी लीटी वक्र छे तोपण **य** स्पष्ट छे. **पथापयति** नी आगळ आ लीटीनो जे भाग जाय छे ते शंका उत्पन्न करे छे. कारण के अक्षरो झांखा तथा अस्पष्ट छे. K नी नकल स्पष्ट छे अने C नी नकल घणी भूलोवाळी छे.

१३. C ए **कुसबानं** नुं **कु** मूकी दीधुं छे. पण ते मूळ लेखमां स्पष्ट छे. K मां **कु** ने बदले **क** छे. छेलो अक्षर (**नं**), **ना** जेवो देखाय छे, पण **ना** होय तो कांइ सारो अर्थ नीकळतो नथी. हुं धारुं

यं च सहायवता पतं मसिकनगरं (?) ततिये च पुन वसे[१४]

(५) गंधववेदबुधो[१] दंपनतंगीतैवादितसंदसनाहि[४] उसवसमाजकारापनाहि[५] च कीडापयति[६] नगरीं इथं च-

---

छुं के अनुस्वार तथा अक्षरनुं माथुं बे मळी गयां हशे तेथी आम देखाय छे.

जे शब्दो नीचे में लीटी दोरी छे तेमना विषे मने खातरी नथी. मूळ लेखमां ते पुनः वांचवा जेवा छे, कदाच कांई फेरफार मालूम पडे.

१४. **ततिये च पुन वसे** K मां **ततिये** बदले **वसिये** शंकाथी आप्युं छे; C मां आ ठेकाणे तद्दन भूल छे. मूळ लेखमां जो के स्पष्ट नथी तोपण **तति** ओळखी शकाय छे; अने **ये** तथा तेनी पछीना पांच अक्षरो तद्दन चोखा छे.

१. C मां **धो** ने बदले **धा** छे. पण K मां तथा मूळ लेखमां **धो** स्पष्ट छे.

२. C मां **दंपेनाति** छे जे भूल छे. K मां तथा मूळ लेखमां **दंपनत** स्पष्ट छे.

३. K मां **गि** छे. अने C तेने भूलथी **अ** धारे छे.

४. K तथा C बन्नेमां **हा** छे; पण मूळ लेखमां **हि** स्पष्ट छे.

५. K तथा C बन्नेमां **हि** ने बदले **पि** छे. कारण के लांबो लीटो तेमना जोयामां नहि आव्यो होय.

६. C ए **डा** तथा **प** विषे गुंचवाडो कर्यो छे अने तेथी

वुथे[८] वसे[९] विजाधराधिवासं[१०] अहतं[११] पुवं[१२] कालिंग-
पुवराजनमंसितं[१३] . . . .
. . [१४] धमकूटसे[१५] . . . [पू]जित च निखितछत-

(६) भिंगारेहि तिरतनस[१] पतयो[२] सवरठिकभोजकेसादेवं[३]

किसयंति वांचे छे. K नुं खरुं छे, तेणे डा ज वांच्यो छे अने शक-मंद छे एम कहेलुं छे.

७. इ तथा थ बन्ने अक्षरो झांखा तथा शंकास्पद छे. K मां तथ जेवुं देखाय छे. कदाच तथा होय. मने तो पहेलो अक्षर इ जेवो देखाय छे पण ते अ जोइए. C इ आपे छे अने थ ने मूकी दे छे.

८. मूळ लेखमां चवुथे स्पष्ट छे. K मां विबुथे अने C मां प्रथम एक खोटा अक्षर पछी तथे छे.

९. C मां विसे छे पण मूळ लेखमां तथा K मां वसे स्पष्ट छे.

१०. K ए स उपरनुं अनुस्वार मूकी दीधुं छे. C मां ते छे.

११—१२. त तथा व उपरनां अनुस्वार झांखा छे ते बेउ नकलोमां नथी.

१३. नमंसितं शब्दो झांखा छे.

१४. नव अक्षरो जताज रह्या छे; मात्र ति रह्यो छे.

१५. C ए कू मूकी दीधो छे अने K मां तेने बदले ट छे. मूळ लेखमां कू स्पष्ट छे. त्यार पछीना त्रण अक्षरो जता रह्या छे जेमां-नो छेल्लो पू हशे कारण के तेनी पछी जिते आवे छे.

१. C तथा K बन्नेमां तरतनंसा छे. मने पहेला अक्षर उपर घणोज अस्पष्ट इकार देखाय छे.

२. C तथा K बन्नेमां पतय छे पण यो स्पष्ट छे.

दसयति पंचमे[४] च दानि वसे नंदराजतिवससतं ओ-
घाटितं तनसुलीयवाटा[५] पनाडिं नगरं पवेस. . . .
. . . .[६] . . . . राजसेयसंदंस-
णतो सवकरावणं.

(७) अनुगहअनेकानि[१] सतसहसानि[२] विसजति[३] पोरजा-
नपदं सतमं च वसं[४] पसासतो च . . . .
. . . . सवोतुकुळ . . . . .
. . . .
थटमे च वसे[५] . . . .

---

३. C मां सत छे. पण व K मां तथा मूळ लेखमां स्पष्ट छे

४. C मां पंचापु जेवुं देखाय छे अने K ने छेल्ला अक्षर विषे शंका छे. मने म ना भाग जेवुं देखाय छे.

५. तन ने बदले तेन हशे. भूलथी तेनी मात्रा काढी नांखी हशे.

६. पहेला पंदर अक्षरो जता रहेला पछीना पांच अक्षरो पण झांखा छे परंतु इथिहितो च ना जेवुं देखाय छे.

१. C मां अनेकाना छे. K खरो छे.

२. C मां °साना छे. K खरो छे.

३. C मां वासेजति अने K मां वासजति छे. मूळ लेखमां वि छे जोके ते थोडी बगडेली छे.

४. K मां वसं नो व जरा बगडेलो छे.

५. K ए अ मूकी दीधो छे जे घणो झांखो छे. C मां तेने बदले ये छे. C मां वसेने बदले वसु छे तेना पछीना २१ अक्षरो कळी शकाय तेम नथी.

(८) घातापयिता राजगहनपं[1] पीडापयति[2] एतिनं च कम-
पदानपनादेनसवत[3] सेनवाहने विपमुचितुं मधुरं अप-
यातो[5] नवमे[6] च [वसे ?]

. . . .

. . . .

. . . .

. . . पवरको[7]

---

१. अहीं K तथा C बन्नेनी भूल छे. बन्नेमां **राजगंडभपं** छे. जो के अक्षरो झांखा छे तो पण ओळखी शकाय छे.

२. K तथा C मां बतावेला **य** नी नीचेना तथा **डा** नी बाजुना लीटा शिलामां पडेली फाटो छे. अने तेथी तेमने अक्षरो साथे कांइ संबंध नथी.

३. K मा **पंबात** छे. कारण के अक्षरोनी उपर एक झांखी लीटी जेवुं देखाय छे. K मां **प** उपरनुं जे अनुस्वार छे ते मात्र छिद्र छे. C मां **पबंत** छे जे भूल छे. पहेला अक्षरनी डाबी बाजुए **स** नो लीटो छे अने आछो **व** देखाय छे.

४. C मां **पमाचितु** छे. K खरो छे.

५. C खरो छे. K मां °**यातो** ने बदले **नतो** छे.

६. **न** तथा **व** ए बे अक्षरो स्पष्ट छे. **मे** अने **च** जो के अस्पष्ट छे तोपण ओळखी शकाय छे. **वसे** अक्षरो सूचित थाय छे. बाकीनी लीटी जती रही छे. अहीं तहीं एक एक अक्षर देखाय छे पण कांइ कळी शकाय तेम नथी.

७. C मां आ खरुं आप्युं छे. K मां **पपवम** छे.

(९) कपरुखो[1] हयगजरधसह यतं सवं घरावसधं[3] . . . .
. . . . . . यसवागहनं च कारयितुं बमणानं[4]
जम्हि रढिसारं[5] ददाति अरहत. . . . .
. . . .

(१०) . . . .[निवा]सं[1] महाविजयपासादं का-
रयति[2] अठतिससतसहसेहि[3] दसमे[4] च वसे[5] . .

---

१. K मां कपंरुख छे. परंतु आ अनुस्वार नथी पण छिद्र छे अने ख उपर ओकार स्पष्ट छे. C मां किपरुख छे.

२. अहीं C अने K बन्नेए भूल करी छे. अक्षरो झांखा छे पण ओळखी शकाय तेम छे.

३. C मां घरावसयं छे. पण जे भाग नीचे रह्यो छे ते उपरथी अक्षर घ जणाय छे.

४ C मां बइमनोनं छे जे तद्दन खोटुं छे.

५. ज थी रं सुधीना छ अक्षरो झांखा तथा घसाई गएला छे. पण ते वांची शकाय तेम छे.

१. पहेला नव अक्षरो अर्धा भांगेला छे अने तेथी बराबर ओळखी शकाय तेम नथी. निवा शब्द शंकास्पद छे. तेमना उपरनो भाग स्पष्ट छे.

२. K मां कारयति ना का ने बदले दे छे. C मां बराबर छे अने मूळमां स्पष्ट रीते का छे.

३. K मां अठ नो अ मूकी दीधेलो छे. C मां ते आपेलो छे. तिसयुसव° ने बदले C मां हितडुसव° छे अने K मां तसयसत°

. . . . भारधवसपठानं .
. . . . कारापयति . . .
. . . .
. . . . उयतानं च मनोरथानि उपलभता.

छे कारण के कदाच ति नो इकार जरा आछो छे तेथी तेमां आप्यो नहि होय.

४. K तथा C बेउमां **दसामे** छे. कारण के **स** आगळ जरा लीटो छे तेथी तेमणे आकार लीधो छे.

५. C मां **तुसे** छे. कारण के **व** नो नीचेनो भाग जरा भांगी गयो छे. K नी पण अहीं भूल छे.

६ **वसे** नी पछीना दस अक्षरो जता रह्या छे. केटलाकना उपरना भाग देखाय छे. पण तेथी काइ चोकस कही शकाय नहि. फोटोग्राफमां पण एवाज आछा पड्या छे कदाच बेनी सरखामणी कर्याथी कांइक बनी शके. आ दस अक्षरोनी पछी **भारधवसपठान** छे; आमांनो **न** घणोज आछो छे. C मां **भा** ने बदले **क** छे पण आ भूल छे. C ए **पठान** नो **ठा** मूकी दीधो छे. **वसप** अक्षरो सिवाय K ए आ भागमां भूल करी छे. बीजा १२ अक्षरो गया छे. पण केटलाकनो आछो आकार देखाय छे. जो मूळ लेखनी चोकस तपास करवामां आवे तो कांइक बनी शके पण त्यां सुधी ते शंकाग्रस्त रहेशे. मारी नकलमां में तेमने लीधा नथी.

७. C मां **राचावीयति** छे. K ए पण अहीं भूल करी छे. आना पछी २७ अक्षरो जता रह्या छे. तेमांना केटलाक आछा देखाय छे. पण ते स्पष्ट रीते ओळखी शकाय तेम नथी तेथी में मारी नकलमां लीधा नथी.

(११) . . . .
लं युवराजनिवेसितं पाथुडं गदंभनगले[2] नकासयति[3]
जनपदभावनं च तेरस वससताक . . . दतामर-
देहसंघातं[4] बारसमं चॆ[5] व[सं] . . . .
. . . .
. . . . हस . . . .
. . . . हि वितासयंतो उतरापथराजानो[6]

---

१. ११ मी थी १७ मी लीटी सुधीनो शरुआतनो भाग जतो रह्यो छे अने दरेकमां लगभग १०–१० अक्षरो जता रह्या छे.

२. K अने C बन्नेमां पिथुडं छे. पण मूळ लेखमां **पाथुडं** स्पष्ट छे. **गदंभनगले** ने बदले C मां **गदंअनधेधो** छे. K नुं खरुं छे.

३. C मां **नकासयंत** छे तथा K मां **नकासयत** छे. पण छेल्ला अक्षरनी उपर आछो इकार होय तेम मने लागे छे.

४. लेखमां आपेला अक्षरो **दसितामरदेहसंघातं** शंकास्पद छे. अने जो ते काळजीपूर्वक वांचवामां आवे तो कांइक वधारे सारो पाठ नीकळी शके.

५. C मां च ने बदले डु छे.

६. **हिविता**. . . . . **नो. वितासयंतो** ना ता अने स नी उपर एक नानी फाट छे जेने K अने C ए इकार गण्यो छे. **उतरा** ना रा ने बदले C ए ओ लीधो छे जे खोटुं छे. **पध** ने बदले तेणे **पय** लीधो छे जे भूल छे. कारण के मूळ लेखमां **ध** स्पष्ट छे. **राजानो** ना जा मां आकार स्पष्ट छे तो पण C ए ते मूकी दीधो छे अने **ज** गण्यो छे.

(१२) · · · · · मगधानं[1] च विपुलं भयं[2] जनेतो हथिस
गंगायं पाययति मगधं चं[3] राजानं बहुं[4] पटिसासितो
पादे वदापयति[6] नंदराजनितस अगजिनसँ · · ·
· · · · · · · · · · · · · · · गहरतन पडिहारहिअ
मगधे वसिवु नयरि.

---

१. C ए **मगधानं** नो ग मूकी दीधो छे. K ए **ग** तथा **धा** बन्ने खोटा कर्या छे.

२. **भयं** ने बदले C मां **बियं** छे; कारण एम होइ शके के प्रथमना अक्षरना नीचेना भागो जोडवामां आवे छे एम मान्युं हशे. K मां **लेयं** छे.

३. प्रथमनो अक्षर **म** आछो छे. **ग** आछो पण स्पष्ट जणाय छे अने **धंच** तद्दन स्पष्ट छे. C ए बे अक्षरोनी जग्या राखीने **मच** लख्या छे. K ए एक अक्षरनी जग्या राखीने **धंच** लख्या छे.

४. K तथा C बन्नेमां **बह** छे, पण मने बीजा अक्षरनी नीचे उकार स्पष्ट देखाय छे.

५. K मां **पटिसासित** अने C मां **सटिसित** छे, पण मूळ लेखमां **पटिसासिता** स्पष्ट छे.

६. C मां **वदापंयति** तथा K मां **वादापंयति** छे. पण बन्नेए **प** उपर जे अनुस्वार गण्युं छे ते मात्र छिद्र छे अने ते पण अनुस्वारनी जग्याए नथी. पहेला अक्षर उपर मूळ लेखमां अनुस्वार नथी, पण त्यां एक जोइए.

७. **नितस** मांनो **स** शंकाग्रस्त छे. C ए **वा** गण्यो छे अने K ए शंका साथे **ठा** गण्यो छे. मारुं धारवुं एवुं छे के ते **स** छे. बीजा

(१३) . . . . विजाधरु[१] लेखिलं[२] बरानि सिहरानि निवेसयति[३] सतवसदानपरिहारेनं[४] अभूतमकरियं[५] च हथी[६] नादानपरिहारं . .

अक्षरने बदले K मां अ छे, पण C मां म छे. एम होइ शके के नीचेनी आडी लीटी, ए शिलामां फाट होय त्यारे अ जोइए अने तेथी **नंदराजनितस अगजिनस** पाठ थाय; जो म गणीए तो **नंदराजनितसमगजिनस** पाठ थाय. त्यार पछीना १८ अक्षरो जता रह्या छे. केटलाक अस्पष्ट तथा झांखा छे. जे जमीन उपर ते कोतर्या छे ते खरबचडी छे. K अने C मां घणो फेर पडे छे. मारा पाठो पण शंकास्पद छे.

१. अक्षरो जरा झांखा छे. C मां **तुजिपर** छे जे खोटुं छे. **व** नो नीचेनो भाग जरा जीर्ण थयो छे तेथी तेमणे **तु** गण्यो छे. K नो पाठ जरा सारो छे पण तेमां केटलीक भूलो छे.

२. अहींआ केटलीक खाली जग्या छे अने हुं धारुं छुं के त्यांथी एके अक्षर गयो नथी.

३. C मां **निवइयति** छे तथा K मां **निवेनेयति** छे. हुं धारुं छुं के **निवेसयति** जो के झांखुं छे पण स्पष्ट छे.

४. C मां **थरिहारेन** छे. K मां खरुं छे.

५. C मां **असितमसारियंच** अने K मां **असुमसरियंच** छे. मूळमां **अभुतमकरियंच** स्पष्ट छे.

६. **हथी** नी पछीना त्रण अक्षरो भांगी गया छे अने **नंदान** जेवा देखाय छे. **परिहारं** नी पछीना तेर अक्षरो तद्दन नष्ट थया छे. कदाच तेमांना पहेला चार **कारयति** होई शके.

. . . .

. . . . आहरापयति

इधं सतस

(१४) . . . . सिनो[1] वसिकरोति[2] तरेसमे वसे सुपवतविजयिचको कुमारीपवते अरहतोपे[3] । [निवासे] बाहिकायं निसिदियायं यपजके . . . .

. . . .

. . . . कालेरिखिता.

(१५) . . . . [स] कतसमायो[1] सुविहितानं[2] च

---

१. पहेला दस अक्षरो जता रह्या छे. दसमो अक्षर **वा** होई शके कारण के तेनी पछीना अक्षरो **सिनो** छे.

२. **करोति** ने बदले C मां **करड** तथा K मां **करिति** छे. पण मूळ लेखमां **करोति** स्पष्ट छे.

३. **अरहतो** नी पछीना अक्षरो घणा झांखा छे. में शंकाथी वांच्या छे. मारुं धारवुं छे के जो मूळ लेखनी काळजीपूर्वक तपास थाय तो संतोषकारक पाठ नीकळी शके. **यपजके** नी पछी ३९ अक्षरो जता रह्या छे अने छेल्ला ५ अक्षरो देखाय छे ते **कालेरिखिता** छे.

१. C मां **कतसमेलं** छे. K मां **कतसमे** अने तेनो छेल्लो अक्षर शंकायुक्त छे. पण **म** उपर कोई मात्रा मने जणाती नथी. एक फाटने लीधे **म** नो उपरनो लीटो **स** साथे जोडाई गयो छे. तेथी, हुं धारूं छुं के आ बे नकलोमां मात्रा छे. अक्षरना मध्यमां **म** नो 'आ'कार स्पष्ट छे. छेल्लो अक्षर **यो** अस्पष्ट छे.

सवदिसानं[3] [यानिनं][4] तापसा[नं ?][5] . . . .
. . . . संहतानं (?)[6] अरहतं निषिदियासमीपे
पभारे वरकारुसमथ[थ]पतिहि[8] अनेकयोजनाहि[9]
. . . .
. . .

---

२. C मां सविहितेनं तथा K मां साविहितिनं छे. मूळमां सुविहितानं स्पष्ट छे. मात्र ता नो 'आ'कार शंकास्पद छे.

३. C मां सुतदासितं तथा K मां सुतदिसानुं छे. न नी नीचे मने 'उ'कार लागतो नथी. बीजो अक्षर जेने तेओ त गणे छे ते आछो व छे.

४. अहीं C अने K बन्नेनी भूलो छे.

५. C मां तपासिम अने K मां तपसह छे. आ भूलो छे.

६. C मां संपुपनं तथा K मां संपपनं छे. हुं धारूं छुं के ए संहतानं आछुं थयेलुं छे.

७. K मां अरहस छे, कारण के त नी बाजुमां फाटने लीधे ते स जेवो देखाय छे. त अगर स गमे ते वांचीए तोपण अर्थांतर थतो नथी C मां चहस छे जे खोटुं छे.

८. K तथा C बन्नेए कारु खोटी रीते आपेलुं छे. पण मूळमां कारु स्पष्ट छे. मूळमां समथ नी पछी पतिहि स्पष्ट छे. थ उपर शिलामां फाट छे, अने आ फाटनी नीचे छिद्र छे. तेथी बन्नेए प ने बदले धि गण्यो छे. मूळमां स्पष्ट रीते प छे. बन्नेए तिहि ने खोटो गण्यो छे पण ते मूळमां स्पष्ट छे. ते पतिहि छे पण हुं धारूं छुं के पहेला थ पछी बीजो थ हशे जे कोतरनारे मूकी दीधो छे.

(१६) . . . . **पटालके चेतके[1] च वे-**
डुरियगभे[2] थभे पतिठापयति[3] पनंतरियं[4] सठि[5] वसं[6]
सते[7] राजमुरियं काले[8] वोछिने[9] चं चोयठअगसतिकुत-

---

९. C मां **योजनापि** छे. K नुं खरूं छे. जे अक्षरो तेनी पछी आवे छे ते झांखा तथा अस्पष्ट छे तेथी हुं कळी शकतो नथी. जो खास तपास करवामां आवे तो तेमांथी कांई नीकळी शके. लेखना **अर्थने** माटे ते घणा उपयोगी छे.

१. C मां **चे** अने K मां **चतक** छे. मारा मत प्रमाणे ते **चेतके** छे.

२. C मां **तेपरियगभे** अने K मां **वेडुरियगभ** छे ते **वेळरि-यगभे** अगर **वेडरियगभे** पण होई शके.

३. K मां **ठापयति** नो ठ खरो नथी.

४. K मां **पनंतारिय** खोटुं छे. C मां ते खरूं छे.

५. C मां **सच** छे. पण ते ठ ना इकारने लीधे **च** जेवो देखाय छे. फोटोग्राफमां ठि चोख्खी जणाय छे. K ए अक्षरो खोटा आप्या छे.

६. C मां **वस** खरुं छे. K ए अक्षरो भांगेला आप्या छे.

७. **सते** जो के झांखा छे तोपण स्पष्ट छे. C ए ते मूकी दीधा छे.

८. **सते** पछी एक अक्षर जतो रह्यो छे अने तेनी पछी **ज** आवे छे. हुं धारूं छुं के वचलो अक्षर **रा** छे. **जा** पछी आछो **मु** छे अने **रि** जो के घसाइ गयो छे तोपण तेना उपरना भागमां स्पष्ट छे. C ए **मुरि** मूकी दीछो छे. K ए **म** नो उपरनो भाग मात्र बताव्यो छे. **राज** ने बदले K **रिज** वांचे छे.

रियं[11] चुपादयति[12] खेमराजाे[13] स वधराजो[14] स भिखुराजो[15] इ[ना]मराजा पसंतो सनतो अनुभवतो [क] लाणानि[16].

(१७) . . . . गुणविसेस[1] कुसलो सवपासंडपूजको[2] . . . . तानसंकारकारको[3] [अ]पति-

---

९. C मां कोल छे. अहीं K नी भूल छे. मूळमां काले स्पष्ट छे.

१०. C मां चेछिनंच छे. K ए पहेला अक्षरमां भूल करी छे अने तेने बदले कांइ खोटुं आप्युं छे.

११. K अने C कतरियं वांचे छे. K ए क नी बेसणी जाडी आपी छे जे उकार छे.

१२. C अने K मां नपादयति छे. पण चु स्पष्ट छे.

१३. C मां अगमराजा छे. अने K मां पहेला बे शंकाग्रस्त छे पण मूळमां खेमराजा स्पष्ट छे.

१४. बीजो अक्षर जरा गोळाकार छे अने ठ जेवो देखाय छे. C मां तद्दन ठ जेवो आप्यो छे. K मां वठराजा छे. मारा मत प्रमाणे ते वधराजा, सं. वृद्धराजा छे.

१५. खु शंकाग्रस्त छे. K करतां C मां आ भाग सारो आप्यो छे.

१६. भांगेलो अक्षर कदाच क छे; K मां लाणानि तथा C मां राणानि छे.

१. K अने C बन्नेमां विसेस नो स जवा दीधो छे. फोटोग्राफमां ते स्पष्ट छे.

हतचकिवाहनबलो[४] चकधरो गुतचको पसंतचको[५] राजसिवंसकुलविनिगतो[६] महाविजयो राजा खारवेल-सिरि[७] ॥

---

२. C मां को ने बदले ण छे. मूळमां को स्पष्ट छे. त्यार पछीना छ अक्षरो नष्ट थया छे.

३. C ए ता पछी बे अक्षरोनी जग्या खाली राखी छे. पण स्पष्ट रीते देखाय छे के फक्त एकज अक्षर न नी जग्या छे. संकार ने बदले C मां मकार छे जे भूल छे. कारण के मूळमां संकार स्पष्ट छे. K मां मात्र कारकार छे अने बीजा अक्षरो छोडी दीधा छे.

४. C ए अ मूकी दीधो छे. ति ने बदले C ए खोटो अक्षर आप्यो छे पण ति स्पष्ट जणाय छे. वाहन ने बदले C ए वाहनि आप्युं छे अने बलो ने बदले ठलो अक्षरो पण खोटा छे.

५. C मां रिसंतचको छे. K नुं खोटुं छे.

६. C नुं खरूं छे, K नुं खोटुं छे.

७. K मां खरवेल छे. C ए खारवेल आप्युं छे जे खरूं छे. C ए सिरि नी पछी रि थी जरा नीचे नो आप्युं छे. फोटोग्राफमां तेमज K मां आ प्रमाणे नथी. कदाच उपर कोई अक्षर भांगी गयो छे एम दर्शाववाने नो मूक्युं हशे. अहींआं तो तेने कांई संबंध नथी.

प्राकृतनुं संस्कृत–भाषान्तर.

(१) नमोऽर्हद्भ्यः नमः सर्वसिद्धेभ्यः । वीरेण महामेघवाहनेन चैत्रराजवंशवर्धनेन प्रशस्तशुभलक्षणेन चतुरन्तरस्थान-गुणोपगतेन कलिङ्गाधिपतिना श्रीखारवेलेन

(२) पञ्चदशवर्षाणि श्रीकुमारशरीरवता क्रीडिताः कुमार-क्रीडाः । ततो लेखरूपगणनाव्यवहारविधिविशारदेन सर्वविद्यावदातेन नव वर्षाणि यौवराज्यं प्रशासितं संपूर्णचतुर्विंशतिवर्षश्च दानेन च धर्मेण शेषयौवनाभि-विजयवृत्त्यै

(३) कलिङ्गराजवंशपुरुषयुगे महाराजाभिषेचनं प्राप्नोति । अभिषिक्तमात्रश्च प्रथमवर्षे वातविहतगोपुरप्राकारनिवे-शनं प्रतिसंस्कारयति कलिङ्गनगरीं शिबीरं च शीतलत-डागपालीश्च बन्धयति सर्वोद्यानप्रतिष्ठापनं च

(४) कारयति पञ्चत्रिंशच्छतसहस्त्रैः प्रकृती रञ्जयते । द्वितीये च वर्षे अभित्राय शतकर्णिः पश्चिमदिशं हयगजनररथ

---

१. लेखमां कडार जेवुं कांइ छे जे क्रीडालु नुं प्राकृत होई शके. मने कुमार वांचवानुं पसंद पडे छे. कारण के क ने जमणी बाजुए नीचे एक आछो लीटो छे. अने डा भांगी गयो छे. तेनो नीचेनो भाग गोळाकार छे. अने तेनो उपरनो लीटो मा ना जमणी तरफना भाग जेवो लागे छे. मा अक्षर घसाइ गयो छे अगर कोतरनारनी ते भूल हशे.

बहुलं दण्डं प्रस्थापयति कुसंबानां क्षत्रियाणां च सहायवता प्राप्तं मसिकनगरं (?) तृतीये च पुनर्वर्षे

(५) गंधर्ववेदो बुद्धो दंपनृत्तगीतवादित्रसंदर्शनैरुत्सवसमाजकारणैश्च क्रीडयति नगरीं। इत्थं चतुर्थे वर्षे विद्याधराधिवासं अहतं पूर्वं कलिङ्गपूर्वराजेन . . . . . धर्मकूटस्य . . . . पूजितं च निक्षिप्तच्छत्र—

(६) भृङ्गारैः त्रिरत्नस्य प्रत्ययः सर्वराष्ट्रिकभोजकेषु स्यादेवं दर्शयति। पञ्चमे चेदानीं वर्षे नन्दराजत्रिवर्षसत्रमुद्घाटितं तनसुलीयवाटात् प्रनालीं नगरं प्रवेश्य . . . . . . राज्यश्रेयःसंदर्शनत उत्सवकारणं

(७) अनुग्रहानेकानि शतसहस्राणि विसृजति पौरजानपदे। सप्तमं च वर्षं प्रशासन् च . . . .
. . . .
. . . . अष्टमे च वर्षे . . . .
. . . .

(८) घातयित्वा राजगृहनृपं पीडयति। एतेषां च कर्मप्रदानप्रणादेन सर्वत्र सैन्यवाहनानि विप्रमुच्य मथुरामपयातः। नवमे च [वर्षे ?] . . . .
. . . .
. . . . प्रवरकः

(९) कल्पवृक्षो हयगजरथैः सह यत्र सर्वं गृहावसथं . . . . यस्य वा ग्रहणं च कारयितुं ब्राह्मणेभ्यः यस्मिन्वृद्धिसारं ददाति अर्हन्त.

(१०) . . . . [निवा]सं महाविजयप्रासादं कारयति अष्टात्रिंशच्छतसहस्रैः । दशमे च वर्षे . . . .
. . . . भारतवर्षप्रस्थान
. . . . कारयति . . . .
उद्यतानां च मनोरथान्युपलभ्य

(११) . . . . ल पूर्वराजनिवेशितं पथिदेयं गर्दभनगरे निष्कासयति जनपदभावनं च त्रयोदश वर्षशतात् . . . . द्वादशे च व[र्षे]
. . . . वित्रासयंत उत्तरापथराजानः

(१२) . . . . मागधानां च विपुलं भयं जनयन् हस्तिनो गङ्गायां पाययति मागधं च राजानं बहु प्रतिशास्य पादौ वन्दयते नन्दराजनीतस्य अग्राजिनस्य
. . . .
मगधे वास्य नगरीं

(१३) . . . . विद्याधरोल्लेखिताम्बराशिखराणि निवेशयति सप्तवर्षदानपरिहारेणाद्भुतमकृतं च हस्तिनां दानपरिहारं . . . . . आहारयति इत्थं शत . . .
. . .

(१४) . . . . . . [वा]सिनो वशीकरोति । त्रयोदशे वर्षे सुप्रवृत्तविजयिचक्रः कुमारीपर्वतेऽर्हदुप[निवासे] बाह्यकायां निषद्यायां . . . .
. . . . काले
रक्ष्य

(१५) . . . . कृतसमाजः सुविहितानां च सर्वदिशां ज्ञातीनां तापसानां . . . . अर्हन्निपद्यायाः समीपे प्राग्भारे वरकारुसमर्थस्थपतिभिरनेकयोजनाभिः . . . .

(१६) पटालके चेतके च वैडूर्यगर्भे स्तम्भान्प्रतिस्थापयति पञ्चोत्तरषष्टिवर्षशते[1] मायराज्यकाले[2] विच्छिन्ने च चतुःषष्ट्यग्रशतकोत्तरे[3] चोत्पादयति क्षेमराजोऽस्य वृद्धराजोऽस्य भिक्षुराजो नाम राजा प्रशासन् सन्ननुभवन् कल्याणानि

(१७) . . . . . . गुणविशेषकुशलः सर्वपाषण्डपूजकः . . . . . . तानां संस्कारकारकोऽप्रतिहतचक्रिवाहनबलश्चक्रधरो गुप्तचक्रः प्रशान्तचक्रो राजर्षिवंशकुलविनिर्गतो महाविजयो राजा खारवेलश्रीः ॥

---

१. आ भूल छे खरी रीते षष्ट्यधिकवर्षशते जोईए.

२. मौर्यराज्य नुं प्राकृत राजमुरिय छे. प्राकृतमां जेम घणी वार आवे छे तेम आ शब्द-विपर्ययनो दाखलो छे.

३ खरी रीते विच्छिन्नायां च चतुःषष्ट्यामग्रशतकोत्तरायां जोईए.

गुजराती भाषान्तर ।

अर्हंतोने नमस्कार. सर्व सिद्धोने नमस्कार. कलिंगाधिपति, वीर, महामेघवाहन, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षण एवा श्री-खारवेले कुमार रूपे पंदर वर्ष सुधी कुमार–क्रीडाओ करी. नव वर्ष सुधी लेखन, गणना, चित्र, व्यवहारमा कुशल थइने, तेणे यौवराज्य पद भोगव्युं. चोवीसमुं वर्ष पूर्ण कर्या पछी कलिंगना राजपुरुषोनी धुंसरीमां शेषयौवनने विजय अने वृत्तिमां पसार करवाने तेने महाराज तरीके अभिषेक कर्यो.

अभिषेक थतांज प्रथम वर्षमां तेणे पवनथी नुकसान पामेला कलिंगना दरवाजा, किल्ला, घरो तथा शिबीरने समराव्या. तेणे शीतळ एवा अनेक जातनां तळावो अने बाग विगेरे ३५ लाख रुपीआ खरचीने बंधाव्या. (आ प्रमाणे) तेणे लोकोने संतोष्या.

बीजा वर्षमां पश्चिम दिशानुं रक्षण करीने हय, हाथी, माणसो अने रथ युक्त एक मोटुं लश्कर शतकर्णिए मोकल्युं. (आज वर्षमां) कुसम्ब क्षत्रियोनी सलाह लइने (तेणे) मसीक (?) शहेर लीधुं. फरीथी, त्रीजा वर्षमां, ते गीत विद्या शीख्यो अने दम्प (?) नृत्त, गीत अने वादन तथा जलसाथी नगरीने आनंद आप्यो.

आ प्रमाणे चोथा वर्षमां, कलिंगना पहेलांना राजाओथी पूजाएलुं, विद्याधरोथी वसाएलुं, धर्मकूट······पूजा करी[1] अने छत्रो

---

[1] आ भाग भांगी गयो छे, पण एम लागे छे के ते राजाए चैत्य उपर छत्रो अगर धर्मकूट पर्वत उपर तेना जेवुं वांइक मूक्युं अने तेनी पूजा करी. आ चैत्य विद्याधरोए वसावेलुं छे तथा पहेलाना कलिंग राजाओ तेनी पूजा करता एम कहेलुं छे.

तथा कळशो मूकीने एवो देखाव कर्यो के जेथी त्रिरत्न विषे नाना तेमज मोटा सरदारोने श्रद्धा उत्पन्न थाय.

पछी[1] पांचमा वर्षमां नन्दराजनो त्रिवर्ष-सत्र आरंभ्यो;[2] तनसूलीया (?) वडे एक पाणीनी नहेर शहेरमां आणी; . . . . . . राज्यनी आबादी जणाववा माटे उत्सवो कर्या.

(७) (अने आ प्रमाणे) शहेरना तथा गामडाना लोको उपर लाखो उपकार कर्या. सातमा वर्षमां राज्य करतां . . . . . .
. . . .
. . . . आठमा वर्षमां . . . .

(८) मारीने . . . . राजगृहना राजाने तेणे हेरान कर्यो; (ते) तेमनी (खारवेलना अनुचरोनी) धसारो करवानी तैयारीओनो अवाज साभळीने, सर्व ठेकाणे (तेनुं)

---

१ **दानि** शब्द घणीवार **अतः** तथा **ततः** ना अर्थमां वपराय छे; जेमके, 'महावस्तु' मां (प्रकाशक-सेनार्ट) पृ. १८, १०, २१, ३-३१, ८-२०५, १७-२३२, २-२४४, ९-३६५, १९.

२ एम जणाय छे के नंदराज नामनो कोई राजा हतो. तेनुं दानगृह हतुं ज्यां जे कोई आवे तेने, त्रण वर्ष सुधी दान अपातुं. ए गृह जतुं रह्युं हशे ते खारवेले फरीथी उघाड्युं वळी नीचे जणावेली नहेर उपरथी, सत्र एटले के तळाव पण थाय छे ते उपरथी एम लागे छे के पहेला कोई नंदराजाए बंधावेलुं तळाव हशे के जेने खारवेले उघाड्युं अने तेमाथी नहेर लीधी ते तळाव त्रण वर्ष सुधी पाणी राखी शके तेम हशे तेथी तेने त्रिवर्ष-सत्र कहे छे.

३ . . . . ने जेणे मार्यो अने राजगृह राजाने हेरान कर्यो तेनुं नाम जतुं रह्युं छे. पण आ हेरान करनार खारवेलना अनुचरोनो अवाज सांभळीने घोडा विगेरे लश्कर मूकीने मथुरामां नासी गयो.

लश्कर, वाहनोने मूकीने मथुरा पाछो नासी गयो. नवमे (वर्षे) . . . .

(९) एक उत्तम कल्प वृक्षनुं[1] (तेणे दान कर्युं) तेनी साथे घोडा, हाथीओ, रथो, तथा गृहावसथो . . . . ब्राह्मणोने ते ग्रहण कराववा माटे घणां धन साथे. अर्हन्त . . . . . . आडत्रीस लाख (नी कीमते).

(१०) महाविजय नामना प्रासादने . . . . नुं रहेठाण बनावीने, दसमा वर्षमां . . . . भारत वर्षना प्रस्थाने नीकळी . . . बनाव्या . . . (तेनी सामे थवाने) जे तैयार (हता) तेमना हेतु जाणीने . . . .

(११) गर्दभ शहेरमां तेरसो वरस सुधी पहेलांना राजाओए नांखेलो करे तथा ' जनपदभवन ' दूर कर्यों . . . . उत्तरना लोकोने दुःख आपतो . . . . बारमा वर्षमां . . . .

(१२) मगधना लोकोमां भारे त्रास वर्तावीने तेणे (पोताना) हाथीओने गंगानुं पान कराव्युं अने मगधना राजाने सख्त शिक्षा करीने (पोताना) पगे तेने नमाव्यो, ... नन्दराजे लीधेल प्रथम जिननी . . . . . मगधमां एक शहेर वसावीने . . .

---

१ लेखमां कल्पवृक्ष छे जे चारथी ४००० रुपीआभार सोनानुं होय छे. सरखावोः—हेमाद्रिनो ' चतुर्वर्गचिंतामणी ', दानखंड, अध्याय ५.

२. लेखमां **पाथुदं** छे. जे कदाच **पथिदेयं** अगर करनुं प्राकृत रुप ते वखतनुं हशे.

(१३) . . . . स्थापे छे . . . . तेनां शिखरो एवां (उंचां) छे के तेमना उपर बेसीने विद्याधरो आकाशने खेंचे; सप्त वार्षिक दान (ना नियम) प्रमाणे तेणे अपूर्व अने (हजु सुधी) नहि अपायलुं हाथीओनुं दान आप्युं . . . . लेवडाव्या . . . . . . आ प्रमाणे एक सो . .

(१४) . . . . ना रहेवासीओने हराव्या. तेरमा वर्षमां, (ते) जेणे पोतानुं विजयि राज्य आगळ वधार्युं . . . . . . कुमारी टेकरीना अर्हन्तोना निवासस्थानमांनी बहारनी बेठके उपर . .

(१५) . . . . . जेणे सर्व दिशाओना महा विद्वानो तथा महा तपस्विओनी सभा मेळवी हती . . . . अर्हतनी बेठक नजीक पर्वतना शिखर उपर समर्थ कारीगरोना हाथे . . . . पतालक, चेतक अने वैडूर्यगर्भमां[2] स्तंभो कर्या. अने विजयी श्री खारवेल राजा, भिक्षुराज (नामनो[3]), क्षेमेन्द्रना (पुत्र) वृद्धिराजनो (पुत्र) अने गुणोमां कुशळ, सर्व पाषण्डपूजक, ... नो समरावनार, जेनुं राज्य*, वाहनो, अने लश्कर अजय्य छे, जेनुं राज्य शांत छे, राजर्षिना वंशमां उत्पन्न थयेलो तेणे मोर्यराजाने १६४ वीत्या पछी मोर्य संवत् १६५ मां (आ) कराव्युं

१ लेखमां निसिदिय शब्द छे जे नागार्जुन गुहाना लेखोमां पण छे. तेना जेवो पाली शब्द निसज्जा अने जैनप्राकृतमां निसीहि छे.

२ आ कदाच गुहाओना नामो हशे. वैडूर्यगर्भ कदाच आ गुहाओनो भाग पण होई शके.

३ मूळ लेखमां जीर्ण छे.

* आ चक्रिने बदले चक्र वाचीए तो पण जो प्राकृतनी रीत प्रमाणे चक्रि मूकवामां आवे तो संस्कृतमां ते चक्रयप्रतिहतवाहनबल थाय, एटले के जेनुं लश्कर तथा वाहनो ' चक्रि ' ओथी पण अटकावी शकाय नहीं. पहेलो पाठ मने पसंद छे.

लेख २.

वैकुंठ गुहाना ओटलानी पाछली भींतना मध्यद्वारनी जमणी बाजुए अढी लीटीओमा लेख नं. २ आव्यो छे. तेनो केटलोक भाग खराब थयो छे तोपण अक्षरो कळी शकाय तेम छे. बाकीनो भाग सारी स्थितिमां छे.

नकल.

(१) अरहंतपसादानं कलिगानं[1] समनानं लेनं कारितं राजिनो लालकस

(२) हथिसाहानं[2] पपोतस धुतुना कलिगच[3] [कवाटिसिरि खा]रवेलस

(३) अगमहिसिना कारितं[4]

संस्कृत

(१) अर्हत्प्रसादानां कालिङ्गानां श्रमणानां लयनं कारितं राज्ञो लालकस्य

---

१. **कालिंगानं** वांचो.

२. **हथिसाहानं** कदाच **हथिसीहानं** ने माटे वापरेलुं छे. जेनुं सं. **हस्तिसिंहानां** छे. एनुं हालनुं नाम **हठिसिंघ** छे.

३. **च** पछी **छ** अक्षरोनी जग्या खाली छे. जे अक्षरो जता रह्या छे ते लेखमां सूचित कर्या छे. **रवेल** शब्दो **खारवेल** सूचवे छे. **च**ने **धि** जेवो करवामां आव्यो छे तेथी बीजो पाठ **कलिंगाधिपतिनो** थइ शके.

४. **कारितं** शब्दनो नीचलो भाग भांगी गयो छे पण मने खात्री छे के ते अक्षरो **कारितं** छे.

(२) हस्तिसाहप्रपौत्रस्य दुहिता कलिङ्गचक्रवर्तिनः श्रीखार-
वेळस्य

(३) अग्रमहिष्या कारितं

भाषांतर.

आर्हत धर्मना कलिंग देशना साधुओ माटे एक **लयन** करवामां आव्युं. हस्तिसाहना प्रपौत्र लालकनी पुत्री चक्रवर्ती कलिंगना राजा श्रीखारवेलनी पट्टराणीए ते कराव्युं.

(**लयन** एटले साधुओने रहेवा माटेनी गुहा.)

लेख ३.

माणेकपुर गुहाना ओटलानी पाछली भींतना बीजा अने त्रीजा द्वारनी वच्चे एक लींटीमां त्रीजो लेख छे. आ लेखनो एक भाग जीर्ण थइ गयो छे पण जे भाग रह्यो छे ते उपरथी बाकीना अक्षरो कळी शकाय छे.

नकल.

(१) वेरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महामेघवाहनवक-
देपसिरिनो लेणं

संस्कृत.

(१) वीरस्य महाराजस्य कलिङ्गाधिपतेर्महामेघवाहनश्रीवक्र-
देवस्य[१] लयनं

---

१ मूळ लेखमां **वकदेप** छे जे कदाच सं. **वक्रदेव**ने बदले होय. मूळ लेखमां **सिरि** जो के विशेषण छे तोपण **वकदेव**नी पछी छे. जेमके लेख १ मां अंते **खारवेलसिरि** छे. संस्कृतमां तेने **श्रीवक्र-देव** गणवो.

भाषांतर.

कलिंगना महाराजा, वीर श्रीवक्रदेवनुं लयन.

लेख ४.

आ ओटलानी जमणी भीतमांना भोंयराना द्वारनी जमणी तरफ एक लीटीमां लेख नं. ४ छे. ते सारी स्थितिमां छे.

नकल.

कुमारो वडुखस लेणं ।

संस्कृत.

कुमारवडुखस्य लयनं ।

भाषांतर.

कुमार वडुखनुं लयन.

अनुपूर्ति.

डॉ. भगवानलाल इंद्रजीए संशोधित करेला खारवेल राजाना ए लेख उपर, गुर्जरसाक्षर श्रीयुत केशवलाल हर्षदराय ध्रुवे, महाकवि भास रचित ' स्वप्नवासवदत्त ' नाटकना ' साचूं स्वप्न ' ना नामे पोते करेला गुर्जरानुवादनी प्रस्तावनामां केटलोक नवीन प्रकाश पाड्यो छे अने श्रीभगवानलाल द्वारा थएला ए 'सुवाच्य' लेखने एमणे ' सुग्राह्य ' करवानो प्रशंसनीय परिश्रम उठाव्यो छे. श्रीभगवानलालना निबन्धनुं हार्द समजवा माटे श्रीकेशवलालनुं ए विवेचन अवश्य अवलोकनीय होवाथी अने अतएव आ संग्रहमां खास संग्रहणीय होवाथी, आ अनुपूर्ति रूपे ' साचूं स्वप्न ' नी प्रस्तावनामांथी खारवेल संबंधी समग्र प्रकरण अत्र आपवुं उचित धार्युं छे.

खारवेलना संबंधमां श्रीयुत ध्रुवनुं कथन आ प्रमाणे छे:—

" इ. स. पूर्वे १६५ मां कलिंगना राजा महामेघवाहन खारवेले मगध उपर स्वारी करी. हाल जेने ओढिया प्रांत कहे छे ते प्राचीन

---

१ **माहामेघवाहन** ए इसवीसन पूर्वेना कलिंगराजाओनूं बिरुद हतूं. **मेघवाहन** इंद्रनो पर्याय छे, जुओ **अमरकोश**. आथी **महामेघ-वाहन** अने महेंद्र एक अर्थना शब्दो थया कलिंगमां आवेला पूर्व घाटना भागनूं नाम महेंद्र छे. एनी कुलपर्वतमां गणना छे. महेंद्र किंवा महामेघवाहनना धणी ते **माहामेघवाहन**, एवा कंइक संकेतथी आ बिरुद उत्पन्न थयूं जणाय छे. प्राकृतमां वृद्धि न करवाथी **महा-मेघवाहन** रूप रूढ थयूं. खारवेलने लगती हकीकत उदयगिरिनी

उत्कल देशनी दक्षिणे कलिंग आव्यो हतो. ए पूर्व समुद्रना कांठे गोदावरीना मुख सूधी पसर्यो हतो. त्यांना लोक साहसिक कहेवाता हतो. प्रजामां ब्राह्म, बौद्ध अने जैन त्रणे धर्मनो प्रसार हतो; परंतु परिबळ जैनोनूं हतूं. पूर्वे कलिंग नंदराजाना व्होळा साम्राज्यनो भाग हतो. एना पछी थनार महाप्रतापी चंद्रगुप्ते समस्त दक्षिणापथ पाटलिपुत्रनी छाया नीचे आण्यो हतो, त्यारथी आशरे सो वरस ते मौर्योना ता-

---

हस्तिगुफाना लेखमांथी तारवी छे. ए लेख सुवाच्य कर्यानो यश सद्गत पंडित भगवानलाल इंद्रजीने छे. में तो तेने सुग्राह्य बनाववा यत्न कर्यो छे.

२ कलिङ्गः साहसिकः ।

३ ईसवी सननी सातमी सदीमां महाचीननो प्रवासी साधु यवनचंग आव्यो, त्यां लगी पण कलिंगमां निर्ग्रंथोनी संख्या वधारे हती; जुओ Watters' Yuan Chwang II, 198.

४ जुओ टिप्पणी ३८.

५ अशोकना लेख दक्षिणमां महिषमंडळ पर्यंत जोवामां आवे छे. परंतु अशोके तो मात्र कलिंग उपर स्वारी कर्यानूं जाणवामां छे. ए देश वस्तुतः नंद राजाना समयथी मगधराज्यनो एक भाग हतो. ए जोतां दक्षिणापथ अशोक पहेलां पाटलिपुत्रनी सत्ता नीचे आवेलो समजाय छे. नंद महासमृद्धिमान चक्रवर्ती हतो; परंतु तेनी सत्ता कलिंग सिवाय दक्षिणना अन्य देश उपर होय एम जणातूं नथी. केमके कौटिल्ये अर्थशास्त्र रच्यूं त्यां लगी आर्यावर्तनी ज चक्रवर्तिक्षेत्र तरीके गणना थती हती. ए रचाया पछी चंद्रगुप्ते दक्षिणापथना देशो जीती मौर्य-साम्राज्यनी छाया नीचे आण्या, एम हूं मानूं छूं.

बामां रह्यो हतो. दरम्यान ई. स. पूर्वे २६४ मां तेणे छूटा थवानो एक निष्फळ प्रयत्न कर्यो हतो अने तेना बदलामां अशोकने हाथे भारे खुवारी भोगवी हती[6]. छेवटे मौर्यो ज्यारे नबळा पड्या, त्यारे ई. स. पूर्वे त्रीजा शतकना छेल्ला चरणमां **चेत** [सं. **चैत्र**] वंशना राजा क्षेमराजे[7] परतंत्रतानी घसाइ गयेली बेडी तोडी नाखी[8]. ते ज अरसामां अंध्रदेशनो राजा सिमुक पण स्वतंत्र थयो[9]. त्यारबाद कलिंगना राजाए उत्तरमां उत्कल, पश्चिममां कोशल अने दक्षिणमां वेंगीमंडळनो प्रदेश जीती लेई राज्यमां वधारो कर्यो[10]. पश्चिममां आंध्र[11] राजाए पण नासीक पर्यंत

---

६ जुओ Asoka's Kalinga Edicts.

७-८ हस्तिगुफाना लेखमां खारवेल पोताने **चेतराजवंसवधन** [सं. **चैत्रराजवंशवर्धन**] कहे छे; तथापि पूर्वजोमा तो क्षेमराज अने बुधराज, बेने ज गणावे छे. ते उपरथी क्षेमराजना समयमां कलिंग स्वतंत्र थयो एम अहीं कहेवामां आव्यूं छे. भिक्षुराजनी पेठे क्षेमराज अने बुधराज उपनाम जणाय छे.

९ जुओ Smith's Early History of India.

१० खारवेल उत्कल जीत्यानो दावो करतो नथी. छतां तेनो लेख उदयगिरि पर्वत उपर कोतरेलो छे. तेथी ए गादीए आव्यो ते पहेलां हूं उत्कल कलिंगे जीती लीधो समजूं छूं. प्रस्तुत लेखमां शातकर्णिना रक्षण अर्थे पश्चिममां खारवेले लश्कर मोकल्यूं कह्यूं छे, तेथी गोदावरी अने कृष्णाना मुख वच्चेनो प्रदेश ते काळे आंध्रोना कबजामां न हतो पण कलिंगनी सत्ता नीचे हतो, एवी अटकळ करी छे.

११ पुराणोमां सिमुक अने तेना वंशजोने **आन्ध्र** कह्या छे. आंध्र वंशना त्रीस राजा तेमां गणाव्या छे. ए त्रीस आंध्रो पछी सात

मुलक उत्तरना राष्ट्रिको पासेथी जीती लीधो[१२]. महानदीथी कृष्णाना मुख सूधी विस्तार पामेला पूर्वराज्यमां ज्यारे क्षेमराजनो पौत्र भिक्षुराज खारवेल राजा थयो, त्यारे अर्धी सदीनी स्वतंत्रता अने सुव्यवस्थाना प्रतापे कलिंगनी आर्थिक स्थिति उत्तम प्रकारनी हती[१३]. रैयत आबाद अने खजानो तर हतां. नवो राजा पण प्रजाना सुखमां, राज्यना अभ्युदयमां अने कुळनी कीर्त्तिमां वधारो करे एवो हतो. एनां प्रशस्त लक्षणथी संतोष पामी प्रजाए एने राजपद आप्यूं हतूं.[१४] खारवेल अने एना पूर्वजो जैन हतो[१५]. एनो जन्म इ. स. पूर्वे १९७ मां थयो हतो[१६]. एने

श्रीपर्वतीय आंध्र थया छे, तेमने पुराणो आन्ध्रभृत्य नामे ओळखावे छे. आथी हूं सिमुक अने तेना वंशना राजाओने आन्ध्र कहूं छूं. डॉ. भांडारकर तेमने आन्ध्रभृत्य कहे छे, ते सरतचूक जणाय छे.

१२ जुओ Smith's Early History of India.

१३ जुओ हस्तिगुफाना लेखमां खारवेलनां दान, उत्सव अने बांधकामनी नोंध.

१४ जुओ हस्तिगुफाना लेखमां खारवेलने **पसथसुभलखन** विशेषण लगाडयूं छे ते. एना अभिषेकना संबंधमां **दानधमेन........ महाराजाभिसेचनं पापुनाति** । एम कह्यूं छे, ते पण ध्यानमां लेवूं

१५ जुओ लेख मजकूरमां **कलिंगपुवराजनमंसितं** वगेरे.

१६ पुष्यमित्र संबंधी आ संक्षिप्त लेखमां ते ते बनावनां वरस जे आप्यां छे, तेनी गणत्रीनूं धोरण नीचे मुजब छे. महान सिकंदर ज्यारे पंजाबमां हतो, त्यारे पूर्वमां गंगातटे Xandrames नामे महाबळवान राजा राज्य करतो हतो, एम Diodorus Siculus लखे छे अने Quintus Curtius तेने अनुसरे छे. Xandrames **चन्द्रमसनुं** ग्रीक रुपांतर छे. आ **चन्द्रमस्**

बाळपणमां विजिगीषुने छाजे एवी उत्तम प्रकारनी केळवणी मळी हती. गणित, साहित्य, व्यवहार अने चित्रविद्यामां ते कुशळ हतो. जैन आगमोनूं ते सारुं ज्ञान धरावतो हतो. अभ्यासकाळ पूरो थतां पंदर

महाप्रतापी चंद्रगुप्त मौर्यनां अनेक नाममांनूं एक छे; जुओ मुद्राराक्षस. आथी करीने ई. स. पूर्वे ३२५ मां आर्यावर्तना पश्चिम छेडाना प्रांतो सिकंदरे जीत्या त्यारे पाटलिपुत्रमां चंद्रगुप्त राज्य करतो होवो जोइए. आ लेखे एलेक्झांडरनी छावणीमां चंद्रगुप्त बहारवटियारुपे रखडतो आव्यानी वात एवी बीजी वातोनी पेठे निर्मूल अने अश्रद्धेय ठरे छे. ई. स. पूर्वे ३२५ मां चंद्रगुप्त पाटलिपुत्रनो राजा हतो, ते बीजी रीते पण सिद्ध थाय छे. ते बुद्ध भगवान पछी १६२ वरसे गादीए आव्यो कहेवाय छे; अने मि. स्मिथ निर्वाणनी साल ई. स. पूर्वे ४८७-८६ नक्की करे छे, जुओ Smith's Early History of India. हवे हस्तिगुफानो लेख मौर्य संवत १६५ मां कोतरवामा आव्यो हतो. ए संवत चंद्रगुप्त गादीए आव्यो त्यारथी गणाय छे. आथी प्रस्तुत लेखनी साल ई. स. पूर्वे १६० ठरे छे. ते वखते खारवेल साडत्रीस वरसनो हतो; अर्थात् ते ई. स. पूर्वे १९७ मां जनम्यो हतो. मौर्यवंशनो समग्र राज्यकाळ १२७ वरस आपवामा आवे छे. तेथी ई. स पूर्वे १९८ मां पुष्यमित्रने राजा थयो गण्यो छे. बीजा वरसोनी गणत्री पण आ ज प्रमाणे करवामां आवी छे. Smith's Early History of India नी अने आ लेखनी सालोमा उपरना कारणने लीधे जूज फेर पडे छे.

१७-१८ हस्तिगुफाना लेखमा बाळ खारवेलने **लेखरूपगणनाववहारविधिविसारद** अने **सवविजावदात** एवां बे विशेषण लगाड्यां छे. तेमां लेख, रुप, गगना अने व्यवहारथी भिन्न शक्यार्थना विद्याशब्दे हुं आगम अर्थात् जैन आगम समजूं छूं. जैन भिक्षुनी विद्या ते ज छे. भिक्षुराज खारवेलना संबंधमां पण तेज लेवी उचित छे.

वरसनी न्हानी उम्मरे तेने युवराज बनाववामां आव्यो; अने पचीसमा वरसमां तेना पिता बुधराज देवलोक पामतां ते राजा थयो, ई. स. पूर्वे १७३[१९]. पूर्वजनी विजयप्रवृत्ति जारी राखवा अभिषेकजळथी ज तेणे संकल्प कर्यो[२०]. गादीए आव्याने बीजे वरसे ए संकल्पने पुष्टि आपनारो प्रसंग पण तेने आवी मळ्यो. अंध्रराज्यना नैसर्गिक शत्रु राष्ट्रिकोए भोजकोनी सहायताथी श्रीमल्ल शातकर्णिने भारे संकडामणमां लीधो हतो; तेमांथी छूटवा तेणे खारवेलनी मदद मागी. कलिंगराजे मोटूं चतुरंग दळ अंध्रराजनी व्हारे मोकल्यूं. आ जबरुं सैन्य कुम्मके आवी प्होंचतां शत्रुए पाछां पगलां कर्यां. तेमनी पूंठे लागी कलिंगवीरोए कौशांब क्षत्रियोनी साभेलगीरीथी दुश्मनना हाथमां गयेलुं नासीक नगर पाछूं मेळव्यूं[२१]. शूरा राष्ट्रिक अने भोजकना हाथ हेठा पड्या अने तेमणे खारवेल साथे मेळ कर्यो[२२]. ए रीते अंध्र, महाराष्ट्र अने विदर्भ

१९–२० जुओ लेखनी नीचेनी पंक्तिओ–**पनरवसानि........ कीडिता कुमारकीडका । ततो...........नववसानि योवराजं पसासितं । संपुणचतुवीसतिवसो च दानधमेन सेसयोवनेभिविजयपोवत्तिये.......महाराजाभिसेचनं पापुनाति ।.** अही असल पाठ **सेसयोवनाभिविजयपोवत्तिये** छे.

२१–२२ जुओ लेखमांथी नीचेनो उतारो–**दितिये च वसे अभितायंतो सातकणिं पछिमदिसं हयगजनररथबहुलं दंडं पठापयति । कुसंबानं खतियानं च साहायवता पत्तं नसिकनगरं ।.** आ वाक्यो डॉ. भगवानलालनी वाचनामां अर्थ वगरना रुपमां जोवामां आवे छे. एमां **अभितयिता सातकणि** अने **खतियं च सहायवता पत्तं मासिकनगरं** छे. एमांना पहेला भागे मि. स्मिथने गोथूं खवरावी दीधूं छे. **अभितयिता**ने कर्तृवाचक रुप गणी क्रमभंगनो दोष न लेखवी,

देश कलिंगनी छाया नीचे आव्या; अने कलिंगनरेशनो प्रताप राज्य-काळना बीजा ज वर्षमां नर्मदा अने महानदीथी कृष्णा सूधी पसर्यो.

खारवेलनी पहेली सवारी.

तरुण कलिंगनरेशे हवे वर्धमान भगवानना चरणारविंदे पवित्र थयेली भूमि भणी नजर फेरवी. शत्रु चेती जवा न पामे एवी रीते आभ्युदयिक धार्मिक अने सार्वजनिक समारंभोमां पांच छ वर्ष गाळी,[23] अभिषेकथी आठमा वरसमां तेणे प्रचंड सेना साथे उत्कलनी सीमा ओळंगी मगध राज्य उपर चडाइ करी, ई. स. पूर्वे १६५. पुष्यमित्र तेना सामो थयो, पण फाव्यो नहि. तेना बहु सुभटो मार्या गया. पगना धमकाराथी धरणी धूजावता कलिंगसैनिको रखेने मने घेरी ले, ए भयथी ते

पश्चिमना अभित्राता सातकर्णिए खारवेलने मदद मोकली, एवो उलटो अर्थ एओ करे छे; जुओ Smith's Early History of India. डॉ. भगवानलाल पद मजकूरने संबंधक कृदंत ले छे, तेथी पण सारो अर्थ थतो नथी. वास्तविक रीते पाठ ज दूषित छे. ते पछीना **मसिक-नगरं** पदे तो सौने मूझव्या छे. आंध्र राजा कृष्णे नासीक [सं. **नासिक्य**, प्रा. **नस्सिक**] जीती लीधूं हतूं. ते पाछूं मेळववा माटेनो आ विग्रह समजी **नसिक** पाठ में कल्प्यो छे. नासीक संबंधी विग्रहमां राष्ट्रिको साथे पडोशी तरीके भोजको जोडाया मान्या छे. ए रीते राष्ट्रिको ने भोजको कलिंगना संबंधमां आव्या बाद तेमने जैन धर्ममा आस्था उपजाववाना खारवेले उपायो कीधानूं प्रस्तुत लेखमां आगळ वांचिए छिये.

२३ जुओ खारवेले गादीए आव्या पछीना त्रीजाथी छट्ठा वरस सूधी लेख मजकूरमां आपेली हकीकत.

छडी स्वारीए मथुरा नासी गयो. खारवेले तेनी छावणी लूंटी. असंख्यात हाथी घोडा रथ वगेरे वाहनो अने पुष्कळ खजानो तेना हाथमां आव्यां. भागी गयेला ठाला शत्रुनी वांसे जवानूं मांडी वाळी विजयी कलिंगराज मेळवेली भारे लूंट साथे कलिंग पाछो फर्यो.

तेनी बीजी ने त्रीजी सवारीओ.

एक वरस पछी खारवेले भारतवर्षनां उत्तरनां राज्यो उपर फरी सवारी करी. एनी विगत कंई जाणवामां नथी. परंतु पहेली सवारीनी पेठे आ बीजी केवळ अभिद्रवरुप हशे, एम जणाय छे. जो एनूं कंई पण संगीन फळ नीपज्यूं होय, तो ई. स. पूर्वे १६१ मां एने त्रीजी वारनी सवारी करवी पडे नहि. आ छेली सवारीमां दक्षिणापथनी पेठे उत्तरापथमां पण पोतानी आण वर्तावानो एनो संकल्प हतो. साहसिक सुभटोना अने महाबळवान हाथीओना सैन्यना स्वामीने ए अशक्य न हतूं. तेने आवतो सांभळी मगधनी प्रजामा त्रास फेलायो. बे समोवडिया समर्थ राजाओ वच्चे जे दारुण विग्रह जाम्यो, तेमां पुष्यमित्रे चडी आवनार राजाना हाथे सखत मार खाधो. छेवटे ते हारीने खारवेलने ताबे थयो. मगधराजने नमाव्या पछी तेणे उत्तरापथना बीजा राजाओने पण वश कर्या. आदितीर्थंकर ऋषभदेवनी मूर्ति नंद राजा उपाडी गयो हतो, ते आ सवारीमां पाटलिपुत्रथी राजगृह पाछी आणी जैन विजे-

---

२४ जुओ नीचेनो उतारो–**अठमे च वसे.........घाता-पयिता राजगहनपं पीडापयति। पतिनं च कमपदानपनादेन सवत सेनवाहने विपमुचितु मधुरं अपयातो।**. अहीं लेखमां **एतिनं** छे, तेने बदले में **पतिनं** [सं. **पत्नीनाम्**] पाठ कल्प्यो छे.

२५ लेख खंडित छे.

ताए नवा भव्य प्रासादमां भारे उत्सवसमारंभथी तेनी स्थापना करी.[26]

तेनूं भर जवानीमां मरण.

उत्तरापथना विजय पछी खारवेले बेएक वरस ज राज्य कर्यूं जणाय छे. जो ए वधारे जीव्यो होत, तो मीनेंडरने हाथे मगधने खमवूं पडत नहि, कलिंगनी छाया नीचेना विदर्भ राज्यमां अग्निमित्र हाथ घालत नहि अने अश्वमेध उजवी पुष्यमित्र सार्वभौम राजा बनत नहि. चौद वरस राज्य करी भर जवानीमां ए वीर चाल्यो गयो, ई. स. पूर्वे १९९.

खारवेलनां विशेष लक्षण.

खारवेल युद्धवीरनी साथे दानवीर अने धर्मवीर पण हतो. तेणे अद्भुत अपूर्व हस्तिदानथी राजगृहमां ऋषभदेव भगवाननी प्रतिष्ठानो उत्सव उजव्यो हतो.[27] गादीए आव्याने बीजे वरसे तेणे विदर्भ अने

२६–२७ जुओ नीचेनो उतारो–**बारसमं च वसं........सहस............हि वितायसयंतो उतरापथराजानो........मगधानं च विपुलं भयं जनेंतो हथिसथं गंगायं पाययति । मागधं च राजानं बहु पटिसासिता पादे वंदापयति । नंदराजनितस अगजिनस......................राजगहे रतनपडिहारेहि अ मगधे वसितु नयरिं..........................विजाधरुलेखिअंबरानि सिहरानि निवेसयति । सतवसदानपरिहारेन अभूतमकरियं हथिनं दानपरिहारं..............आहारापयाति । इध सतत............उतरापथवासिनो वसिकरोति** । अहीं डॉ. भगवनलालना पाठ **जनेतो, हथिस, मगधं, वदापयति, परिहारहि, वसिवु, विजाधरुलेखिलंबरानि** अने **आहरापयति** छे.

महाराष्ट्रमां जैन धर्मना प्रसारना उपाय लीधा हतॉ. अने तेरमे वरसे सर्व दिशाना ज्ञानवृद्ध ने तपोवृद्ध निर्ग्रंथ श्रमणोने कुमारीपर्वते नोंतर्या हतॉ.[२९] ते त्रिविध सम्यक्त्वथी भिखुराजनूं, स्वधर्मना रक्षणथी गुतचक्रनूं अने सत्त्वसिद्धिथी महाविजयनूं बिरुद धरावतो हतो.[३०] कुशळ शिल्पीओने हाथे तेणे अनेक जिनालयो बंधाव्यां हतां.[३१] पंडे हडहडतो जैन छतां तेना पछी थयेला स्थाण्वीश्वरना चक्रवर्ती हर्षनी पेठे, ते अन्य धर्मनो पण

---

२८ जुओ नीचेनो उतारो–तथा चतुथे वसे विजाधराधिवासअहूतं पुवकलिंगराजनमंसितं........मगधमकूटस........पूजितं च निखितछतभिंगारेहि तिरतनस पतयो सवराठिकभोजकेसु सादेवं दसयति ।. अहीं डॉ. भगवानलालना पाठ चवुथे, विजाधराधिवासंअहत,....धमकूटस अने भोजके छे.

२९ जुओ नीचेनो उतारो–तेरसमे च वसे सुपवतविजयिचको कुमारीपवते अरहतो उपोसधे बाहिकायं निसिदियायं पपूजके.................................काले निखिता............कतसमायो सुविहितानं च सवदिसानं यानिनं तापसानं........संहतानं अरहतनिसिदियासमीपे पभारे वरकारुसमथथपतिहि अनेकयोजनाहि..........................पटालके चेतके च वेडुरियगभे थंभे पतिठापयति । अहीं मुद्रित पाठ अरहतोप (निवासे), यपजके, रिखिता अने थभे छे.

३० जुओ हस्तिगुफाना लेखना अंतभागमां आपेलां बिरुदो

३१ जुओ खारवेलना राज्यकाळना नवमा बारमा अने तेरमा वरसनी हकीकत.

प्रपूजक हतो[32]. तेणे ब्राह्मणोने पुष्कळ रिद्धीथी संतोष्या हता; अने हेमाद्रिना **दानखण्ड**ना पांचमा अध्यायमां सोनाना कल्पवृक्षनूं जे दान कह्युं छे, ते पण तेणे आप्यूं हतूं[33]. कलिंगनगरीने पाणी पूरुं पाडवा तेणे नहेर खोदावी हती[34]; पुरवासीनी सगवड सारुं, शीतलसर नामे तळाव हतूं तेनी चारे कोर तेणे पाळ बंधावी हती[35]; अने तेमना सुख माटे जाहेर बाग पण कराव्यो हतो[36]. नंद राजाना बंधावेला त्रण वरस पाणी प्होंचे एवा नंदसरनी पाळमां झापावाळां घडनाळां मूकी तेणे तेने खेतीना काममां वपरातूं कर्यूं हतूं[37]. तेनी उदारता अने हितबुद्धिनो लाभ एकला राजनगरने ज नहि, पण सारा कालिंग देशने तेणे अनेक रीते

---

३२ जुओ **सवपासंडपूजक** बिरुद.

३३ जुओ नीचेनो ऊतारो—**नवमे च वसे..............पवरको कपरुखो हयगजरथेहि सह यत सवं घरावसधं........यस वा गहनं च कारयितु बमणानं जम्हि राढिसारं ददाति ।**

३४ जुओ नीचेनो ऊतारो—**तनसुलीयवाहा पनाडिं नगरं पवेसयति ।**. अहीं मुद्रित पाठ **वाटा** अने **पवेस**....छे.

३५–३६ जुओ नीचेनो ऊतारो—**सितलतडागपाडियो च बंधापयति । सवुयानपतिसंठापनं च कारयति ।**

३७ जुओ नीचेनो ऊतारो—**पंचमे च दानि वसे नंदराजतिवससतं ओघाटित ।**. अहीं **सत्र**नो अर्थ सरोवर छे; जुओ **मेदिनी.** खेतीवाडीना काममां वपरातूं करवाना अर्थमां **उद्घाटित**ना प्रयोग साथे **कौटिलीय अर्थशास्त्र** ।२।२४। मां चोथा प्रकारना पाणीना वेरा [**उदकभाग**] ना संबंधमां **उद्घाटनो** उपयोग सरखावो.

आप्यो हैतो. तेना रक्षण नीचे सुख वसती प्रजा स्वचक्र अने पर-चक्रनी इति शूं ते जाणती न हैती. † ”

---

३८ जुओ नीचेनो ऊतारो-पधमे वसे........पंनतीसेहि सत सहसेहि पकतियो रंजयति ।, ततिये च पुन वसे गंधवेदबुधोदंप (?) नतगीतबादितसंदंसनाहि उसवसमाजकारापनाहि च कीडापयति नगरिं ।, अने छठे च वसे........इथिहितोच (?) राजसियो संदंसणं उसवकरावणं अनुगहअनेकानि सतसहसानि विसजति पोरजानपदे ।. अहीं मुद्रित पाठ पनतीसाहि सतसहसहि पकातिये रजयति, अने राजसेयसंदंसणतोसवकरावणं छे.

३९ जुओ लेखना अंतभागमां पसंतचको विरुद.

---
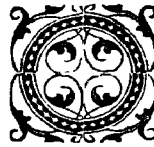
† आ निबंधमां जोडणी विगेरे श्रीयुत ध्रुवना मूल पुस्तक प्रमाणे ज राखवामां आवी छे.

—संग्राहक.

छपाय छे.

आ पुस्तक प्रमाणे ज बीजा पण आना भागो नीचे लख्या प्रमाणे तैयार थाय छे जे थोडा समय पछी बहार पडशे.

प्राचीनजैनलेखसंग्रह भाग—२.

आमां मथुराना पुरातन स्थल कंकालीटिलामांथी मळी आवेला बधा जैनलेखोनो विस्तृत टीका साथे संग्रह करवामां आव्यो छे.

प्राचीनजैनलेखसंग्रह भाग—३.

आमां शत्रुंजय, गिरनार, आबू, कुंभारीया, मुंडस्थल, राणकपुर, पाली, मेडता आदि गुजरात अने मारवाडमां आवेला प्रसिद्ध अने प्राचीन जैनतीर्थस्थलोना बधा लेखोनो संग्रह करवामां आव्यो छे के जेमनी संख्या ५००–६०० जेटली छे. बधा लेखो उपर गुजरातीमां विस्तारपूर्वक ऐतिहासिक बाबतोथी भरपूर टीका आपवामां आवी छे. जैनसाहित्यमां आ पुस्तक अपूर्व अने अद्वितीय थशे. पृष्ठ संख्या ८०० जेटली थवा संभव छे.

जैनऐतिहासिकरासोनो पण एक संग्रह थोडा समयमां प्रकट थशे जेमां ३०–३५ प्राचीन रासो ऐतिहासिक अवलोकन विगेरे साथे आपवामां आव्या छे. आ पुस्तक पण ५०–६० फार्म जेटलुं दलदार थशे

प्रकाशक—

श्रीजैनआत्मानन्दसभा ।